दास्तान
-ए-
का-का-का
इक़बाल
चौधरी
अत्याचार करने वालों
को
कातिलों के कातिल
का...
क़रारा
जवाब!

दास्तान-ए-का•का•का

इतिहास अपने-आप को दोहराता नहीं है, बल्कि क़ाफ़िये रचता जाता है।

मार्क ट्वेन

इक़बाल चौधरी भारत, मोरक्को, मेक्सिको, दक्षिणी यूरोप व अमरीका जैसी जगहों के मध्य अपना जीवन बिताते हैं, व बहु-भाषी हैं। *दास्तान-ए-का•का•का* इनका पहला उपन्यास है। ये कविताएँ भी लिखते हैं और विदेशों में बसे दक्षिण-पूर्वी एशियाई प्रवासी समुदायों के रहन-सहन पर अनुसंधान भी करते हैं।

https://www.facebook.com/ Dastan.E.KaKaKa

दास्तान-ए-का•का•का

इक़बाल चौधरी

लेखक © इक़बाल चौधरी 2014

लेखक इस पुस्तक के मूल रचनाकार होने का नैतिक दावा करता है।

यह उपन्यास एक काल्पनिक रचना है। इस कहानी के सभी पात्र, स्थान, घटनाएँ लेखक की कल्पना का नतीजा हैं और उनका सत्य से कोई सरोकार नहीं। असल घटनाओं और जीवित या मृत व्यक्तियों से समानता सिर्फ़ इत्तेफ़ाक हो सकता है। इस उपन्यास का उद्देश्य किसी भी अन्धविश्वास या गलत सन्देश का प्रचार करना नहीं है। यह किसी भी विधान या भारतीय क़ानून का खण्डन नहीं करता है। इस उपन्यास का मक़सद किसी भी धर्म या रीति-रिवाज़ का अनादर करना क़तई नहीं है। कृपया अवयस्क व्यक्तियों को यह उपन्यास पढ़ने के लिए देने में सावधानी बरतें।

इस उपन्यास की पीडीएफ़ फाइल को www.iqbalchoudhary.net वेबपेज से मुफ़्त में डाउनलोड किया जा सकता है और इस तरह से इसे बिना खरीदे पढ़ा भी जा सकता है पर इस प्रति का किसी भी रूप में व्यावसायिक रूप से इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। उपन्यास की इस इलेक्ट्रोनिक प्रति व मूल प्रति के सर्वाधिकार लेखक के पास हैं। अगर इस उपन्यास का व्यावसायिक उपयोग करना हो या फिर इसके किसी अन्य अधिकार को खरीदना हो तो कृपया नीचे लिखे ईमेल पर संपर्क करें:

sameer.rawal@yahoo.es

मिडल क्लास इण्डिया 9
हाई-फ़ाई इण्डिया 21
जहाँ-तहाँ मीडियोक्रिटी 36
पुराने अमीर 61
हिन्दुस्तान में बजती तूती मर्द शहंशाह, औरत जूती 86
मुँह में राम बगल में छुरी 111
शक़ का घेरा 134
शिकारियों का शिकार 171
दुनिया यानी अल्लाह, भगवान और जीसस का बूचड़ख़ाना 205
लव, सेक्स और का•का•का 228
इस्ताम्बूल में प्यार और गुत्थी का सुलझना 239

मिडल क्लास इण्डिया

सी०बी०आई० स्पेशल इंस्पेक्टर राज मलहोत्रा के हाथ में मोटी फ़ाइल थी। पहले पन्ने पर बड़े-बड़े अक्षरों में टॉप सीक्रेट यानि '**अति गुप्त**' लिखा था। राज मलहोत्रा ने फ़ाइल खोली और पढ़ना शुरू किया। कमरे का ए०सी० थोड़ा ख़राब था और बर्र-बर्र की आवाज़ कर रहा था पर बाहर की भयंकर गर्मी से बहुत आराम दे रहा था। दिल्ली के सी०बी०आई० मुख्यालय में राज मल्होत्रा को आए अभी कुछ ही दिन हुए थे और यह ए०सी० कमरों वाली ठण्डक उसे रास आने लगी थी।

सारा किस्सा कुछ साल पहले ही शुरू हुआ। गोपुरा के हिन्दु-मुसलमान दंगों के बाद और उनके दौरान सारे देश में भी कहीं न कहीं दंगे हुए भले ही वे मीडिया ने उनका ख़ास ज़िक्र न किया हो। गोपुरा और वहाँ होने वाली बाद की घटनाओं ने ही राष्ट्रीय सोच का अधिकतर भाग ग्रहण कर लिया। दिल्ली से सटी सुराजपुरा तहसील में यह वारदात हुई, बल्कि कहें तो सुराजपुरा शहर में ही। राज मलहोत्रा ने मन-ही-मन सुराजपुरा पर अधिक जानकारी ढूँढने का निश्चय

किया। तो हुआ यूँ कि एक गर्भवती मुसलमान औरत को पंचरंग दल के पाँच हिन्दु अधेड़ मर्द घेर कर खड़े हो गये जब वह अपने घर से बाहर निकली और एक किलोमीटर दूर लाले की दुकान पर नमक-तेल लेने जा रही थी। लाला सब कुछ देख कर भी मुँह, आँख, कान बन्द कर दुकान में खड़ा रहा। अनगिनत गालियाँ और धक्के देने के बाद कार्यकर्ताओं ने आनन-फ़ानन में लाले की दुकान के बाहर पड़ा मिट्टी के तेल का कैन उठाया और औरत को उससे सरोबार कर दिया। फिर उनमें से एक ने औरत को ज़मीन पर गिरा दिया और माचिस के लिए जेब में हाथ डाला। ठीक उसी वक़्त एक आदमी जिसने लाल लबादा ओढ़ा हुआ था, उसके नीचे काले रेशम का कुर्ता-पायजामा पहना हुआ था और साथ में चेहरे पर एक काला मुखौटा भी चढ़ाया हुआ था न जाने कहाँ से वहाँ प्रकट हो गया। उसके पैरों में कोल्हापुरी सैंडल जड़े हुए थे। राज मलहोत्रा ने मन-ही-मन उन पंचरंगी कार्यकर्ताओं के साथ-साथ उन सारे गवाहों से मिलने का भी निश्चय किया जिन्होंने यह विवरण बाद में पुलिस को दिया था। तो उस आदमी ने, जिसका नाम अभी ज़ाहिर हो ही जायेगा, अपने लबादे के बीच से एक तेज़ धार वाली खुरपी निकाली और जब तक किसी भी कार्यकर्ता को कुछ समझ में आता वह उन सबका एक-एक हाथ काट चुका था, जी हाँ पाँच हाथ गिर कर ज़मीन पर पड़ गये थे! कार्यकर्ताओं को ज़बरदस्त आघात लगा और चूँकि वे अधेड़ थे, और शायद शराबी वगैरह भी थे, उनमें से एक का दिल वहीं रुक गया और वह परमात्मा में लीन हो गया।

लबादेवाले ने फिर अपने अन्दर कहीं से चार-पाँच विज़िटिंग कार्ड निकाले और वहाँ हवा में बिखरा दिये। अब धीरे-धीरे आस-पास एक हुजूम बन रहा था। लोगों ने कार्ड झपट कर उठा लिए। लाल कार्ड पर एक तरफ़ सुनहरी अक्षरों में लिखा था **क़ातिलों का क़ातिल**, और दूसरी तरफ़ **का•का•का**। फिर का•का•का ने आधी बेहोश पड़ी उस औरत को उठाया और चलता बना। अगले दिन वही औरत एक हस्पताल में पाई गयी, पर उसके पास से एक हिन्दू स्त्री का राशन-कार्ड मिला। पुलिस उसकी ठीक तरह से पहचान न कर पाई क्योंकि वह कुछ और कहानी बताती रही, तो पुलिस ने राष्ट्रीय हालातों को मद्देनज़र देख कर उसे परेशान करना उचित न समझा और केस वहीं दबा दिया गया। पंचरंग दल वाले पहले से ही गोपुरा के कारण बदनाम हो गये थे तो राजधानी दिल्ली के पास घटी इस वारदात को लगभग भुला दिया गया। पंचरंग दल के तहसील अध्यक्ष ने ज़रूर बाद में इस घटना की तहक़ीक़ात अपने तरीके से करवाने का निर्णय लिया।

दूसरी वारदात और भी हैरान करने वाली थी। यह भी सुराजपुरा में ही हुई पर एक-दो महीनों के अन्तराल पर। सुराजपुरा की बड़ी मस्जिद के इमाम मौलाना ख़ुमारी ने प्रान्त के दैनिक में एक वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि मुसलमानों को अपनी सुरक्षा ख़ुद करने का अधिकार है व इसलिए सरकार उन्हें हथियार रखने की इजाज़त दे। अब जो ख़बर दैनिक में नहीं छपी थी वो यह थी कि मौलाना ने अपने घर

में ही हथियारों का एक जखीरा जमा कर रखा था, और यह सब पुलिस और राजनेताओं की नज़रों के नीचे हो रहा था, पर चूँकि समय बहुत नाज़ुक था और सबको अपनी-अपनी कुर्सी की चिन्ता खाए जा रही थी कोई कुछ कह नहीं रहा था। तो साहब एक दिन क्या हुआ कि मौलाना के घर के बाहर तैनात दस लोगों के खाने में कोई नशीली चीज़ मिला दी गयी। वे सब तुरन्त ही बेहोश हो गये और तब किसी ने अन्दर घुस कर सारे हथियार गायब कर दिये और मौलाना के कमरे में जा कर उन्हें बेहोशी का इंजेक्शन दे कर उनकी जीभ काट ली! जीभ ऐसी काटी की लगा कि किसी दक्ष सर्जन का काम हो। तहख़ाने में जहाँ हथियार पड़े थे और मौलाना के कमरे में वही चार-पाँच का•का•का के कार्ड मिले।

बात दबवा दी गयी क्योंकि बहुत बेइज़्ज़ती हो जाती। मौलाना ख़ुमारी ने झट टिकट खरीद कर दुबई की ओर प्रस्थान किया, शायद दूसरी जीभ लगवाने के लिए।

अभी भी दोनों घटनाओं के बीच कोई तार नहीं जोड़े गये। का•का•का को कोई पागल समझा जाता रहा, और चूँकि टेलीविज़न, फ़िल्मों में उस समय 'क' अक्षर का बोलबाला था, यह किसी सिरफिरे का काम समझा गया। किसी ने इन लोगों पर हुए ज़ुल्मों की कोई ख़ास शिक़ायत भी दर्ज नहीं कराई, और न हीं पुलिस से सम्पर्क बनाए रखा।

यहाँ तक पढ़ कर राज मलहोत्रा ने अपने कम्पयूटर को चलाया। राज का तबादला यहाँ गृह मंत्री के आदेश पर हुआ था। इससे पहले वह दस साल से विदेश में ही भारतीय

राजदूतों के लिए काम करता रहा था। काम तो इतना मज़ेदार या उसकी भाषा में कहें तो दिमागदार नहीं था पर उसे बहुत कुछ सीखने को मिल जाता था, और जहाँ भी वह जाता वहाँ की भाषा ज़रूर अपना लेता था। तो सुरक्षा के अलावा भारतीय राजदूत कभी-कभी उसे कई ऐसे काम दे देते थे जिनमें ख़ूब होशियारी और सतर्कता की आवश्यकता होती थी। वह उन्हें बख़ूबी से निभाता। शादी अभी उसकी हुई नहीं थी और माँ-बाप अकेले भारत में रहते थे। शादी की अभी उसकी कोई उमर भी नहीं थी। अपनी आख़री पोस्टिंग में, जो फ्रांस की राजधानी पैरिस में हुई थी, उसे एक पश्चिमी कन्या का प्रेम ज़रूर प्राप्त हुआ। ख़ैर यह कहानी आपको आगे जा कर बताएँगे।

कम्प्यूटर में गूगल सर्च में जा कर राज ने जो पहला शब्द लिखा वह था सुराजपुरा। गूगल ने करीबन एक लाख पृष्ठ निकाले जिनमें सुराजपुरा शब्द आता था। सबसे पहला पन्ना तो सुराजपुरा तहसील का ही था। यह राजकीय सरकार के अन्तर्गत आने वाला पेज था। तहसील पर सारी जानकारी लिखी थी, वहाँ की जनसंख्या, उद्योगों, जन्म-दर, मृत्यु-दर आदि पर आंकड़े दिए गये थे। धर्म-सम्बन्धी आंकड़े पर राज की नज़र गयी। तहसील में लगभग पच्चीस प्रतिशत मुसलमानों का निवास था। और तो और लगभग बीस प्रतिशत अनुसूचित जाति व जनजाति जनसंख्या का भी ज़िक्र किया गया था। लगभग पाँच प्रतिशत जनता आदिवासी भी थी और बाकि सब हिन्दु, कहने का मतलब सवर्ण हिन्दु। राज को अपने निदेशक,

सी०बी०आई० के प्रमुख आ०ए०एस० मेहता साहब की फ़ाइल देते समय कही बात याद आ गयी : 'फ़ाइल पूरी तरह से पढ़ना। सुराजपुरा का इन सारी घटनाओं से कहीं न कहीं बहुत गहरा सम्बन्ध है।' उन्होंने यह भी कहा कि जो भी सहायता, मदद वह माँगेगा वो मिलेगी, का•का•का को ढूँढना अब उनकी नौकरी और इज़्ज़त का सवाल बन गया था।

सुराजपुरा तहसील के वेब-पन्ने पर इतिहास वाले हिस्से पर राज ने क्लिक किया। सारी जानकारी दो सेंकड में सामने प्रकट हो गयी। राज ने घण्टी बजा कर रामदीन को बुलाया। वह तुरन्त ही आ गया। चाय लाने का बोल कर राज ने घड़ी देखी। बारह बज चुके थे।

सुराजपुरा नया इलाका नहीं था। उसका इतिहास क़रीबन छ सौ साल पुराना था। मुगलों ने अपने एक शूरवीर सेनापति गाज़ी ख़ाँ को दिल्ली से सटी एक जागीर दी। सेनापति ने सेवामुक्ति के बाद वहीं जा कर बसने का फ़ैसला लिया और अपनी जागीर का नाम, जिसमें बहुत से छोटे-मोटे गाँव आते थे, डेरा ग़ाज़ी खाँ रख दिया। उन्हें वहाँ का नवाब कहलाया जाने लगा और भूमि उन्होंने पट्टों पर खेती वगैरह के लिए दे दी। हिन्दुस्तान की आज़ादी के बाद सरकार ने यह जागीर एक नये प्रान्त में संलग्न कर दी और इसका नाम बदल कर सुराजपुरा कर दिया। नवाब साहब के परिवार के वंशज अभी तक वहाँ क़ायम थे। वहाँ उनके परिवार के वेबपन्ने की कड़ी भी थी। राज ने कड़ी पर क्लिक किया। दूसरा पन्ना खुल गया। रामदीन चाय ले आया था। राज ने कम्प्यूटर को जैसे

का तैसा छोड़ कर फिर से खुली हुई फ़ाइल को पढ़ना शुरू किया।

भारत में फिल्मी सितारों का बहुत बोलबाला है। हो भी क्यों न, अधिकतर भारतीय तो बेचारे दिन-रात कड़ी मेहनत कर अपनी गाड़ी जैसे-तैसे चलाते हैं, तो फिल्मी सितारों की चमकती, दमकती, रंगीली, चटपटी और पैसों से भरी दुनिया का आकर्षण होना तो लाज़मी है। और फिर सितारे भी तो इस बात को भुनाना अच्छी तरह से जानते हैं। संचित बतरा भी ऐसे ही एक फिल्मी सितारे थे, माफ़ कीजिए, हैं। हिन्दु पिता और मुसलमान माता की पैदाइश, और ख़यालात में गंगा-जमुनी, जिसका एक से अधिक अर्थ निकाला जा सकता है (अर्थ निकालने वाले की दरकार है सिर्फ़)। तो बतरा साहब को न तो उत्तर का ज्ञान न दक्षिण का, न पूरब का और न ही पश्चिम का। सतही (अपनी अंग्रेज़ी में कहें तो सुपरफ़ीशियल) मुम्बई फिल्मों में उलटे-पुलटे काम कर इन्होंने अच्छी-खासी पूँजी हासिल कर ली, माँ-बाप का पैसा तो इनके पास था ही। अब साहब को ललक लगी राजनीति में जाने की। इधर-उधर कुछ सही-गलत ऐसे काम भी किए जिनसे भारतीय कानून ने भी उने पीछे काफ़ी केस चला दिये थे। कहीं तो इन्होंने बेगुनाह सोते हुए लोगों को अपनी लाखों की गाड़ी तले कुचल कर मार डाला और कहीं किसी निरीह पशु का अवैध शिकार किया, तो कहीं आतंकवादियों-माफ़िया गिरोहों से दोस्ती के चलते घर में भारी-भारी हथियार रखने के छोटे-छोटे गुनाह किए। एक केस में तो इनपर देशद्रोह का भी

इलज़ाम लगा, पर आप तो जानते ही हैं, माया बहुत ठगनी है। न्याय तक को माया ठग देती है, और भारतवर्ष में तो कम से कम यही होता है (शायद और देशों में भी होता होगा, विधि का विधान जो ठहरा)।

तो बतरा ने राजनीति में प्रवेश के लिए अपने जैसे, या कहिए तो अपनी मानसिक बनावट के बराबर वाले राजनीतिज्ञ का सहारा लिया, जिनका नाम था, माफ़ कीजिए, है, रंजीत सिंह। अब बेपेंदी का लोटा कहावत अगर किसी पर शत-प्रतिशत लागू होती है तो वे हैं रंजीत सिंह। वे ऐसे धुरंधर चालबाज़, धूर्त और कपटी हैं कि उनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है, बला की जादूगरी है उनमें। पल में तोशा तो पल में माशा। तो बतरा और सिंह की जोड़ी अच्छी बनी। इन दोनों का भी सुराजपुरा से सम्बन्ध है। सिंह की चीनी फैक्टरी सुराजपुरा तहसील में है और बतरा के पिताजी ने, जो हिन्दुस्तान के बँटवारे के समय पाकिस्तान से खाली हाथ आए थे, पहले-पहले यहीं पर डेरा डाला था।

विधान-सभा के चुनावों के समय सिंह ने पैंतालिस की उमर को पार करते हुए हमेशा जवान (यह एवर-ग्रीन दिखने का रोग हिन्दुस्तान में बहुत लोगों को है, शुरुआत हुई अपने देव साहब से!) दिखने वाले बतरा को सुराजपुरा शहर के विधान सभा क्षेत्र में अपनी पार्टी से उम्मीदवार बना डाला। प्रचार सभाओं में इन दोनों ने भारत-माता की इतनी कसमें खाईं की माता का ज़िन्दा बना रहना असंभव था, इतनी बार भारत को आगे ले जाने की कौलें लीं कि ऐसा लगने लगा

जैसे कि भारत अमरीका के भी आगे पहुँचने ही वाला था, बशर्ते वोट बतरा को दिए जाते। दोनों ने इतने दिनों तक खादी के कपड़े पहने रखे कि जब पेज थ्री (यानि अख़बारों का वो पन्ना जहाँ काम की कोई ख़बर नहीं होती, सिर्फ़ मशहूर लोगों के खाने, कपड़े, प्रेम-सम्बन्धों या उनके कुत्ते-बिल्लियों के बारे में जानकारी दी जाती है, उनकी अच्छी-अच्छी फोटुओं के साथ-साथ) के रिपोर्टर ने बतरा से पूछा कि कैसा लग रहा था खादी में तो वह बोला कि बस कुछ दिन और फिर वह आराम से भारतीय कपड़े, यानि जींस, टी-शर्ट आदि फिर से पहन सकेगा। भई, अब एक ही तरह का कपड़ा इतने दिनों तक पहनना भी तो इस सितारों के लिए नेगिटिव पब्लिसिटी कर जाता है!

प्रचार के दौरान ही ओपोज़िशन पार्टी वालों ने एक अद्‌भुत आंकड़ा जनता के बीच उतार दिया। उम्मीदवार बनने से पहले बतरा को अपनी जमा-पूँजी का ब्यौरा सरकार का देना था। इस ख़बर को तो जनता के सामने आने से कोई रोक ही नहीं सकता था। बतरा ने अपनी कीमत लगभग दो सौ करोड़ रुपयों की आँकी। अगर बतरा की सारी सम्पत्ति को भी बेचा जाए तो सौ करोड़ की भारत की आबादी, जिसमें से लगभग अस्सी प्रतिशत जनता प्रतिदिन पैंसठ रुपये से भी कम कमाती है, में से हरेक को एक चाय का गिलास भी नहीं मिल पायेगा, अगर चाय दिल्ली में किसी आम सड़क किनारे की दुकान से ख़रीदी जाए। दिल्ली में आज की तारीख़ में चाय का एक गिलास चार रुपये से कम में मिलना काफ़ी मुश्किल है।

तो प्रतिद्वन्द्वी पार्टी को पता नहीं कहाँ से पता चला कि बतरा के एक विदेशी बैंक खाते में पचास लाख रुपये हैं जिनका वर्णन अपने काग़ज़ दाखिल करते समय उन्होंने नहीं किया था। तो फिर क्या था, हड़बड़ी मच गयी। रंजीत सिंह ने कहा कि वह पैसा उन्होंने बतरा को दिया था, किसी सामाजिक कार्य के चलते, फिर अपनी आदत के अनुसार उन्होंने हर दिन अपना बयान बदला। जनता गुमराह हो गयी और बात आई-गयी हो गयी।

इस बीच निर्वाचन आयोग ने बतरा के काग़ज़ों को देखा-भाला पर उसपर चलते हुए इतने सारे न्यायिक मामलों के कारण उसे चुनाव लड़ने के लिए अयुक्त घोषित कर दिया। अब सुनिए कि उन पचास लाख रुपयों का क्या हुआ। किसी ने बड़ी सावधानी से इण्टरनेट का उपयोग कर बतरा के विदेशी बैंक खाते में जा कर उन रुपयों को सिंह के देशी बैंक खाते में डाला। फिर सिंह के देशी बैंक खाते में जा कर उन पैसों को सुराजपुरा के पंच-सितारे नवाबी महल होटल के खाते में डाल दिया और अगले दिन ही होटल के रैस्टोरेंट में एक फैक्स पहुँचा जिसमें लिखा था कि होटल के बाहर एक स्टॉल लगाया जाए जहाँ उन सभी लोगों को जो वहाँ से गुज़रें पचास लाख रुपयों की चाय पिलायी जाए। होटल ने चाय का दाम, बाहर स्टॉल लगाने का दाम उसी पैसे में से वसूला और वह दिन सुराजपुरा शहर के बाशिन्दों को ख़ूब याद रहेगा क्योंकि उस दिन रिक्शे-वालों, मोचियों, अछूतों, भिखारियों और अमीर, मध्यम वर्गीय–सबने फ़ाइव स्टार होटल की चाय

पी, पूरी शान के साथ, होटल के महंगे से महंगे प्यालों में। तैंतीस हज़ार तीन सौ तैंतीस कप पिलाने के बाद होटल ने स्टॉल बन्द कर दिया, पूछने पर बोला गया कि इससे ज़्यादा का ऑर्डर नहीं मिला था, या सही कहें तो इससे ज़्यादा के पैसे नहीं मिले थे।

बैंक के खाते में इतनी भारी रकम के भुगतान की वजह वाले स्थान में सिर्फ़ यही लिखा हुआ था–का•का•का।

राज को लगने लगा कि कहीं का•का•का एक से ज़्यादा आदमी तो नहीं? चार-पाँच ऐसे लोगों का दल जिसका एकमात्र मकसद बड़े लोगों को नुक्सान पहुँचाना हो? वैसे भी अभी तक का•का•का का ध्येय कुछ ख़ास समझ नहीं आया था। राज मलहोत्रा ठीक-ठाक परिवार से था। अगर आर्थिक-सामाजिक दृष्टि से देखा जाए तो मिडल क्लास से। उसमें वो सारी ख़ूबियाँ थीं जो एक औसत मध्यमवर्गीय भारतीय में होती हैं, सबसे पहले तो इंसान की अच्छाई पर विश्वास रखना, यह मानना कि दुनिया की बुराइयों का अन्त हो सकता है। दूसरी ख़ूबी अपने जीवन को आर्थिक, सामाजिक व हर प्रकार से आगे बढ़ाने की कोशिश करना। और तीसरी ख़ूबी यह कि संसार को एक ऐसी जगह बनाने का लक्ष्य रखना जहाँ सब प्रेम, शान्ति और भाईचारे से रह सकें। उसके मन में माता-पिता, अपने रिश्तेदारों, बुज़र्गों आदि के प्रति एक सघन आदर का भाव पूरे जीवन बना रहा था। फिर अपना देश, राजनीतिज्ञ, प्रधान-मंत्री, क्रिकेट टीम, फ़िल्मी हीरों वगैरह भी उसमें स्वदेश-प्रेम की भावना जागृत करते थे। और तो और प्यार के मामले

में भी वह पूरी तरह से हिन्दुस्तानी ही था, बिल्कुल वैसा जैसा कि बॉलीवुड फ़िल्मों में होता है। लेकिन एक पश्चिमी लड़की के प्यार करने के तरीके को वह अपनी मिडल क्लास भारतीयता, या सही मायने में कहा जाए तो किसी भी किस्म की भारतीयता से पचा नहीं पाया। ख़ैर यह बात आगे।

राज ने फ़ाइल छोड़ कर कम्प्यूटर की ओर देखा। डेरा ग़ाज़ी खान रियासत का नाम बड़े-बड़े अक्षरों में वेबपन्ने पर छपा हुआ था। पृष्ठभूमि में शायद नवाब ग़ाज़ी खान की फ़ोटो थी और उनकी हवेलियों, महलों वगैरह की मिल-जुली तसवीरें भी। एक जगह नवाबी महल होटल की भी कड़ी थी जिसपर क्लिक कर के वहाँ जाया जा सकता था। राज ने परिवार पर जानकारी ढूँढनी चाही। ऊपर चार-पाँच शब्दों में 'फैमिली' शब्द भी था। उसपर क्लिक करते ही एक और पन्ना निकला आया जिसमें एक वंश-वृक्ष बना हुआ था। और कुछ न देखते हुए राज ने सीधे ही वृक्ष के अन्त में नज़र गड़ाई। सबसे नीचे अक़बर हैरीसन का नाम लिखा हुआ था, जो कि किन्हीं जॉर्ज हैरीसन और समीना खान के पुत्र थे। उनका जन्म 1973 में लिखा गया था जिस हिसाब से उनकी उमर तैंतीस के ऊपर ही थी। इनके नीचे किसी का भी नाम नहीं था, और इनके बराबर वाली पंक्ति में सरफ़राज़ ख़ान और अमीना बेगम के पुत्र इंकलाब लालपुरी का नाम लिखा था। राज ने सोचा कि शायद वृक्ष पूरा नहीं था। उसने बाद में इस बारे में मालूमात करने का निश्चय लिया।

हाई-फ़ाई इण्डिया

स्वाति देशमुख भारत के जाने-माने अंग्रेज़ी दैनिक के सम्पादक की सुपुत्री थी। थोड़े समय पहले ही उसने पत्रकारिता पर एक पोस्ट-ग्रैजुएट कोर्स समाप्त किया था। मुम्बई में पली-बढ़ी वह सही मायनों में एक आज़ाद ख़यालातों वाली आधुनिक, और थोड़ी-सी अल्ट्रामाडर्न, हाई-फ़ाई लड़की थी। उसने पढ़ाई ख़त्म करने के बाद किसी समाचार टेलीविज़न चैनल में काम करने का सोच रखा था। नये भारत में समाचार-उद्योग का बोलबाला था। टीवी, रेडियो, इण्टरनेट जहाँ भी देखिए समाचारों की लड़ियाँ लगी हुईं थीं। सब कुछ जानने की इच्छा, सब कुछ देखने की इच्छा ने ज़ोर पकड़ लिया था। देखा जाए तो समाचार मन-बहलाव, आपस में बात-चीत करने, रिश्ते क़ायम करने का साधन बन गये थे। और अब यह सिर्फ़ शहरों तक ही सीमित नहीं रह गया था।

स्वाति के पिता के एक नज़दीकी मित्र का एक समाचार चैनल था, केओटीवी के नाम से। उन्होंने स्वाति से पूछा कि क्या वह चाहती थी कि वे अपने मित्र से उसके काम के लिए

बात करें? सम्पादक महोदय जानते थे कि उनकी पुत्री उनकी तरह ही स्वाभिमानी थी और आसानी से हाथ में आने वाली चीज़ों से दूर भागती थी। जो कुछ करना चाहती थी वह अपने बल पर ही। स्वाति ने हाँ तो भरी पर साथ ही कहा कि वह काम तभी करेगी जब उसे लगे कि उसके पिता के मित्र ने उसकी ख़ूबियों के लिए उसे चुना है। अपनी पढ़ाई के दौरान स्वाति ने काफ़ी अच्छा प्रदर्शन किया था और साथ ही साथ कहीं न कहीं लेख इत्यादि प्रकाशित भी किये थे। एम०ए० के अन्तिम साल में उसके प्रोजेक्ट को सबसे बेहतरीन प्रोजेक्ट का अवार्ड मिला था। उसने महाराष्ट्र के किसानों की आत्म-हत्याओं पर एक आधे घण्टे का समाचार वृत्त-चित्र बनाया था।

वैसे तो अपने पिता के चैनल वाले मित्र से उसकी नमस्कार वगैरह होती ही रहती थी पर वे स्वाति को अच्छी तरह से नहीं जानते थे। स्वाति अपने पिता के इस मित्र के काम को भली-भाँति जानती थी। उन्होंने भारत के समाचार जगत में लगभग एक क्रान्ति-सी ला दी थी। अपने काम के अन्दाज़, गंभीरता, और समाचारों में एक तटस्थता उनकी पहचान बन गयी थी। अंग्रेज़ी चैनल से शुरू कर अब वे हिन्दी पत्रकारिता में भी अच्छी जगह बना चुके थे। कुछ लोगों को भले ही उनकी ख़बर-अदायगी एक अभिनय मात्र लगता हो, पर वे दूसरे आम चैनलों की तरह न तो नीचे गिरे थे और न ही गिरने में विश्वास करते थे। उन्होंने स्वाति से बात करने के लिए उसको दिल्ली बुला लिया।

दिल्ली ख़ासमख़ास शहर है। पिछले दस-बीस सालों में यह बहुत फैला है, इतना कि नये आने वाले तो यहाँ गुम हो जाते हैं। यहाँ के बाशिन्दों को भी इसकी गलियों, मौहल्लों, कॉलोनियों के बारे में पूरा नहीं पता। चैनल वाले अंकल, जिन्हें स्वाति ने सोचा कि नाम से ही बुलायेगी क्योंकि बातचीत तो अंग्रेज़ी में ही होने वाली थी, ने स्वाति को खान मार्केट के बिग वॉफल रैस्टोरेंट में बुलाया। स्वाति अपने पिता के साथ दिल्ली आई थी क्योंकि उन्हें विदेश मंत्रालय में कोई काम था। ताज महल होटल के अपने कमरे से सुबह-सुबह देशमुख साहब अपने काम पर रवाना हो गये और स्वाति ने नाश्ता अपने कमरे में ही मँगवा लिया था।

एक बजे वह खान मार्केट पहुँची। अभी तक सज्जन नहीं पहुँचे थे। दस मिनट, बीस मिनट, आधा घण्टा बीत गया, साहब नहीं पहुँचे। स्वाति ने पिता को फ़ोन लगाया और उनका मोबाइल नम्बर पूछा। उसने अपने पिता से दोबारा पक्का किया कि बात तो एक बजे ही मिलने की हुई थी। वह उनका नम्बर मिला ही रही थी कि सामने से वे आ गये। आते ही उन्होंने माफ़ी माँगी और कहा कि वे किसी ज़रूरी काम में फंस गये थे। खाना वगैरह मँगा कर उन्होंने स्वाति से गंभीर हो कर बात करनी शुरू की। उनका पहला प्रस्ताव तो था एक रिपोर्टर की तरह काम करने का। उन्हें मुम्बई में ही एक नौसिखिए रिपोर्टर की ज़रूरत थी, और वे स्वाति की शैक्षिक उपलब्धियों से काफ़ी सन्तुष्ट थे। छह महीने तक स्वाति अस्थायी रूप से काम करने वाली थी क्योंकि वे देखना चाहते थे कि

उसका काम कैसा था, या उसे काम पसन्द भी आने वाला था या नहीं।

अब खाना मेज़ पर लग चुका था। चैनल प्रमुख ने अपने पेय का एक घूँट भरा और नाटकीय अन्दाज़ में कहा कि एक और विकल्प भी था। पर उसके लिए उन्हें कुछ सन्दर्भ देना पड़ेगा। स्वाति ने रुचि दर्शाते हुए ध्यान से सुनने की भाव-भंगिमा अपनाई।

चैनल प्रमुख ने कहा कि स्वाति तो जानती ही थी कि उन्होंने कितनी मेहनत से अपने व्यवसाय को खड़ा किया था, उसके छोटे से बड़े होने तक के सारे सफ़र के दौरान उन्होंने बहुत से कष्ट झेले। पर अब वे काफ़ी सन्तुष्ट थे, और तो और अब तो उनकी कम्पनी का अन्तर्राष्ट्रीय शेयर तक निकलने वाला था। स्वाति को लगा कि वे कुछ बचाव कर रहे हैं, किस चीज़ का यह उसे समझ नहीं आया। चैनल प्रमुख ने आगे बढ़ते हुए कहा कि उन्हें कुत्तों से बहुत लगाव है, और उनके पास तीन कुत्ते हैं जो उनके घर के सदस्यों के ही समान हैं। वे जहाँ भी जाते हैं उन्हें ले कर जाते हैं और उनको बेहतर से बेहतर खाना-पीना, रहना-सोना मुहैया करवाया जाता है। दिल्ली में उनके प्रधान दफ़्तर के पास बहुत से आवारा कुत्ते थे। वैसे तो दिल्ली में हर जगह यही हाल है, पर चूँकि वे कुत्ते उनके दफ़्तर के पास थे और उनसे उनका आवारापन और व्यथा देखी नहीं जाती थी, और चूँकि अब उनके पास भगवान की दया से पैसों की कमी न थी, तो उन्होंने उन आवारा कुत्तों को खाना देना शुरू किया। शुरुआत में थोड़े से ही थे पर

देखते ही देखते आस-पास के सारे कुत्ते वहाँ आने लगे, और चैनल प्रमुख ने सभी को खाना बाँटने का काम शुरू करवा दिया। अब हालत यह थी कि एक महीने में उन आवारा कुत्तों के खाने का खर्चा ही लगभग तीस हज़ार से पचास हज़ार के बीच आ जाता था। और यह खर्च वे बेझिझक करते थे।

स्वाति को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वो क्या बात कर रहे थे। उसके चेहरे में कुछ अजीब से भाव दिख रहे थे। फिर भी वह सुनती रही। चैनल प्रमुख बोले कि पन्द्रह दिन पहले एक घटना हुई। कुत्तों को खाना खिलाने के लिए उन्होंने अपने दफ़्तर के एक सुरक्षा कर्मचारी की ड्यूटी लगा रखी थी। वह रोज़ सुबह बारह बजे दफ़्तर के पीछे वाली छोटी गली में खाना लगा देता था और आस-पास के सभी कुत्ते आदतन साढ़े बारह-एक बजे तक वहाँ पहुँच कर खाना शुरू कर देते थे। कुत्तों का खाना बनाने का ज़िम्मा पास के ही एक भोजनालय को दिया गया था। सुरक्षा कर्मचारी वहाँ से रोज़ खाना लाता था। भोजनालय को महीने दर महीने खाने का भुगतान दफ़्तर द्वारा कर दिया जाता था। इस खाने का भुगतान एक महीना अडवांस में ही कर दिया जाता था।

पन्द्रह दिन पहले, महीने की शुरुआत में किसी ने बहुत ही होशियारी और चालाकी से भोजनालय वालों को कुत्तों की बजाय इंसानों का खाना बनाने का निर्देश दिया, उन्हें यह पता नहीं चलने दिया गया कि वह आदमी चैनल में काम नहीं करता था। निर्देशानुसार उस दिन कुत्तों की बजाय भूखे इंसानों को खाना खिलवाया जाना था, और पास की ही एक

स्लम बस्ती में पहले से ही जा कर यह ढिंढोरा पीट दिया गया था कि चैनल प्रमुख सारे दिन भूखों, ग़रीबों को खाना खिलाएँगे। भोजनालय वालों को यह भी निर्देश दिया गया कि वे सारे महीने का कुत्तों वाला खर्चा उस एक दिन के खाने में लगा दें और कुत्तों के लिए उन्हें बाद में अलग से पैसा मिल जायेगा। उस दिन दफ़्तर के आस-पास का नज़ारा देखने लायक था। ऐसा लग रहा था कि दिल्ली के सारे भूखे-नंगे वहाँ खाना खाने आ पहुँचे हों। चैनल वालों ने सोचा कि कोई भण्डारा वगैरह चल रहा होगा। चैनल प्रमुख की खिड़की से सब कुछ दिखता था, और उन्होंने एक-दो बार अपने सुरक्षा कर्मचारियों से ध्यान रखने को कहा क्योंकि बाहर तो जैसे गरीबों का मेला-सा लग गया था, और उन्हें असुरक्षा का हल्का-सा अहसास हुआ। सुबह आठ बजे से रात के आठ बजे तक अनवरत भूखे, गरीब लोगों को खाना खिलाया गया, बूढ़े, बच्चे, औरतें सब आए। जो लोग दोबारा, तिबारा आए उन्हें भी मना नहीं किया गया।

भोजनालय के मालिक को भण्डारे में दफ़्तर वालों की अनुपस्थिति खटकी और अगले ही दिन उसने सुरक्षा कर्मचारी को कुत्तों के लिए खाना देने से पहले उससे पैसों की बात की। झगड़ा शुरू हो गया क्योंकि सुरक्षा वाले को ऐसा कुछ नहीं कहा गया था। चैनल वालों ने कहा कि उन्होंने किसी भण्डारे का निर्देश नहीं दिया और न ही यह कहा कि कुत्तों वाले खाने का पैसा भण्डारे पर लगा दिया जाए। भोजनालय वाला गुस्से में आ गया और चीखने-चिल्लाने लगा। तब चैनल-प्रमुख ने

उसे अपने कमरे में बुलाया और शान्ति से बातचीत करने की ताक़ीद की। भोजनालय वाले ने झट से अपनी जेब से उस कर्मचारी का कार्ड निकाल दिया जिसने उसे यह सब करने को कहा था। पहचान-पत्र एकदम वहाँ काम करने वालों के पहचान-पत्र जैसा था, और फ़ोटो खुद चैनल-प्रमुख की लगी हुई थी! और नाम की जगह लिखा हुआ था–का•का•का! और उसी समय चैनल-प्रमुख के कम्प्यूटर से एक घण्टी की आवाज़ सुनाई दी, उनके इमेल बक्से में एक नयी इमेल आई जिसमें भेजने वाले का नाम भी का•का•का ही था। उस इमेल में यही कुछ वाक्य लिखे थे–

> **कुत्तों से पहले इंसानों की मदद करो। पैसा कमाते हो तो उसे ठीक से खर्च करना भी सीखो, यह भारत है कोई पश्चिमी देश नहीं जहाँ दूध की नदियाँ बहती हों और आवश्यकता से अधिक खाना सागर में बहा दिया जाता हो। जिससे तुमने लिया, कमाया, उसी को वापिस करो।**
>
> का•का•का

चैनल-प्रमुख को एक झटके में सारी बात समझ आ गयी और उन्होंने भोजनालय वाले को कुत्तों के लिए पैसे देने की बात स्वीकार की और झगड़ा ख़त्म किया।

वह इमेल चैनल-प्रमुख अपने साथ लाए थे और उन्होंने स्वाति को कहा कि उसे अपने साथ घर ले जा सकती है, पूरी बातें सुनने और एक निर्णय लेने के बाद।

दूसरी घटना चैनल की सबसे प्रख़्यात और तेज़ रिपोर्टर के साथ हुई। मंजू बहल चैनल पर एक बहुत मशहूर कार्यक्रम किया करती थी जिसमें सारे भारत से आम लोग बुलाए जाते थे और कुछ मशहूर नाम भी और किसी समकालीन कॉन्ट्रोवर्शियल और भड़कीले विषय पर चर्चा किया करते थे। विषय सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक सब क्षेत्रों के होते थे। करीबन एक महीने पहले इस कार्यक्रम की रिकॉर्डिंग की बात है। उस बार का विषय था नज़दीकी सम्बन्ध यानि कि सेक्स। बहस का मुद्दा था 'भारतीय मानसिकता और सेक्स'। और यह बहस अंग्रेज़ी में होने वाली थी। भाग लेने वाले मेहमान चैनल के दिल्ली वाले सेट पर आ चुके थे और सब कुछ व्यवस्थित किया जा चुका था। जिन मशहूर नामों को बुलाया गया था उनमें प्रमुख थे समलैंगिक सम्बन्धों के हक़ में काम करने वाले एक गैर-सरकारी संगठन के प्रमुख, भारतीय महिला काउंसिल की अध्यक्षा, पंचरंग दल और विश्व हिन्दु समाज के निदेशकों में से एक, एक अंग्रेज़ी में लिखने वाले उपन्यासकार और बॉलीवुड फिल्मों की एक अधेड़ एक्स-हीरोइन जो अब भारतीय सेंसर बोर्ड की अध्यक्षा थीं।

जब बहस अच्छी-खासी छिड़ चुकी थी और मंजू बहल भी अपने पूरे रंग में आ चुकी थी तब अचानक से लोगों और पूरे सेट पर किसी चीज़ की बौछार-सी होने लगी। लोग तो घबरा गये कि कहीं कोई आतंकवादी हमला तो नहीं हो गया। कैमरा बन्द कर दिया गया, और सब लोगों ने जो चीज़ हज़ारों की तादाद में गिरी थी वो उठाई। सब लोग उस

प्लास्टिक के चौकोर पैकेट को देख ही रहे थे कि मंजू ज़ोर से चिल्लाई, 'ये तो कन्डोम है!' लोगों के मुँह से हँसी और डर की मिली-जुली अजीब-अजीब आवाज़ें निकलने लगीं। सब के सब कन्डोमों से घिरे पड़े थे। फिर धीरे-धीरे आवाज़ें शिकायतों में बदल गईं। मंजू से सबको शान्त किया और कहा कि इसमें चैनल का कोई हाथ नहीं था, उन्हें इस बारे में कुछ नहीं पता था। उसने कहा कि यह किसी का मज़ाक लग रहा था। और निमन्त्रित लोगों के भावों को पढ़ कर उसने मज़ाक शब्द के साथ 'भद्दा' विशेषण भी साथ में लगा दिया।

कन्डोमों के साथ थोड़ी कम तादाद में चौकोर लाल रंग के काग़ज़ भी गिरे थे। कुछ लोगों ने उन्हें भी उठाया और पढ़ा। उनपर सुनहरी अक्षरों में लिखा था–

कामसूत्र तक में लिखा है कि प्रेम करना विश्व में सबसे सुन्दर अनुभूति है, विवाहितों को छोड़ कर किसी को भी प्रेम (शारीरिक और भावनात्मक प्रेम में फ़र्क करना किसी मूर्ख का काम है) करने की आज़ादी हमारा मूलभूत अधिकार होना चाहिए, और वो भी इस आधुनिक युग में जब हम कन्डोम द्वारा अवांछित गर्भ को आराम से रोक सकते हैं। आप लोग फ़िज़ूल की बहस करना छोड़ कर सीधे इन्हें उपयोग करने का कदम उठाएँ तो यह एक अच्छी उपलब्धि मानी जायेगी।

सबसे नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में **का•का•का** लिखा था।

चैनल के लिए तो बहुत बदनामी की बात थी। बहुत जतन कर के कार्यक्रम में भाग लेने वाले लोगों को समझाया गया कि किसी ने उन के साथ घिनौना मज़ाक खेला है। पुलिस को भी बुलाया गया। लगभग आधा घण्टा इस प्रकरण में बरबाद हो गया। बाद में पुलिस ने अपना काम संभाला और कार्यक्रम में भाग लेने वालों को दिलासा दिया कि वे ग़ुनहग़ार को ज़रूर पकड़ेंगे।

चैनल-प्रमुख जब ये सारी बातें स्वाति को समझा रहे थे तो उसके मन के किसी कोने में अल्ट्रा-आधुनिकता या 'हाई-फ़ाई' विचारों का भूत अंगड़ाई ले रहा था और नींद से बाहर आ रहा था। चेहरे पर अत्यधिक हैरानी का भाव ले कर वह चैनल-प्रमुख से बोली कि ये सारे काम निश्चय ही किसी ग्रुप के हैं। वह पूछना चाहती थी कि क्या का•का•का के बारे में कुछ और पता लगाया जा चुका है कि नहीं। चैनल-प्रमुख ने घड़ी देखी और समय बरबाद न करते हुए कहा कि अगर वह चाहे तो मुम्बई में नौसिखिये रिपोर्टर का काम करने की बजाय वे उसे का•का•का के बार में और कुछ जानकारी हासिल करने के काम में लगा सकते हैं। उसकी तनख़्वाह वही रहेगी और उसे सफ़र करने और बाकि ख़र्चों के लिए भी पैसे मिलेंगे। यह इसलिए क्योंकि उन्हें विश्वस्त सरकारी और गैर-सरकारी सूत्रों से पता चला था कि का•का•का और भी बहुत से अजीबोगरीब कारनामें कर चुका था और अभी तक कोई न्यूज़ वाला उसके पीछे नहीं पड़ा था। उन्होंने कहा कि वे सारी जानकारी स्वाति को बाद में दे सकते हैं। पर स्वाति को पूर्ण

गोपनीयता में काम करना पड़ेगा और चूँकि वह नई-नई थी उसके राज़ खुलने का चांस भी कम था।

अंधे को जैसे दो आँखें! स्वाति ने तुरन्त हामी भर दी। चैनल-प्रमुख ने फिर दोहराया कि किसी को भी इसके बारे में पता नहीं चल सकता, यहाँ तक कि उसके पिताजी को भी नहीं। स्वाति ने कहा वो टेंशन न लें, उन्हें उससे किसी प्रकार की कोई शिकायत न मिलेगी। वह ऐसा ही कोई काम चाहती थी जो उसकी विचारधारा को भी ऐटरैक्ट करे। चैनल-प्रमुख ने उस समय उसकी विचारधारा के बारे में और सवाल करना उचित न समझा और मीटिंग को वहीं रोक दिया। अगली सुबह ग्यारह बजे चैनल के दफ़्तर में मिलने का समय निर्धारित कर दोनों ने अपनी राह पकड़ी।

स्वाति बहुत ख़ुश थी। उसे अपनी पसन्द का काम करने का मौका मिल रहा था और उसने मन-ही-मन योजनायें बनानी शुरू कर दीं। हालाँकि सारी जानकारी उसे अगले दिन चैनल-प्रमुख के दफ़्तर से मिलने वाली थी उसने सोचना शुरू कर दिया कि किस तरह से का•का•का के पीछे जायेगी। उसने उन दो घटनाओं पर अपने दिमाग के घोड़े दौड़ाने शुरू कर दिए।

उसके जवान मन में कहीं न कहीं का•का•का के प्रति एक अजीबोग़रीब सम्मान की भावना ज़रूर जागृत हो गयी थी, जिसमें हैरानी भी शामिल थी। वह भी कहीं न कहीं बुराइयों को उनकी जड़ से मिटाने में यक़ीन करती थी, भले ही उसे बुराइयों के बारे में इतना ज्ञान तो नहीं था। सुरक्षित परिस्थितियों

में उसका लालन-पालन हुआ था, उसे असली संसार के मोह-जाल और माया-जाल के बारे में कुछ ज़्यादा तो नहीं पता था पर अपनी नॉलेज और ज्ञान बढ़ाने की उसकी इच्छा बहुत प्रबल थी। पश्चिमी पुस्तकें और विचारकों को पढ़-पढ़ कर वह भारत जैसी फ्यूडल, प्री-माडर्न भूमि में अल्ट्रा-माडर्न सपने और चित्र बनाने लगी थी। और आजकल तो वह विख्यात फ्रांसीसी साइको-एनालिस्ट, साइकोलोजिस्ट लाकां की रचनायें पढ़ रही थी, जो सारे मनोदोषों को भाषा से और उसी में ही जुड़ा मानते थे। उनके हिसाब से भाषा में ही मनुष्य की कॉन्शियस, सब-कॉन्शियस और अनकॉन्शियस (फ्रॉयड द्वारा स्थापित सिद्धान्त के अनुसार) धारायें बहती हैं। स्वाति ने सोचा की का•का•का को लाकां से जोड़ने में काफ़ी मज़ा आयेगा और यह सोच कर वह अन्दर ही अन्दर हँसी। सेट पर मंजू बहल के साथ जो हुआ और चैनल-प्रमुख के कुत्ता-प्रेम का एक पूरा फ्रॉयडियन अनैलिसिस!

स्वाति के पिताजी अगले दिन वापस मुम्बई लौट रहे थे तो उन्हें अपने होटल का कमरा खाली करना था। अब चूँकि स्वाति को काम मिलने वाले था तो उसने सोचा कि वह कुछ दिन अपनी मौसी, जो उत्तरी दिल्ली के मॉडल टाउन में रहती थी, के पास ठहर जायेगी। अपने पिता को सारी बातें बता कर उसने उस रात ही अपनी मौसी के पास जाने का फैसला किया क्योंकि उसके पिता को किसी के घर रात को खाने पर जाना था। अपना बैग ले कर वह होटल से बाहर निकली।

दिल्ली में ऑटो रिक्शा पर चलने के अपने ही फ़ायदे हैं। ऑटो वाले से अगर बातें करने का मौका हाथ लगे तो बिल्कुल भी छोड़ना नहीं चाहिए, ख़ास तौर पर एक ऐसे पत्रकार को तो बिल्कुल नहीं जो किसी ख़बर की खोज में निकला हुआ हो। स्वाति ने ऐसे ही साधारण-सी आवाज़ बना कर नार्मल तरीके से ड्राइवर से पूछा कि आजकल तो दिल्ली में का•का•का का नाम बहुत फैला हुआ होगा। ऑटो वाले ने कहा कि उसे कुछ पता नहीं था। स्वाति ने फिर सोचा कि अभी उसके पास बहुत कम जानकारी थी, उसे तो यह भी नहीं पता था कि का•का•का ने अपने कारनामे कहाँ किए थे, हालाँकि चैनल-प्रमुख की बातों से ऐसा आभास ज़रूर हुआ था कि बात काफ़ी आगे तक जा चुकी थी... और उनके साथ होनी वाली घटनाएँ बस एक छोटा-सा भाग थीं।

अचानक से ऑटो वाला कुछ बोलने लगा। उसने स्वाति से पूछा कि क्या वह गरीबों वाले का•का•का की बात कर रही थी? स्वाति ने जवाब दिया कि गरीबों वाले का तो पता नहीं पर वह का•का•का की बात ज़रूर कर रही थी। उसने ड्राइवर से पूछा कि गरीबों वाला का•का•का कौन था? ड्राइवर ने कहा कि पिछले दो माह से उनके इलाके जहाँगीरपुरी जे०जे० (झुग्गी-झोपड़ी) कॉलोनी में हर रविवार को बच्चों, बूढ़ों और औरतों के लिए सारा दिन मुफ़्त खाने का आयोजन किया जाता है। और खाने की मेज़ों पर का•का•का के कार्ड पड़े रहते हैं - लाल रंग के जिनपर एक तरफ़ क़ातिलों का क़ातिल और दूसरी ओर सुनहरी अक्षरों में का•का•का लिखा

होता है। खाना सिर्फ़ बच्चों (बारह साल से कम), बूढ़ों (साठ साल से अधिक) और औरतों (कोई भी उमर) को दिया जाता है और सबको अपनी जन्म-तिथि का सबूत लाना पड़ता है। किसी ने, खाना बनाने वाले हलवाई ने भी कभी का•का•का को देखा नहीं है और न ही का•का•का कभी वहाँ आया है। वे सब सोचते थे कि ज़रूर ही कोई सिरफिरा राजनेता या बड़ा आदमी होगा।

स्वाति ने उस ऑटो वाले का पता वगैरह ले लिया और खोज करने के लिए किसी दिन उसकी कॉलोनी में जाने का विचार बना लिया। उसकी मौसी का घर आ गया था। उसने ड्राइवर को पैसे दिये और फिर दोबारा मुड़ कर उसका मोबाइल नम्बर भी माँग लिया। उसे कहा कि जब उसे ऑटो की ज़रूरत होगी तो उसे फ़ोन कर देगी। ऑटो वाला एक पक्की सवारी मिलने की आशा से ख़ुश हो गया।

स्वाति घर में घुसी और मौसी से गले मिली। बहुत दिनों बाद उनसे मिल रही थी तो दोनों ने मिल कर ख़ूब सारी बातें कीं। मौसी के पति का कश्मीरी गेट बाज़ार में ऑटो पार्ट्स का व्यवसाय था। उनके एक लड़का और एक लड़की थी। लड़की की तो शादी हो गयी थी और लड़का व्यवसाय में हाथ बँटाता था। लड़का अपने खाली समय में रॉक गाने गाता था, वह एक भारतीय रॉक ग्रुप का मुख्य गायक था। मौसी ने स्वाति को मेहमानों वाले कमरे में ठहराया और वह कमरे में अपना लैपटॉप खोल कर उस पर दिन भर की घटनाओं के बारे में लिखने लगी।

उधर चैनल-प्रमुख अपने दफ़्तर में स्वाति के लिए का•का•का से सम्बन्धित फ़ाइल तैयार कर रहे थे। उन्हें एक टेलीफ़ोन कॉल का इन्तज़ार था जिससे उन्हें एक महत्त्वपूर्ण जानकारी मिलने वाली थी।

लगभग आधा घण्टा बीत जाने के बाद टेलीफ़ोन की घण्टी बजी। उन्होंने फ़ोन उठाया और दूसरी ओर से उन्हें अपने ख़बरी की आवाज़ सुनाई दी। ख़बरी ने बताया कि सी०बी०आई० के विशेष इंसपेक्टर राज मलहोत्रा के पास का•का•का का केस है। ख़बरी ने राज मलहोत्रा के दफ़्तर का पता भी बताया और फ़ोन जल्दी-जल्दी काट दिया। चैनल-प्रमुख ने यह जानकारी फ़ाइल में डाल दी और बाकि दस्तावेज़ों के साथ फ़ाइल को सम्पूर्ण कर दिया। फ़ाइल में पड़ी सुराजपुरा के रघुवंशी परिवार वाली जानकारी के बारे में उन्होंने दोबारा सोचा, और यह भी कि हो न हो किसी-न-किसी तरीके से का•का•का का सम्बन्ध उस रघुवंशी परिवार से ज़रूर है।

जहाँ-तहाँ मिडियोक्रिटी

कुछ समय बीत गया। राज मलहोत्रा और स्वाति देशमुख दोनों अपने-अपने तरीकों से का•का•का की खोज में लगे रहे। दोनों को ही लगने लगा कि शायद सुराजपुरा जा कर कोई बात बनेगी क्योंकि जितनी भी अन्य घटनाएँ हुईं उनमें से काफ़ी किसी न किसी तरह से सुराजपुरा से ही सम्बन्धित थीं। दोनों ने अपनी-अपनी फ़ाइलें रट कर जाँच-पड़ताल करने की पूरी तैयारी कर ली थी।

उन दिनों टेलीविज़न व समाचार-पत्रों और अन्य माध्यमों में भी दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) के एक प्रोफ़ेसर योगी मृत्युंजय के काफ़ी इण्टरव्यू आ रहे थे, उनके कई लेख भी इधर-उधर काफ़ी छप रहे थे। बात यह थी कि उन्होंने एक किताब लिखी थी जो हाल ही में छपी थी और बहुत चर्चा में आ रही थी क्योंकि उस किताब का विषय था समकालीन भारतीय संस्कृति। मृत्युंजय जी ने किताब में वैदिक काल से ले कर अब तक भारत का एक बहुत सुहाना सफ़र अंकित कर दिया था और हिन्दुओं, मुसलमानों, जैनियों, सिखों...

लगभग सारे धर्मों के प्रतिनिधियों, नेताओं को इस किताब में उनके धर्मों पर लिखे गये वचनों पर आपत्ति थी। किताब में भारत की राजनैतिक दुनिया और एन्टेरटेन्मेंट उद्योग यानी बॉलीवुड पर भी ऐसी बातें लिखी थीं जिनसे काफ़ी लोग मृत्युंजय से ख़फ़ा हो गये थे। मृत्युंजय के प्रकाशक काफ़ी ख़ुश थे क्योंकि किताब ने धूम मचा दी थी, और उसकी अच्छी-ख़ासी बिक्री हो रही थी। मृत्युंजय की तस्वीरें पत्रिकाओं, अख़बारों इत्यादि हर जगह पर दिखाई पड़ जाती थी। कहने को तो मृत्युंजय एक राजनैतिक विश्लेषक थे पर इस किताब से उनके चिन्तन के सारे पहलू प्रकट होते थे और उन्हें भारत का एक बड़ा इन्टेलेक्चुअल माना जाने लगा था। किताब काफ़ी अच्छे तरीके से लिखी गयी थी, अंग्रेज़ी में, और अब इसके अनुवाद हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाओं में करने के प्रयास किये जा रहे थे। मित्रों यह अलग बात है कि मृत्युंजय ने ऐसा कुछ नहीं लिखा था जो नया हो, बस पुरानी, ज्ञात बातों को नये जामे पहना कर एक ऐसा रूप दिया जिसने खलबली मचा दी, और आजकल भारत में खलबली मचा कर ही बिक्री करने का ज़माना है।

ख़ैर मृत्युंजय के सम्पर्क, जैसा कि सामान्य बात है, राजनितिज्ञों, मन्त्रियों, प्रशासनिक सेवा के अफ़सरों... सबसे थे ही। भई जेएनयू के प्रोफेसर और छात्र तो एक अभिजात्य, ख़ास वर्ग से ही आते हैं, यह तो आप जानते ही होंगे। इस विश्वविद्यालय को भारत, और तो और संसार में भी सबसे बढ़िया विश्वविद्यालयों में से माना जाता है, इस के गुण-

अवगुण सबमें एक विशेष अन्दाज़ है। तो सुनिए इससे जुड़ा एक किस्सा। बात यह हुई कि एक बार जेएनयू कैम्पस के एक छात्रावास से एक चोर पकड़ा गया। कोई मामूली-सा चोर था जो खुले कमरों में से घड़ियाँ, पर्स, मोबाइल आदि उठा रहा था। तो हुआ यह कि बजाय पुलिस को बुलाने के छात्र-संघ ने फैसला किया कि सुनवाई कैम्पस में ही होगी, संघ के सामने और उनका फैसला ही सर्वमान्य होगा। चोर की दलीलों को सुन कर यह निर्धारित किया गया कि असली मुज़रिम वह नहीं बल्कि भारत सरकार व भारतीय समाज है जिसने ऐसे हालात पैदा किये कि उस चोर को चोरी करनी पड़ी... तो साहब सारा चुराया हुआ सामान वापिस करवा कर उसे छोड़ दिया गया। क्या इससे बाहर की दुनिया पर कोई फ़र्क़ पड़ा? क्या इससे भारत सरकार या समाज के रवैये में रत्ती भर का भी फ़र्क़ पड़ा? जवाब आप जानते ही हैं। जेएनयू जैसे सुरक्षित छोटे वैचारिक द्वीपों में जो होता है वो ग्रेट इण्डिया में फैली असमानताओं, अत्याचारों व हर प्रकार की चोरियों की आग के सामने कुछेक पलों में ही झुलस जाता है।

तो मृत्युंजय के पास का•का•का की ख़बर पहुँच गयी थी। और चूँकि समकालीन भारत का कच्चा-चिट्ठा खोलने में उनसे ज़्यादा माहिर कोई नहीं था इसलिये राज मलहोत्रा को उनसे मिल कर केस को सुलझाने के लिये कोई राह सुझाने का आदेश दिया गया। साथ ही साथ स्वाति को भी उनसे मिल कर का•का•का की मनःस्थिति समझने व उसे समझ कर कोई सुराग हासिल करने का प्रस्ताव दिया गया। मृत्युंजय ने दोनों

को, यानी सरकार व पत्रकार को एक साथ ही बात करने के लिये जेएनयू कैम्पस के अपने घर में बुला लिया। मृत्युंजय को लगा होगा कि दोनों से अलग-अलग बात करके अधिक समय लगेगा या फिर शायद उनके मन में सरकार और पत्रकार से एक साथ बात करने की ख़ुराफ़ाती इच्छा ने घर कर लिया होगा... कुछ कह नहीं सकते क्यों उन्होंने सरकार की निजी बातों को निजी न रखने का निर्णय लिया। मित्रों इन्टेलेक्चुअल लोगों की सोच दूर-दूर तक पहुँचती है और इनकी पहुँच भी कम नहीं होती।

इसे किस्मत का खेल कहिए या फिर भाग्य का हेर-फेर, मृत्युंजय के बहाने राज और स्वाति का मिलन होने वाला था। सुबह के दस बजे राज मलहोत्रा अपनी सरकारी महिन्द्रा जीप और स्वाति देशमुख एक ऑटो-रिक्शा में सवार हो कर जेएनयू कैम्पस में दाखिल हुये। मृत्युंजय जी के ग़रीबख़ाने, यानी विश्वविद्यालय के एक डुप्लेक्स बंगले के द्वार पर सरकारी गाड़ी और ऑटो-रिक्शा रुके। दोनों जन बाहर निकले और राज मलहोत्रा की नज़र स्वाति पर पड़ी। राज का दिल स्वाति को देखते ही धक-धक करने लगा! यह कोई फिल्मी स्क्रिप्ट नहीं है और न हीं कोई साहित्यिक अलंकार, उसका दिल सच में ही ज़ोर से धड़कने लगा। अनायास पैदा हुई इस धुकधुकी के साथ-साथ एक पल के लिए उसके दिल में उस प्रेम की याद भी पनपने लगी जिसने उसके दिलोदिमाग को हिला-डुला कर रख दिया था। पर ड्यूटी की याद ने उसके पाँव दूसरी ओर मुड़वाए और स्वाति के चेहरे से नज़र हटा कर वह

मृत्युंजय जी के प्रवेश-द्वार की ओर बढ़ा। पीछे-पीछे स्वाति भी आ रही थी। एक लम्बे बालों और फैली हुई दाढ़ी वाले आदमी ने दरवाज़ा खोला। दरवाज़ा खोलते ही उसने काफ़ी दम से रौबदार आवाज़ में नमस्कार किया और आने वालों का अता-पता पूछने लगा। राज और स्वाति थोड़ा चकित हुए क्योंकि रौब के साथ-साथ ऐसा भी लग रहा था जैसे कि उस व्यक्ति की आवाज़ में कोई अजब-सी मिठास का वास हो। और राज को स्वाति को अपने पीछे देख हैरानी भी हुई। वे दोनों बारी-बारी से बोले कि उन्हें मृत्युंजय जी से मिलना था। व्यक्ति ने बहुत अजीब-सी भंगिमायें अपना लीं और वह आँखें टेढ़ी कर जासूसी उपन्यासों वाले अन्दाज़ में राज और स्वाति की उमर, काम, परिवार इत्यादि के बारे में पूछने लगा। तभी पीछे से मृत्युंजय जी आते दिखाई दिये। उन्होंने आते ही माफ़ी माँगी और उस व्यक्ति को अन्दर जाने को कहा। राज और स्वाति को अन्दर बुला कर वे उन्हें अपने घर के मुख्य कमरे में ले गये। सम्मान से उन्हें बैठा कर वे फिर बोले कि बाबा जी के लिये वे क्षमा चाहते थे क्योंकि बाबा जी की मानसिक हालत कुछ अच्छी नहीं थी और वे कहीं भी कुछ भी बोलने बैठ जाते थे। राज व स्वाति को तब पता चला कि लम्बे बाल-दाढ़ी वाले इंसान को मृत्युंजय जी बाबा जी बुला रहे थे। तभी बाबा जी भी ड्रॉइंग रूम में प्रवेश कर गये और बोलने लगे –

"देखा जाये तो वो है क्या – उसकी पहचान क्या है? सबसे पहले तो वह एक नाम है, यानी आलिम खान... फिर

उसका परिवार, शिक्षा, अनुभव वगैरह से मिला-जुला कर जो मिक्सचर बना वो वही है। कोई एक इंसान नहीं है भीतर... तो उसके अन्दर बहुत से इंसान बसते हैं... उसकी तो हालत बुरी हो गयी होगी उन सब इंसानों के बीच समन्वय बिठाते-बिठाते... देखो उसकी सबसे प्रबल इच्छा क्या होगी? तुमने इसके साक्षात्कार, टेलीविज़न कार्यक्रम, फिल्में इत्यादि देखी होंगी? हाँ तो उसके अन्दर है एक अदम्य इच्छा, अभिलाषा या कहो तो आगे बढ़ने का गहन चाव... जो, अगर ठीक से देखा जाये तो डर से पैदा होता है... जी हाँ डर से... असुरक्षता की भावना से... कोई क्यों किसी पागल की तरह अपने आस-पास इतना पैसा, रुपया, चीज़ें, बैंक-बैलेंस, ज़मीन-जायदाद इकट्ठी करना चाहेगा? सोचो... बात असल में यह है कि उसे इन चीज़ों का बोध ही नहीं होता है... वह तो किसी पागल की तरह वही जमा करता जा रहा है जो इसके पास पहले से ही बहुत है। और अगर सीक्रेट रख कर यह सब करे तो कोई बात नहीं... पर वो तो सब को बता-बता कर करता है, अपना ब्रैंड बनाता है और बाकि सब जल कर उसी पागलपन को अपना बैठते हैं! एक पागल ने लाखों पागल खड़े कर दिये हैं..."

मृत्युंजय जी ने बाबाजी को शान्त रहने के लिये कहा और बताया कि उनके मेहमान आये हुये थे, वे उनसे अकेले में कुछ बात करना चाहते थे। बाबाजी अन्दर चले गये। मृत्युंजय जी ने फिर माफ़ी माँगी और कहा कि बाबाजी जेएनयू में अंग्रेज़ी भाषा विभाग में प्रोफेसर थे, और इन्होंने इतनी

किताबें पढ़ीं, इतनी किताबें पढ़ीं कि एक दिन उनके दिमाग के वश से सब कुछ बाहर चला गया। पहले वे मृत्युंजय जी के बहुत अच्छे मित्र थे, और जब से विश्वविद्यालय ने उनकी मानसिक हालत के चलते उन्हें सेवा-मुक्ति दे दी तब से मृत्युंजय जी उनका ख़्याल रख रहे थे। उनके परिवार में भी कोई इनकी ज़िम्मेदारी नहीं लेना चाहता था। मृत्युंजय जी के साथ वे ठीक से बर्ताव करते थे, बस कभी-कभी अपने विचारों को प्रकट करने में कोई कसर नहीं छोड़ते थे, चाहे किसी के भी सामने हों। आजकल वे नये भारत के सबसे चमकते फिल्मी सितारे आलिम खान के बारे में अपने तरीके से रिसर्च कर रहे थे, और हमेशा उसी की बातें करते रहते थे। उन्होंने माफ़ी माँगी और फिर दोनों के लिये चाय मँगवाई।

मृत्युंजय जी ने कहा कि उन्होंने उन दोनों को एक साथ इसलिये बुलवाया था चूँकि दोनों के साथ एक ही बात करनी थी, तो इससे समय की बचत होने वाली थी। उन्होंने कहा कि उनकी दृष्टि में सरकार और मीडिया दोनों को ही का•का•का के राज़ का भाण्डाफोड़ करना चाहिये क्योंकि पानी सिर से ऊपर गुज़र चुका था। उन्होंने कहा कि उन दोनों को आलिम खान के केस के बारे में तो पता ही होगा। राज और स्वाति दोनों ने हामी भरी। राज ने पूछा कि स्वाति कहाँ काम करती थी तो मृत्युंजय जी ने फिर से माफ़ी माँगते हुये दोनों का आपस में परिचय भी करा दिया। मित्रों, आलिम केस में का•का•का अपना एक और रूप प्रकट कर चुका था। हिन्दुस्तान के अथाह काले धन के बारे में तो सबको पता ही है, भारत

में अभी भी अर्थव्यवस्था का अधिकतर भाग काले धन में ही चलता है। यह वह पैसा है जिस पर कोई भी टैक्स नहीं दिया जाता, और जिसे सरकारी आयकर विभाग से छिपाया जाता है। फिल्मी सितारों और काले धन का एक अटूट रिश्ता है जिसे भारत के सबसे चहेते और जवान फिल्मी सितारे आलिम खान ने भी निभाया। हुआ यह कि आलिम खान ने उलटे-सीधे रास्तों को अपना कर बहुत-सा पैसा इकट्ठा किया और अपनी एक फिल्म प्रोडक्शन कम्पनी खोली। अब आलिम खान जो है वो पुराने ज़माने का कोई अभिनेता तो है नहीं... जैसे विरेन्द्र कुमार, जो बेचारे अपनी कम्पनी खोल कर बैठ तो गये पर दो-तीन फिल्मों का ज़बरदस्त भट्ठा बैठने पर उनकी हालत बहुत ही पस्त हो गयी। उनका तो घर तक कम्पनी के खुलने में गिरवी हो चुका था और नुक्सान के बाद उसे बेचने तक की नौबत आ गयी। ख़ैर रंजीत सिंह जैसे राजनीतिज्ञों और खटाऊ जैसे उद्योगपतियों के सहारे इन्होंने अपना बेड़ा पार लगाया। पर आलिम खान की व्यावसायिक सोच अच्छी होने के कारण (सीधे-साधे शब्दों में कहें तो उसमें लालच और भाग्य का संयोग अच्छा होने पर) उसकी बनाई फिल्में तो अच्छी चलीं लेकिन अपनी फ़ितरत के कारण वह और दूसरे विवादों में घिर गया। आज के भारत में एक जवान आदमी, चालीस की उमर के आस-पास, जो करोड़पति हो, जिसके बहुत से चाहने वाले हों (असली चाहत और इस चाहत में काफ़ी फ़र्क होता है मित्रों), जिसके पास बंगले हों, बड़ी-बड़ी गाड़ियाँ हों, उसका सिर आसमान पर चढ़ना स्वाभाविक है,

यही संसार की नियति है दोस्तों। आलिम खान ने प्रेस आदि में ऐसे-ऐसे बयान दिये जिनसे पता चलता था कि इनका अहम् आसमान को पार कर अन्तरिक्ष में कोसों दूर चला गया था। अपने-आप को ही सम्राट का ख़िताब देते हुए यह साहब सच्चाई से मुँह मोड़ने लगे... (अब इतने बड़े अन्तरिक्ष में, कौन कहाँ का सम्राट कौन किसकी प्रजा... इंसान हैं ही क्या इस पूरे ब्रहमाण्ड में, सिवाय जैसे एक चींटी के) इन्होंने अपनी एक ऐसी छवि बना ली जो एक ऐसे मिडल क्लास नौजवान की थी जिसने भरपूर मेहनत कर वो हासिल किया जिसकी सबको इच्छा होती है, उन ऊँचाइयों पर पाँव जमाये जहाँ सब पहुँचना चाहते हैं। दूसरे शब्दों में इन्होंने मिडिल क्लास के सच्चे हीरो का रूप अपना लिया। पुराने सुपर फिल्मी सितारों जैसे विरेन्द्र कुमार से भी इन्होंने अपनी ही धुन में बहते-बहते कन्नी काटना शुरू किया। तो हुआ यूँ कि आप चाहे जाने या न जाने पर हर किसी का, हर उस शख़्स का जो अपने-आप को तोल कर बाज़ार में बिकने या फिर अपना कुछ बेचने के लिए खड़ा होता है, उसका एक दाम होता है। आलिम खान और रंजीत सिंह, जो विरेन्द्र कुमार के सर्वहारा का चरित्र बख़ूबी से निभा रहे थे, के बीच प्रेस में कुछ गहमा-गहमी हो गयी (कारण न पूछियेगा क्योंकि इगो और मिथ्या गर्व सहज रूप से ही किसी भी टकराव के कारण बन जाते हैं)। नतीजतन आलिम ने सिंह को दल्ला कह कर बुला दिया और कहा कि वह तो ऐसे शख़्स का कभी मुँह भी नहीं देखना चाहेंगे। सिंह के कार्यकर्ताओं ने आलिम के मुम्बई वाले

बंगले पर पथराव कर दिया। आलिम तो बिफ़र गये। लोगों ने सोचा कि अब तो दोनों के बीच का दायरा और भी बड़ा हो गया होगा। पर हुआ यह कि सिंह, जो अपना प्रसार, प्रचार करने और दोस्तों पर प्रभाव जमाने के लिये अनगिनत हदें पार कर सकते हैं, के एक डियर उद्योगपति मित्र की लड़की की शादी होने वाली थी। यह मित्र सिंह के ख़ासम-ख़ास थे और काफ़ी मालदार थे। उनकी लड़की को आलिम खान से अपनी शादी पर आ कर नाच करवाने का शौक चर्राया। सिंह के द्वारा आलिम को सन्देश भिजवाया गया। और आलिम ने न बोलने से पहले एक बार यह ज़रूर पूछा कि उसे वहाँ शादी में अपने नाच का जौहर दिखाने के कितने पैसे मिलने वाले थे, और फिर मना किया।

अब सिंह के बैंक-खाते में से किसी ने उनके मित्र द्वारा आलिम को नाचने के लिये बुलाए जाने पर दिये जाने वाले पैसों से दुगुनी रकम निकलवा ली और आलिम को सन्देश भिजवाया कि क्या अब वे आना पसन्द करेंगे? जी हाँ मित्रों, आपने सही अन्दाज़ा लगाया होगा, आलिम मान गये, उन्होंने यह बोला कि दुश्मनी पालना कोई अच्छी बात नहीं थी... भारत जैसे देश में सबको प्यार से, हिल-मिल कर रहना चाहिये, कुछ सीखना चाहिये भारत की सहस्त्रकालीन संस्कृति से। तो आलिम शादी के दिन एक घण्टा वक़्त निकाल कर नाचने पहुँच गये। सिंह को अचरज हुआ फिर भी उन्होंने आये हुए को स्वीकार कर लिया और प्रेस में आलिम की तारीफ़ में झण्डे गाड़े। अगले दिन सिंह ने अपने बैंक-खाते को जांचा तो

पता चला कि कोई आलिम को दिये जाने वाले रुपयों से दुगुनी रकम निकाल चुका है और सारा पैसा उसे दिया जा चुका है। अब सिंह को नाच की असली कीमत का अन्दाज़ हुआ। और खाते में पैसे निकालने वाले के नाम वाली जगह पर वही शब्द लिखा था–का•का•का। सही कहा गया है कि बाप बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपया! उधर आलिम ने नाच ख़त्म करने के बाद अपनी पतलून की जेब में हाथ डाले तो एक पर्चा निकल आया, जिसपर यूँ कुछ लिखा था–

औसतपने की पराकाष्ठा हो तुम, तुम्हारी हिंगलिश भाषा में कहें तो मिडियोक्रिटी की लिमिट। अरे भैया, कुछ सामान्य बने रहो, एक आम आदमी की तरह। इस तरह से एक सफल, सर्वश्रेष्ठ, सर्व-धर्मों का सम्मान करने वाले इंसान, मज़ाकिया, फ़न लविंग और जीवन से पूर्ण सन्तुष्ट व्यक्ति की छवि को बनाना व भुनाना छोड़ो, यह प्राकृतिक नहीं है। जनता को साफ़-साफ़ बताओ कि तुम्हें और कुछ नहीं पैसे की भूख सताती है, जिससे तुम्हारी शक्ति बनती है, जिससे तुम उन लोगों के दिल पर राज करते हो जो तुम्हें नहीं, बल्कि तुम्हारे स्वरूप में खुद को देखना चाहते हैं, अचेतन में अपनी कामनाओं के फलित रूप को तुम्हारे जीवन में देखते हैं... अगर सारी ज़िन्दगी अपने भक्त लोगों, प्रशंसकों के चरण पकड़ कर बैठे रहोगे तब भी उनके एहसानों को अदा नहीं कर पाओगे,

तुम्हारे सोने के किले जैसे बंगले की एक-एक ईंट आम लोगों के द्वारा खरीदी गयी तुम्हारी फिल्म की टिकटों से बनी है। जनता को मूरख बनाना छोड़ो और स्पष्ट कर दो कि तुम्हारे लिए नैतिकता, मोरैलिटी का कोई महत्त्व नहीं है।

तुम पर कड़ी नज़र रखे हुए,

का•का•का

मृत्युंजय जी ने बात आगे बढ़ाते हुये कहा कि वे स्वाति और राज को का•का•का के ऊपर अपने विचार बताएँगे ही, और अगर उन्हें कुछ पूछना हो या बताना हो तो वे भी बोलें। चाय की चुस्की भरते-भरते मृत्युंजय जी थोड़ा रुके फिर बोलने लगे। उन्होंने कहा कि सबसे पहली चीज़ जो उन्हें लगी वह यह थी कि का•का•का कोई एक व्यक्ति नहीं होगा। मन-ही-मन राज और स्वाति ने भी उनके विचार पर हामी भरी। मृत्युंजय जी के अनुसार यह कोई ऐसा ग्रुप बन गया है जो भारत को प्रगति के पथ से हटाना चाहता है। उन्होंने कहा कि एक विकासशील देश में यही होता है। कुछ लोग विकास ढांचे के हाशिये पर रह जाते हैं और यही लोग फिर समाज, सरकार, देश से एक प्रकार की नफ़रत करने लगते हैं, क्योंकि उन्हें वह सफलता नहीं मिलती है जो समाज के कुछ सदस्यों को मिलती दिखती है। सही मायने में कहा जाये तो उन्हें निरन्तर मेहनत करने का मतलब नहीं पता होता है, वे सोचते हैं कि सारा पैसा, रुपया, संसाधन समाज के एलीट वर्ग में ही रह जाता है और वहाँ से आगे नहीं निकलता।

मृत्युंजय जी ने माओवादियों का उदाहरण दिया। दोस्तो माओवादी काफ़ी वर्षों से छत्तीसगढ़, बंगाल, बिहार व झारखण्ड के कबायली इलाकों में उत्पात मचा रहे थे। बहुत से लोग इनके बारे में बहुत-सी चीज़ें कहते थे, जैसे कि ये आतंकवादी थे, या फिर इनको पाकिस्तान या चीन से सहयोग मिलता था, या फिर यह कि इनका उद्देश्य भारत से डेमोक्रेसी को हटाना था वगैरह वगैरह। भारत की जानी-मानी लेखिका शीला अदनानी इनसे बहुत प्रेम रखती थीं। उनका मानना था कि भारत सरकार प्रगति के नाम पर इन इलाकों की कबायली जनता को विस्थापित करने का षडयंत्र रच रही है, और प्रगति से यहाँ मतलब था बड़ी-बड़ी खनिज-पदार्थ निकालने वाली कम्पनियों के साथ किये गये भारत सरकार के अनगिनत कॉन्ट्रैक्ट, जिनमें उन्हें इन इलाकों में खनिज-पदार्थ निकालने की अनुमति दी गयी थी। यह धंधा करोड़ो-अरबों में जाता था क्योंकि यह इलाका, जिसमें कबायली लोग अनन्त काल से वास कर रहे थे, खनिज-पदार्थों में भरपूर था। अब अदनानी का कहना था कि हज़ारों वर्षों से जो आदिवासी वहाँ निवास कर रहे थे, जिनका दाना-पानी वहीं था, और जिन्हें कहीं और जा कर दोबारा से जीवन-यापन करने के बारे में एकदम कुछ नहीं पता था, उन्हें विस्थापित करने से जो जनवाद का ह्रास हुआ है वह करोड़ो-अरबों रुपयों से भी कहीं अधिक है। अदनानी ने ढेरों पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में, व टेलीविज़न में भी इस विस्थापन के ख़िलाफ़ काफ़ी तर्क दिये। और तो और इन्होंने यह भी कहा कि अगर यही लोग हथियार अपना लेते हैं तो जायज़ है

क्योंकि अगर कोई आपको अपने हज़ारों सालों के घर से बाहर निकालने की कोशिश करेगा तो आप क्या करेंगे? ख़ास तौर पर तब जब आप के पास जीवन-यापन के लिए शिक्षा, पैसा या कोई अन्य संसाधन नहीं हों क्योंकि भारत सरकार ने कभी आपके विकास पर ध्यान ही नहीं दिया और आप समाज के हाशिये पर ही पड़े रहे। माओवादियों ने इस स्थिति का लाभ उठा कर उन आदिवासियों को हथियार थमा दिये, और इस तरह यह कहानी जनवाद और मार्क्सवाद के झगड़े में तब्दील की।

दोस्तों यहाँ भी का•का•का ने एक गुल खिलाया। झारखण्ड में माओवादियों ने चार पुलिस अफ़सरों को मार गिराया और साथ में दसेक सिपाही भी घायल हो गये। उस समय अदनानी भी सरकार की ज़्यादतियों का प्रचार करने वहीं गयी थीं। झारखण्ड पुलिस कमिश्नर ने एक प्रेस मीटिंग का आयोजन किया और वह बताने वाले थे कि किस तरह से पुलिस अपने ऊपर हुये इस अनाचार का जवाब देगी। सारे पुलिसकर्मी काफ़ी गुस्से में थे और जल्द से जल्द कुछ करना चाहते थे। मीटिंग में पुलिस के जन-सम्पर्क अधिकारी बता रहे थे कि किस तरह से पता लगाया जा चुका था कि हमला करने वाले आतंकवादी एक ख़ास गाँव से आये थे और पुलिस वहाँ धावा बोल कर उन्हें किसी भी हालत में पकड़ने के लिये अभियान करने वाली थी, चाहे ज़िन्दा या मुर्दा। और आप तो जानते ही है मित्रों कि भारत में, गेंहू के साथ घुन भी पिस जाता है, और घुन अक्सर ग़रीब ही होता है।

अचानक पुलिस के सारे आला अफ़सर जो जन-सम्पर्क अधिकारी के साथ ऊपर मेज़-कुर्सी पर बैठे थे सकते में आ गये क्योंकि उनके ऊपर काग़ज़ में लिपटे हुये पत्थरों की बरसात शुरू हो गयी। सभी अफ़सरों के माथों से खून बह निकला और जैसे पत्थरों की बरसात शुरू हुई थी वैसे ही ख़त्म भी हो गयी। हड़बड़ी में कोई भी पकड़ा नहीं गया। ख़ैर जब पत्थरों से काग़ज़ हटाये गये तो उन पर जो लिखा था वो पढ़ा गया। बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था कि **अब और अत्याचार सहा नहीं जायेगा, ख़बरदार!** और नीचे **शीला अदनानी सेना** लिखा था। तुरन्त ही शीला को गिरफ़्तार किया गया और सारे देश में चर्चायें होनी शुरू हो गईं कि देश कि इतनी प्रबुद्ध लेखिका भी आख़िरकार हिंसा क्यों करने पर आमादा हुई? इतनी चिन्तनशील लेखिका का एक सेना बनाने के पीछे क्या मक़सद था? ख़ैर बन्धुओं अदनानी ने अपने ऊपर लगे सारे इलज़ामों को बेबुनियाद ठहराया और कहा कि उन्होंने कोई सेना नहीं बनाई थी, कि उनका रास्ता यह नहीं था, वे तो सिर्फ़ बात-चीत में, सोच-विचार में विश्वास रखती थीं। पर किसी ने उनकी न सुनी और मुकदमा शुरू होने तक जेल में डाल दिया गया।

मुकदमे के पहले दिन ही जब वे अदालत में बयान देने के लिये खड़ी हुईं तो न्यायाधीश ने कहा कि उनके पास एक ख़त आया है जिसमें किसी **का॰का॰का** ने इस घटना की पूर्ण ज़िम्मेदारी ली है और ख़ास तौर से अदनानी के लिए यह लिखा है – **कुछ करो, कुछ तो करो, सिर्फ़ बोलते न**

रहो! न्यायाधीश ने वह ख़त अदनानी को भी दिखाया। कुछ दिनों बाद अदनानी को छोड़ दिया गया। जेल से निकलते वक़्त अदनानी काफ़ी अलग-सी लग रही थी। जैसे अधिक दृढ़ हो गयी हो, अधिक दुनियादार।

तो मृत्युंजय जी ने बात आगे बढ़ाते हुये कहा कि उनके हिसाब से का•का•का एक से ज़्यादा लोग हैं और जिस तरह से वे अपने काम को अंजाम देते हैं वे पढ़े-लिखे, सब कुछ जानने-बूझने वाले मालूम देते हैं। मृत्युंजय जी के अनुसार का•का•का ने भारत को अच्छे-भले ढंग से समझा-बूझा है और उसके बाद ही अपने काण्डों को अंजाम दिया है। इण्टरनेट, समाचार संसाधनों, इधर-उधर की ख़बरों की उनकी समझ बहुत डीप है और का•का•का हद से ज़्यादा चालाक होगा क्योंकि ये काम किसी आम आदमी के दिमाग की उपज नहीं हो सकते थे। यह का•का•का तो विदेशों से भी भली-भाँति वाकिफ़ था और यह भी हो सकता है कि यह विदेशों में कुछ वर्षों तक रहा हो। पश्चिमी देशों में, मृत्युंजय जी ने कहा, बहुत से ऐसे उत्पात मचाने वाले समूह हैं जो सरकारों तथा समाज सिस्टम के ज़बरदस्त ख़िलाफ़ होते हैं और गोरिल्ला युद्ध में विश्वास करते हैं... पर यह का•का•का तो गोरिल्ला युद्ध से भी अधिक महीन था, और इसीलिए और भी ज़्यादा ख़तरनाक। का•का•का में तो उन्हें एक ऐसे सर्वव्यापी ग्रुप के लोग नज़र आते थे जो हर वक़्त समाज व राजनैतिक प्रशासन पर नज़र रखे हुये हों। पर पश्चिमी देशों के उत्पादी समूह किसी ख़ास विचारधारा से सम्बन्ध नहीं रखते और अगर

रखते भी हैं तो समाजवाद के सिद्धान्तों से, या फिर मार्क्सवाद या लेनिनवाद से। पर मृत्युंजय जी को का•का•का इन सबसे से परे लगा। उनके अनुसार का•का•का के सिद्धान्त किसी भी ज्ञात विचारधारा में नहीं ढलते, उसकी विचारधारा को का•का•का वाद कहना ही सबसे सही होगा।

अब तक जो कछ बी मृत्युंजय ने बोला उससे स्वाति और राज सहमत थे। उन्होंने का•का•का के ऊपर इतना नहीं सोचा था पर मृत्युंजय की बातें उन्हें अपनी सोच का लब्बो-लुबाब लग रही थीं। राज ने मृत्युंजय जी से पूछा कि का•का•का कहीं अपने बारे में कुछ कहता क्यों नहीं है? कहीं ऐसा क्यों नहीं दिखाता कि कौन है, क्या सोचता है, या फिर आख़िरकार चाहता क्या है या कहाँ पहुँचना चाहता है? स्वाति ने भी कहा कि राज के सवाल सही थे। का•का•का ने कभी भी अपने बारे में कहीं कुछ नहीं बोला था। यहाँ तो कुछ घटने पर हज़ारों संगठन ज़िम्मेदारी लेने दौड़े चले आते हैं, पर का•का•का को तो सिर्फ़ अपना नाम ही छोड़ता है, या फिर कोई सन्देश बस और कुछ नहीं।

मृत्युंजय जी ने कहा कि यही बात तो का•का•का को दूसरे सिस्टम-विरोधी समूहों से भिन्न करती है। का•का•का अपने लिये कुछ नहीं चाहता, उसकी कोई निजी इच्छा लगता है कि है ही नहीं। पर फिर भी उसका नाम प्रकट होना बहुत बड़ी बात है। अगर वह ये सब काण्ड बिना किसी नाम के करता तो लोगों को ये सारी घटनाएँ अनजुड़ी लगतीं। फिर क्यों वह इन सारी घटनाओं को जोड़ना चाहता है? मृत्युंजय

ने कहा कि का•का•का का एक क्लियर मकसद तो यही है कि जनता-जनार्दन को बोध दिलाना कि वह एक भुलावे में जीती है, कि समाज, देश, संसार के कथित कर्ता-धर्ता वास्तविकता में आम इंसान जैसे ही हैं, और अगर लोगों को अपने हक़ नहीं दिए जाते तो वे छीन के ले लेने चाहियें। और आधुनिकता के इस दौर में तो बाज़ार में अनगिनत औज़ार मिलते हैं। अपना हक पुनः प्राप्त करने के लिये तो पीछे नहीं हटना चाहिये। मृत्युंजय ने कहा कि का•का•का को कानून एक मज़ाक लगता है, उसे लगता है कि कानून से भारत में कुछ हासिल नहीं हो सकता और साफ़ सीधा रास्ता वही है जिसे उसने अख़्तियार किया हुआ है... तो सभी को यही करना चाहिये, या शायद उसमें ख़ुद ही लोगों को उनका हक़ दिलाने की भावना ने बीमारी के रूप में घर कर लिया है। किसी भी सूरत में का•का•का एक जनवादी, प्रगतिशील, समृद्ध देश के लिये एक विशाल ख़तरा है और उसे जड़ से मिटाना बेहद ज़रूरी है।

मृत्युंजय जी इसी तरह करीबन आधे-पौने घण्टे तक बोलते रहे। स्वाति और राज ध्यान लगा कर उन्हें सुनते रहे पर कुछ देर बाद ही उन्हें लगने लगा कि मृत्युंजय जी की बातें दायरे से बाहर जा रही थीं। वे इधर की बात उधर ले जा रहे थे और कुछ चीज़ों के बीच जो रिलेशन उन्होंने बनाये वे तो बिल्कुल ही अनावश्यक व अप्राकृतिक थे। ख़ैर एक बुद्धिजीवी इससे अधिक और कर भी क्या सकता है। पर फिर भी कुछ देर बाद स्वाति ने मृत्युंजय जी की बातों को अपनी कॉपी में

लिखना शुरू कर दिया, ताकि का•का•का के बार में अगर कोई नई चीज़ पता चले तो वह उससे अंजान न रह जाये। मृत्युंजय जी बहुत कुछ बोल रहे थे। राज ने नोट करना ठीक नहीं समझा और वह पूरे ध्यान से उन्हें सुनता ही रहा। ऐसा लग रहा था जैसे कि कोई कक्षा चल रही हो।

मृत्युंजय जी ने अपना लेक्चर ख़त्म कर के स्वाति और राज से पूछा कि क्या वे कोई सवाल पूछना चाहते थे। अब तक मृत्युंजय जी अपने प्रोफेसर के वेश में सम्पूर्ण रूप से आ चुके थे और स्वाति और राज दोनों को कुछ भी पूछने की हिम्मत नहीं हुई। हालाँकि स्वाति को ऐसे प्रोफेसरों के अनुभव अपनी शिक्षा के दौरान हुये थे पर राज तो अपनी शिक्षा काफ़ी समय पहले ही ख़त्म कर चुका था इसलिये वह कुछ अनबैलैन्स्ड-सा महसूस कर रहा था। स्वाति ने माहौल को हल्का बनाने के लिये दो-तीन बातें पूछ ही लीं और फिर दोनों ने मृत्युंजय जी से आज्ञा ली। मृत्युंजय जी ने उन्हें अपना निजी टेलीफ़ोन नम्बर देते हुये कहा कि अगर कोई भी बात स्पष्ट करनी हो तो वे उन्हें फ़ोन करने से बिल्कुल न झिझकें।

उनका धन्यवाद देते हुये स्वाति और राज अपनी-अपनी कुर्सियों से उठे ही थे कि अचानक बाबाजी दरवाज़े की ओट से निकल कर एकदम से सामने आ गये। ऐसा फ़ील हुआ जैसे कि वे सारे समय वहाँ दरवाज़े के पीछे छिप कर सारी बाते सुन रहे हों। अन्दर आते ही उन्होंने धड़ाक से अनवरत बोलना शुरू कर दिया–

"भारत का हाल बहुत ही बुरा है... यहाँ इतने लोग

प्रताड़ित हो रहे हैं जिनका आप तो अन्दाज़ा ही नहीं लगा सकते... अब इस आलिम खान को ही देख लीजिये। असल में यह आदमी है क्या? सुरक्षित माहौल में पला-बढ़ा, अंग्रेज़ीशुदा, पैसा कमाने की ग्रेटेस्ट इच्छा रखने वाला, पश्चिमी सभ्यता को ऊँची नज़रों से देखने वाला। एक वाक्य तक तो यह बिना अंग्रेज़ी के शब्दों के नहीं बोला सकता। हिन्दी की बजाय हिंगलिश बोलता है। अरे यह क्या जानेगा भारत के बारे में, उसकी उस सौ करोड़ जनता के बारे में, जिनका इतिहास इन आधुनिक लोगों की संस्कृति की तुलना में बहुत, बहुत पीछे से चला आ रह है... यह वह कल्चर है जो सब कुछ देख चुका है, सब कुछ कर चुका है... आधुनिकता है ही क्या सिवाय पश्चिमी अमीर देशों के लोगों की तरह जीना, और जीने से ज़्यादा मैं तो कहूँगा उनकी तरह मरना, तिल-तिल कर मरना... न कोई धर्म, न कोई संस्कृति, न कोई इंसानी सम्बन्ध... इनके पीछे भागोगे तो मरोगे... सब मरोगे... कहाँ गया वो भारत, जहाँ दूध की नदियाँ बहती थीं। जहाँ वेद, अर्थशास्त्र, चरक-संहिता, योग-वशिष्ठ जैसे ग्रंथ रचे गये। जहाँ बुद्ध, नागार्जुन, आदि शंकराचार्य, पतांजलि, गौड़ापड़ जैसे महान फ़िलासफ़रों ने जन्म लिया। अब तो हर तरफ़ डॉलर-यूरो की पूछ होती है। बुश जैसे कमीनों के तलवे चाटे जाते हैं। मुम्बई की घिसी-पिटी फ़िल्में हॉलीवुड की बेसिरपैर फ़िल्मों पर आधारित की जाती हैं। हर जगह बिल गेट्स और वॉरेन बुफ़ेट जैसे लालची लोगों की भगवान की तरह पूजा की जाती है। अरे भाई भारत में भी उपभोक्तावाद था... यह कहा जाता था

कि ऋणम् दृत्वा घृतम् पीवेत्। पर यह लोगों पर थोपा नहीं जाता था, लोगों को उपभोग करने के लिये अनकॉन्शियस रूप से डराया नहीं जाता था। प्रकृति के नियमों का सहज रूप से पालन किया जाता था। अब क्या होगा? विनाश-काल समीप आ रहा है और किसी का नहीं विनाश होगा, प्रकृति को क्या फ़र्क पड़ेगा, सिर्फ़ मुनष्य की डिस्ट्रक्शन होगी... जानवरों को देखो, कितने निर्वाण में रहते हैं। हमीं फंस चुके हैं, कोई रास्ता नहीं है, कोई भी रास्ता नहीं बचा है अब..."

यह कह कर बाबाजी जैसे हताश हो कर अन्दर चले गये। स्वाति और राज स्तब्ध खड़े रहे। मृत्युंजय जी इतने हैरान नहीं थे क्योंकि उनके सामने तो यह रोज़ ही होता था। उन्होंने राज और स्वाति से एक बार फिर माफ़ी माँगी, और उन्हें घर के दरवाज़े तक छोड़ने आये।

राज और स्वाति घर के बाहर निकले और दोनों ने एक-दूसरे को देख कर गहरी साँसें भरीं जैसे कह रहे हों कि क्या झमेला था यह। स्वाति तो थोड़ा मुस्कुरा रही थी पर राज एकदम गंभीर हो गया था।

राज ने आस-पास अपनी जीप के अलावा कोई और गाड़ी न देखते हुये स्वाति से पूछा कि उसकी गाड़ी कहाँ थी। स्वाति ने कहा कि वह ऑटो में आई थी। राज ने उसे अपनी जीप में लिफ़्ट देने का प्रस्ताव दिया। स्वाति ने स्वीकार कर लिया और साथ में कहा कि वह राज के साथ का•का•का के बारे में बात करना चाहती है, तो अगर उसके पास कुछ समय था तो वे कहीं पास में ही जा कर कॉफ़ी पीते हुये बात कर

सकते हैं। राज तो का•का•का केस पर ही सम्पूर्ण रूप से काम कर रहा था तो उसने बात मान ली। दोनों ने यह सोचा कि जेएनयू में कहीं न रुका जाये और पास में ही वसन्त विहार मार्केट जाने का निश्चय किया।

दोनों ही बाबाजी के नाटक और मृत्युंजय जी के लेक्चर से अपने दिमाग भारी महसूस कर रहे थे। जेएनयू कैम्पस से बाहर आ कर दोनों को आराम मिला। जीप हवा उड़ाते हुये भाग रही थी। न चाहते हुए भी राज को अमेलिया की याद आ ही गयी। पैरिस में उसके साथ उसकी मिनी कार में सौ-दो सौ की स्पीड पर फरार्टे से दूर-दूर तक जाना। अचानक उसने स्वाति का हाथ अपने कंधे पर महसूस किया, वह उससे कुछ पूछ रही थी और राज को यूँ खोया-खोया देख कर उसके चेहरे पर एक प्यारी-सी मुस्कान आई हुई थी। राज ने अपने-आप को संभाला और उससे पूछा कि क्या बात थी। स्वाति ने कहा कुछ ख़ास नहीं और तब ड्राइवर ने जीप को रोका। वसन्त विहार मार्केट आ चुका था। गाड़ी से उतरते वक़्त राज ने स्वाति से पूछा कि वह कहाँ से थी और अन्त में मुंबई सुनकर वह थोड़ा हैरान-सा हो गया। दोनों बारिस्ता कैफ़े में दाखिल हुए। स्वाति ने फ़ापुचीनो कॉफ़ी माँगी तो एक बार फिर राज को अमेलिया की याद आ गयी।

अपने दिमाग को काबू में रखते हुए राज ने स्वाति से का•का•का के बारे में बात करनी शुरू की। सबसे पहले तो उसने क्लियर किया कि वह चाहता था कि मीडिया इस केस को बिगाड़े नहीं, और अगर ऐसी कोई कोशिश हो तो सरकार

और सी०बी०आई० को अपने तरीके से मीडिया से निपटना अच्छी तरह से आता था। उसे आश्चर्य हो रहा था कि स्वाति के चैनल को का•का•का की ख़बर कैसे मिल गयी, और अब जब मिल ही गयी है तो वह चाहता था कि बात दबी-दबी ही रहे, ख़ास तौर पर तब तक जब तक कोई इम्पोरटेन्ट सुराग हासिल न हो जाये। स्वाति ने सबसे पहले तो यह कहा कि उसके चैनल की तरफ़ से तो वह निश्चिन्त रहे, क्योंकि न तो चैनल प्रमुख और न ही वह सस्ते जर्नलिज़्म में विश्वास रखते थे। उसने राज को बताया कि चूँकि कुछ घटनायें उसके चैनल-प्रमुख के साथ हुईं, और चैनल के साथ भी इसीलिये उसे इस गुप्त काम पर लगाया गया था। और यह कि उसके चैनल की ओर से अभी सिर्फ़ तहक़ीक़ात ही की जा रही थी, इस कहानी को छापने या टीवी में देने की बात तो अभी तक सोची ही नहीं गयी थी।

राज को लगा कि शायद चैनल प्रमुख व्यक्तिगत कारणों से यह तफ़्तीश कराना चाहते थे। उसे स्वाति की बातें सुन कर राहत मिली। उसने स्वाति से कहा कि अगर वह चाहे तो वे दोनों एक-दूसरे की मदद कर सकते थे। लेकिन शर्त यह थी कि बिना राज को पूछे उनका चैनल का•का•का पर कोई भी ख़बर जनता को नहीं दे। स्वाति ने कहा कि उसे तो यह शर्त ठीक लगती है पर फिर भी वह चैनल प्रमुख से बात कर के ही उसे कुछ बता पायेगी। राज ने दोहराया की उन्हें शर्त स्वीकार करनी ही पड़ेगी क्योंकि यह देश और वीआईपी नागरिकों की सुरक्षा का मामला है और का•का•का जैसे

आतंकी का विनाश करना उनकी सबसे पहली ज़िम्मेदारी है, और कानून भी उनके साथ है।

स्वाति के मुँह से हँसी फूट पड़ी। उसे राज की गंभीरता को देख कर मज़ा आया। उसे राज सीधे बॉलीवुड की फ़िल्मों से निकले किसी हीरो की तरह लगा। ऐसा अनुभव उसे पहली बार हो रहा था, और वह इसे एक एडवेंचर के रूप में ले रही थी।

राज का मन तो उसे हँसते देख एक फटकार लगाने का किया पर उसके मुँह से कोई शब्द नहीं निकल पाया। स्वाति ने हँसी रोक कर उसे भरोसा दिलाया की उसे इस मामले पर टेंशन लेने का कोई मौका नहीं मिलेगा। उसने राज से पूछा कि का•का•का मामले में उसका अगला कदम क्या होगा। राज ने जवाब देने की बजाय एक और ही सवाल कर डाला कि वह का•का•का के बारे में कितना जानती थी। स्वाति ने उसे कहा कि चैनल-प्रमुख ने उसे एक फ़ाइल दी थी जिसमें का•का•का के सारे कारनामों का अपटुडेट कच्चा-चिट्ठा था। फ़ाइल के अनुसार का•का•का सम्बन्धित अन्तिम घटना एक महीने पहले ही हुई थी। राज को फ़ाइल की बात सुन कर हैरानी हुई पर उसने कुछ ज़ाहिर नहीं किया। स्वाति ने सोचा कि राज का कॉन्फिडेन्स हासिल करना बहुत ज़रूरी था इसलिये उसने राज को बताया कि कुछ ही दिनों में वह सुराजपुरा जाने वाली थी क्योंकि उसे लगता था कि का•का•का का मुख्य गढ़ वहीं था। राज फिर चौंका क्योंकि यही कदम वह भी लेने वाला था, और यह संयोग देख कर उसके मन

में कुछ खटकने लगा। उसने स्वाति का फ़ोन-नम्बर लिया, उसे अपना नम्बर बताया और कहा कि उसे जल्द से जल्द वह चैनल-प्रमुख से इस मुद्दे पर हुई बातचीत का ब्यौरा दे। उसने ख़ुद मेहता साहब से इस बारे में बात करने का निश्चय लिया।

स्वाति के मना करने के बावजूद भी राज ने उसकी कॉफ़ी और अपनी ड्रिंक की पेमेंट की। उसके बाद स्वाति को उसके घर के रास्ते पर छोड़ने के बाद ड्राइवर को अपने दफ़्तर चलने को कहा हालाँकि शाम के छह बज चुके थे। अपने परिवार के साथ न रहने की वजह से उसे रोज़ शाम ऑफ़िस में काम के बारे में सोचते-सोचते ओल्ड मन्क रम के तीन बड़े-बड़े नीट पेग लगाने की बुरी लत लग चुकी थी।

पुराने अमीर

सुराजपुरा गुड़गाँव और नोएडा की तरह ही राजधानी दिल्ली की सीमा से सटे उन शहरों की गिनती में आ चुका था जहाँ ग्लोबलाइज़ेशन ने अपने पाँव पूरी तरह से पसार दिये थे। बड़ी-बड़ी मल्टीनैशनल कम्पनियाँ वहाँ अपने दफ़्तर खोल चुकी थीं, बड़े-बड़े मॉल, सुपरमार्केट इस शहर की शोभा बढ़ा रहे थे, और रहने के लिये आलीशान से आलीशान घर, बंगले और फ्लैट यहाँ मौजूद थे। पर पाठकों, कृपया याद करें की सुराजपुरा नवाब ग़ाज़ी खान ने बसाया था और उसी समय से यहाँ अच्छी-ख़ासी मुसलमान आबादी बसी हुई थी। यहाँ की मुसलमान आबादी इतनी ख़ुशहाल थी कि भारत-पाकिस्तान के बँटवारे के समय कोई भी मुसलमान परिवार यहाँ से पाकिस्तान की ओर नहीं गया। पर यह कहना सही नहीं होगा कि यहाँ मुसलमान बहुतायत में थे, बहुतायत में तो हिन्दु ही थे। और इन हिन्दु परिवारों में एक रघुवंशी परिवार था जो काफ़ी प्रतिष्ठित था और काफ़ी पीढ़ियों से सुराजपुरा में बसा था। कहा जाता है कि नवाब ग़ाज़ी खान ने सुराजपुरा के हिन्दुओं के लिये मन्दिर बनवाये और एक हिन्दु सामाजिक

संस्था का भी गठन किया जिसके प्रमुख इसी रघुवंशी परिवार के थे। रघुवंशी परिवार एक ब्राह्मण परिवार था और यह हिन्दु धर्म के प्रति अपनी निष्ठा के लिये काफ़ी सम्मानित माना जाता था। इसके सदस्य बहुत से कार्यक्षेत्रों में लिप्त थे, कई तो सुराजपुरा के बाहर या फिर देश के ही बाहर रहते थे। कई सदस्य राजनीति में भी उतर चुके थे और कुछ हिन्दु धर्म सभा या पंचरंग दल के महत्त्वपूर्ण सदस्य भी थे।

नवाब ग़ाज़ी खान का परिवार भी काफ़ी फैल चुका था। इसके सदस्य भी बहुत से क्षेत्रों में कार्यरत थे और राजनीति में भी छलांग लगा चुके थे। यह परिवार भी काफ़ी प्रतिष्ठित माना जाता था और साफ़ है कि इसकी गिनती सुराजपुरा के रईस घरानों में की जाती थी।

पिछले कुछ दशकों से सुराजपुरा में शेडयूल्ड कास्ट और ट्राइब या सीधा-सीधा बोलें तो अछूत जातियों के सदस्यों में भी काफ़ी मूवमेंट देखी गयी। बिहार के छदम यादव और उ०प्रदेश की सीमा कुमार जैसे नेताओं और उनकी पार्टिओं ने सुराजपुरा पर विशेष ध्यान देना शुरू किया और एक आन्दोलन का आरंभ किया। इससे एक नये तरीके की क्लास का निर्माण हुआ, वे लोग जो बाहर से तो अछूत थे, पर आर्थिक रूप से इतने कामयाब थे कि बड़े-बड़े हाई कास्ट परिवारों को मात देने की स्थिति में थे। काला धन हो या सफ़ेद धन, उनके पास दोनों ही अत्यधिक मात्रा में थे, ये अछूत आभिजात्य, एलीट अछूत बन गये थे।

तो मित्रों, सही मायने में कहा जा सकता है कि

सुराजपुरा एक किस्म का छोटा भारत ही था। इतना लम्बा इतिहास होने के कारण यहाँ बहुत से लोग आये-गये थे, और अब दिल्ली के क़रीब होने के कारण व मल्टीनैशनल कम्पनियों की मौजूदगी की वजह से यहाँ पूरे भारत से लोग काम करने आते थे और रहते भी थे। दक्षिण-भारतीय, महाराष्ट्र वाले, आंध्र-प्रदेश वाले सब यहाँ मिल-जुल कर रहते और काम करते थे। अगर आप किसी शनिवार को यहाँ के किसी रेस्टोरेंट में प्रवेश करें तो सभी भारतीय भाषायें सुनने को मिल जाती हैं। यहाँ के रहने वालों को सौभाग्यशाली कहा जा सकता है क्योंकि उन्हें वे सारी सुविधायें प्राप्त हैं जो अधिकतर भारतीयों को सिर्फ़ सपनों में मिलती हैं। दिल्ली के नज़दीक होने के कारण इन्हें भारत में क्या होता रहता है इन बातों की भी अधिक जानकारी रहती है, यहाँ रहने वाले जानते हैं कि भारत की दिशा किस तरफ़ मोड़ ले रही है।

अब हम चलते हैं अक़बर हैरीसन के घर, जो सुराजपुरा के एक बेहतरीन इलाके यानी नवाबी डीएलएफ़ हाइट्स में है। चार सौ गज़ की कोठी में सुबह के ग्यारह बज रहे हैं और अक़बर एक अंगड़ाई ले कर अपने बिस्तर से उठ रहा है। बाथरूम में किसी के नहाने की आवाज़ आ रही है और हल्के-हल्के गाने की एक धुन भी, किसी स्त्री की आवाज़ में। अक़बर उठता है और सीधे ही बाथरूम का दरवाज़ा खोल कर अन्दर चला जाता है। नहाती, गुनगुनाती हुई लड़की को अपनी बांहों में भर लेता है और कपड़े उतार कर वह भी फ़व्वारे के नीचे नहाने लग जाता है। दोनों पानी से खेलते हैं और एक-

दूसरे को साबुन-शैंपू लगाते हैं। नहा-धो कर दोनों एक-दूसरे को तौलिये से पोंछते हैं और गुसलख़ाने से बाहर आते हैं। तब तक नौकरानी ने बाहर मेज़ पर नाश्ता लगा दिया है। दोनों कपड़े पहनते हैं और नाश्ता करने बाहर आते हैं।

अक़बर ने मेज़ पर लड़की का हाथ पकड़ रखा है और दूसरे हाथ से वह उसको भी खिला रहा है और ख़ुद भी खा रहा है। अक़बर उसे कहता है–

"ओह, मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ, तुम नहीं जानती नहीं। दिन-रात तुम्हारे साथ रहूँ बस यही चाहता हूँ, तुम्हें देखता रहूँ, और तुम क्या सोचती हो?"

"मुझे क्या लगेगा, ओब्वियस है कि मैं भी तुम्हें चाहती हूँ और साथ रहना चाहती हूँ। पर हमारे परिवारों का क्या होगा, क्या उन्हें यह सब स्वीकार होगा?" लड़की ने जवाब दिया।

बात यह थी कि पिछले दो सालों से इस लड़की और अक़बर के बीच प्रेम सम्बन्ध था। अक़बर हैरीसन नवाबी खानदान से था, पर यह लड़की, जिसका नाम सुनयना था, रघुवंशी खानदान से थी, और उसके पिता, श्री सीतामढ़ी रघुवंशी विश्व हिन्दु सभा के अध्यक्ष थे। दो साल पहले सुराजपुरा के गवर्नर द्वारा दी गयी एक दावत में दोनों की मुलाक़ात हुई और तभी दोनों के मन में प्रेम का फूल खिला। और मान-मर्यादा का यथेष्ट पालन करते हुए इस रिश्ते का पहला पड़ाव, यानि अंतरंग सम्बन्धों की स्थापना, उसी दिन

पार किया गया जिसका वर्णन आपने ऊपर पढ़ा, प्रिय मित्रों।

अक़बर हैरीसन समीना खान और जॉर्ज हैरीसन का बेटा था। समीना खान ने अपनी उच्च शिक्षा इंग्लैंड में पूर्वी व अफ्रीकी अध्ययन विद्यालय, लन्दन विश्वविद्यालय से पूरी की थी। उस समय संसार में हिपी आन्दोलन छिड़ा हुआ था। हिपी शब्द हिप (अंग्रेज़ी का शब्द मतलब कूल्हा या चूतड़) से निकला है और इसका मतलब वे लोग जो दूसरों को अपने कूल्हे दिखा कर भाग रहे हों, यानी सोसायटी को कूल्हा दिखा कर अपनी भावनाओं के समंदर में डुबकी लगाने के लिये, उदार प्रेम, उदार समाज, शान्ति और सब के लिये समान मान वाले संसार की रचना के लिये। हमारी समीना जी भी हिपी आन्दोलन के चक्रव्यूह में आ गईं। कोई भी आ जाता, आप ही सोचिये कि आपके जीवन मे कोई रोक-टोक ना हो, आप कहीं भी जाएँ, कुछ भी करें, प्रेम करें, बच्चे पैदा करें, गाएँ, रोएँ, खेलें, जो काम पसन्द हो वही करें, किसी प्रकार की टेंशन न लें।

तो समीना श्रीमान् जॉर्ज हैरीसन के संग विश्वविद्यालय से भाग गयी। श्रीमान् जॉर्ज हैरीसन कोई काम-धाम नहीं करते थे, वे समीना के अब्बा द्वारा भेजे गये पैसे पर हिपीपना फ़रमाते थे। दोनों इंग्लैंड से पैरिस आ पहुँचे और जब तक समीना के पैसे ख़त्म न हुये दोनों ने भरपूर प्रेम का आनन्द लिया और मज़े से ज़िन्दगी बिताई। पैसे ख़त्म होने पर मुश्किलें बढ़ गईं और जॉर्ज हैरीसन ने एक दिन चरस-गांजे के अटूट नशे (नशा करना हिपीपने की एक बेजोड़ निशानी बन गया

था) में खेल-खेल में अपनी ख़ुद की जान ले ली, यह मानते हुये कि आत्मा तो अजर-अमर है और शरीर एक छाया मात्र है, और परमात्मा से मिलन ही सबसे बड़ा सुख है।

समीना को इससे बहुत बड़ा धक्का लगा और यह धक्का उसे असली दुनिया में वापस लाने के लिये काफ़ी था। लिहाज़ा वो इस अनुभव से उबरने सुराजपुरा वापिस आ गयी और साथ में अपने पेट में जॉर्ज की निशानी भी ले आई। छह महीने बाद छोटे से अक़बर को सुराजपुरा में दाइयों के हवाले कर वे अपनी शिक्षा पूरी करने इंग्लैंड पहुँच गयी और शिक्षा ख़त्म करने के बाद कभी भी वहाँ पाँव न रखने की क़सम लेते हुये सुराजपुरा में लौटी। अक़बर को कभी भी लन्दन न भेजने का निश्चय करते हुये वह उसके लालन-पालन में जुट गयी। पर भाग्य की राह तो कोई नहीं निश्चित कर सकता। किसको क्या पता आगे क्या होगा?

अक़बर के बाल भूरे थे, आँखें नीली और चमड़ी गोरी, सिर्फ़ नाक ही अपनी माँ पर गयी थी। और उससे मिल कर हैरानी इसलिये होती थी कि मानसिकता से वह पूर्णतः भारतीय था। वह सुराजपुरा में ही पला-बढ़ा, उसने पश्चिमी देशों और सभ्यता को एक भारतीय की तरह ही जाना और देखा था। अंग्रेज़ी भी वह अपनी हिन्दुस्तानी लहजे में ही बोलता था। उसकी माँ ने कभी भी उसके पिता के बारे में उसे कुछ ख़ास नहीं बताया था, सिर्फ़ यह कह रखा था कि उनकी मृत्यु किसी दुर्घटना में हुई थी, और यह कि वे अंग्रेज़ थे। अक़बर को पहले तो शिक्षा के लिये भारत के बहुत नामचीन

दून बोर्डिंग स्कूल में भेजा गया, पर उसकी माँ का मन उसके बग़ैर नहीं माना और दो सालों बाद ही उसे वापिस बुला लिया गया। फिर उसे सुराजपुरा के सेंट कोलम्बस स्कूल में डाल दिया जो शहर का जाना-माना पब्लिक स्कूल था। स्कूल के बाद अक़बर ने दिल्ली के सेंट स्टीफ़न्स कॉलेज में फिलासफी में ग्रेजुएशन किया और उसके बाद दिल्ली विश्वविद्यालय में ही फिलासफी में एम०ए० समाप्त कर के वह अब उसी विभाग में डाक्टरेट कर रहा था। आजकल वह अपनी थीसिस पर काम कर रहा था।

पिछले चार-पाँच सालों से उसने सुराजपुरा में अपनी एक ग़ैर-सरकारी संस्था खोल रखी थी जो बच्चों और महिलाओं की घरेलू, सामाजिक व आर्थिक मुश्किलों को हल करने में सहायता देती थी। यह काम उसे बहुत पसन्द था और वह सुराजपुरा तहसील के दूर-दराज़ के गाँवों में भी अपनी संस्था का काम फैला रहा था। पाठकों, आपको दुनिया वाले, भारत सरकार या मीडिया वाले जो भी कहें, सच बात तो यह है कि असली भारत गाँवों में ही बसता है और ये गाँव फ़िल्मों या टेलीविज़न वाले गाँव नहीं होते हैं, या फिर सम्पर्क माध्यमों, मीडिया में दिखाये जाने वाले नरक भी नहीं। ये गाँव उतने ही साधारण हैं जितने आप या हम। यहाँ अच्छा भी होता है बुरा भी, और एक बात बता दें, बुरे की बजाय अच्छा अधिक होता है। जो भी कोई आपको इसके विपरीत बात मनवाना चाहता हो ध्यान रखिये उसका कोई छिपा हुआ मक़सद या निजी मतलब ज़रूर होगा। गाँवों में शहरों वाला पागलपन कम

दिखता है, पर इसका यह मतलब नहीं है कि गाँवों में किसी प्रकार का पागलपन नहीं होता है। इस दुनिया में कुछ भी न पूरा सफ़ेद होता है न पूरा काला बल्कि हर चीज़ ग्रे रंग में डूबी है।

अक़बर चूँकि मुसलमान परिवार में पाला गया तो वह अपने-आप को मुसलमान ही मानता था। लालन-पालन, खाना-पीना, सोच-विचार, सब कुछ उसे इसलामी तरीक़े से ही मिला था। अपनी संस्था का नाम उसने सेवा मंज़िल रखा था। इसके अलावा अक़बर की गतिविधियों में कुछ ऐसा भी था जिसका ब्यौरा आपको बाद में मिल ही जायेगा, पहले बात हो जाये सुनयना रघुवंशी की।

पेशे से वक़ील सुनयना का बचपन भी सुराजपुरा में ही बीता। उसकी स्कूली शिक्षा सुराजपुरा के कारमेल कॉन्वेंट स्कूल में हुई। अंग्रेज़ी मीडियम का यह स्कूल अपनी शिक्षा के लिये काफ़ी प्रसिद्ध है, इसका संचालन ईसाई नन करती हैं, पर शिक्षा में ईसाई धर्म का कोई लेना-देना नहीं होता है। उसके बाद सुनयना की वक़ालत पढ़ने की इच्छा थी सो उसे बैंगलोर की नैशनल लॉ स्कूल में भेज दिया गया। वहाँ पाँच साल बिता कर वह दिल्ली की एक कम्पनी के कानून विभाग में काम कर रही थी। मेहनती लड़की थी तो अपने विभाग में नम्बर दो के स्थान पर पहुँच गयी थी। आजकल उसकी कम्पनी सुराजपुरा में एक बड़ा दफ़्तर खोलने का सोच रही थी और वह उसी प्रोजेक्ट पर काम कर रही थी।

दो साल पहले सुराजपुरा के राज्यपाल ने दिवाली के

उपलक्ष्य में एक दावत का आयोजन किया। इस भोज में शहर की जानी-मानी हस्तियों व इज़्ज़तदार लोगों को बुलाया गया। खान परिवार और रघुवंशी परिवार के भी सदस्य आये थे। सुनयना अपने पिताजी के साथ आई क्योंकि उसकी माँ की तबीयत ख़राब थी और अक़बर अपनी माँ के साथ आया। उसकी माँ को शहर में सभी लोग जानते थे। नवाबी महल होटल के प्रशासन का काम उसकी माँ ही देखती थी। और फिर अक़बर और गवर्नर के बीच भी कुछ रिश्ते बन गये थे क्योंकि सेवा मंज़िल के मामलों के चलते उन के बीच मुलाक़ात होती रहती थी। और वहीं सुनयना ने पहली बार अक़बर को देखा और उससे आकर्षित हुई। सुनयना ने अपना तब तक का जीवन एक आदर्श भारतीय हिन्दु अविवाहित लड़की की तरह बिताया था। उसके पास पैसे व समय की कमी न थी पर फिर भी उसने पश्चिमी सभ्यता या कहा जाये तो आज की ग्लोबलाइज़्ड दुनिया के विचारों को न अपनाते हुये अपना दिमाग़ चलाने पर ही हमेशा ध्यान दिया था। पार्टी में ही उसे पता चल चुका था कि अक़बर मुसलमान परिवार का था, हालाँकि उसके भूरे बाल, नीली आँखें और सफ़ेद त्वचा को देख कर वह कन्फ्यूज़ हो गयी थी। उसे धड़ाधड़ हिन्दी और इण्डियन लहजे में अंग्रेज़ी में बोलते देख उसके मन में उसे जानने की इच्छा ने जन्म लिया। अक़बर मियाँ ने तो पार्टी में किसी की ओर पलट के देखा ही नहीं, वह तो गवर्नर के साथ अपने एक प्रोजेक्ट के लिये ही बात करता रहा।

ख़ैर चांस बना और अक़बर और सुनयना के एक

साझे दोस्त ने पार्टी में ही उन दोनों को मिलवाया। सुनयना ने सेवा मंज़िल के बारे में सुन कर बहुत रुचि दिखाई और अक़बर से कहा कि वह उसकी संस्था के बारे में और भी कुछ जानना चाहेगी, और शायद वह कुछ मदद भी कर सके क्योंकि काफ़ी समय से वह कुछ सामाजिक कार्य करना चाहती थी। यह जान कर कि सुनयना एक वक़ील थी अक़बर को काफ़ी ख़ुशी हुई और उसने झट से ही सुनयना को अपने दफ़्तर आ कर मिलने के लिये बुला लिया। और पाठकों इस तरह से उनके बीच एक प्यार से भरे बुलबुले के निर्माण की शुरूआत हुई। अब आप जो भी कहें पर वो ज़माने तो लद गये जब लड़के लड़कियों के पीछे भागते थे। अब तो स्त्री ही प्रमुख है, स्त्री ही सर्वेसर्वा है। और ऐसा होना भी चाहिये। भारत में पहले तो बाहर से आए इसलामी हमलावरों के राज ने लिबरल संस्कृति का नाश किया और फिर विक्टोरियावादी अंग्रेज़ों ने जितनी उदारता बची थी उस को गले डकार लिया और वे भी छू-मन्तर हो गये। सोने के भारत में कितनी आज़ादी थी आप अनुमान नहीं लगा सकते हैं। भारत सोने की चिड़िया कहलाया जाता था, जहाँ दूध की नदियाँ आम बहती थीं। अभी भी बहती हैं, पर आलिम खान जैसे करोड़पति फ़िल्मी सितारों या खटाऊ जैसे अरबपति उद्योगपतियों के घरों में!

सुनयना और अक़बर की कथा के पहलू तो आपके सामने प्रकट होते ही रहेंगे, पर अब चलते हैं इंकलाब लालपुरी के पाले में। अक़बर हैरीसन तो अपने घर में अकेले रहते थे

पर इंकलाब को अब तक यह अवसर नहीं मिला था। सरफ़राज़ खान और अमीना बेगम के लाडले इंकलाब लालपुरी उमर में अक़बर से दो-तीन बरस छोटे थे। इंकलाब की शिक्षा भी अच्छे ढंग से हुई पर उसने कभी भी अच्छे ढंग से पढ़ाई की ही नहीं। जैसे-तैसे स्कूल समाप्त कर उसने पत्राचार के द्वारा अपनी स्नातक डिग्री प्राप्त की। सरफ़राज़ खान का ट्रकों का कारोबार था, उनके ट्रक भारत के कोने-कोने से सामान लाते व ले जाते थे। तो इंकलाब वहीं, अपने पिता के साथ, कुछ काम देख लिया करता था। उसकी प्राथमिकतायें अलग थीं, उसके लक्ष्य अलग थे। शाम का अधिकतर हिस्सा वह अपने दोस्तों-यारों के साथ बिताता। अब आप इसे बुरा माने या अच्छा पर सही कहा जाये तो उसे ज़रा नशे की लत लग गयी थी। शराब की नहीं पर चरस-गांजे की, और उसके पाँव धीरे-धीरे अन्य नशों की ओर भी जाते दिख रहे थे।

जो परिवार वृक्ष राज मलहोत्रा ने खान परिवार के वेब-पन्ने पर देखा था वह सच में अधूरा था। इंकलाब की दो बहनें भी थीं जो उस से छोटी थीं। उनमें से एक की शादी की जा चुकी थी और दूसरी के लिये लड़का देखा जा रहा था। जिसकी शादी हो चुकी थी उसका नाम लैला था और दूसरी वाली का नाम ज़ुबैदा था, और वह सबसे छोटी थी। लैला की शादी भारतीय पुलिस सेवा के अफ़सर वजाहत अली से हुई थी जो उस समय सुराजपुरा तहसील में ही नारकोटिक विभाग में सहायक पुलिस कमिश्नर के पद पर कार्यरत थे।

* * * * *

सुराजपुरा में का•का•का का नाम इधर-उधर लोग जानने लग गये थे, पर किसी ने यह नहीं सोचा था कि शायद का•का•का का रिश्ता सुराजपुरा से ही हो। राज मलहोत्रा जैसे-जैसे का•का•का की फ़ाइल पढ़ता गया उसे यह लगता गया कि का•का•का और सुराजपुरा के बीच कोई लिंक ज़रूर होगा क्योंकि काफ़ी घटनाओं में सुराजपुरा की कोई न कोई कड़ी मिल रही थी। फिर भी उसे कोई सबूत नहीं मिला था। अक़बर हैरीसन और इंकलाब के बारे में अधिक जानकारी हासिल करने के उद्देश्य से वह सुराजपुरा जाना चाहता था, साथ ही साथ वहाँ घटी कुछ घटनाओं की तहक़ीक़ात करने भी। उसके हिसाब से अक़बर और इंकलाब ही वे दो शख़्स थे जो अपने ही देश के ख़िलाफ़ कुछ ऐसे-वैसे कदम उठा सकते थे। अक़बर इसलिये क्योंकि वह अंग्रेज़ की औलाद था, तो राज के अनुसार उसका भारत से कोई लगाव न होना एक पॉसिबिलिटी हो सकती थी। दूसरी ओर इंकलाब लालपुरी, जिसका नाम ही राज को कॉमेडी लगता था। राज ज़्यादातर हिन्दु समाज में पला-बढ़ा था और उसके दोस्त-यार भी हिन्दु ही थे। इंकलाब लालपुरी जैसे नाम उसे फ़िल्मी लगते थे या फिर किसी कथा-कहानी के। और फिर भारतीय मुसलमान सोसायटी के बारे में वह कुछ ख़ास नहीं जानता था। उसने यही सोचा कि हो सकता था कि इंकलाब मुसलमान होने के कारण ही का•का•का बन कर देश के ख़िलाफ़ कोई आन्दोलन छेड़ रहा हो। राज ने सुराजपुरा की पुलिस से कुछ जानकारी मँगवाई थी और उसे पता चला था कि इंकलाब का लाइफ़ स्टाइल नशे में डूबा

हुआ है, और इस वजह से उसका शक़ और मज़बूत हो गया। राज इन लोगों से रिलेटिड किसी पुख़्ता चीज़ की खोज में सुराजपुरा जाना चाहता था।

दूसरी ओर स्वाति ने भी तय किया कि सुराजपुरा जा कर का•का•का के बारे में कुछ पता किया जाये क्योंकि उसकी शक़ की सुई भी वहीं जा कर ठहरती थी। उसे इस बात का इशारा चैनल-प्रमुख ने दिया था। उन्हें लगता था कि रघुवंशी परिवार का का•का•का के जलवों में ज़रूर कोई हाथ था, जबकि उनके पास भी कोई सॉलिड सबूत नहीं था।

हुआ यह था कि सुनयना के दूर के चाचा, विनय कोकिल रघुवंशी, जो पंचरंग दल के तहसील अध्यक्ष थे, उन्हें का•का•का द्वारा अपने कार्यकर्ताओं पर किये गये ज़ुल्मों से काफ़ी तक़लीफ़ पहुँची थी, और उन्होंने इस बारे अब तक कोई कदम नहीं उठाया था। बात यह थी कि उनका ख़ुद का बेटा, ओम रघुवंशी, उनके ख़िलाफ़ हो गया था और उसने नई पार्टी बना ली थी। यह पार्टी किसी अन्य बड़ी विरोधी पार्टी, जैसे जनाधार के साथ नहीं मिली थी और चुनाव में ज़्यादा सीटें नहीं जीतने के बावजूद अपने खर्चे धड़ल्ले से चला रही थी। लोगों को शक़ होता था कि इस पार्टी के पास पैसा कहाँ से आता था और कुछ लोग यह भी कहते थे कि कोकिल ने ही अपने पुत्र को वह पार्टी बनाने के लिये कहा था ताकि लोगों का ध्यान पंचरंग दल पर न जाये और वे अपना काम चुपके से करते जाएँ। केओटीवी चैनल-प्रमुख के पास भी यह ख़बर पहुँची थी और वह यह सोचते थे कि हो सकता है कि

देश के हिन्दू कट्टरवादी संगठनों ने ही का•का•का का निर्माण किया हो ताकि उनकी इमेज भी मीडिया व प्रेस में बदले, ताकि यह समझा जाये कि उन्हें भी परेशान किया जाता है और उनके प्रति जनता में सहानुभूति जगे।

हालाँकि यह बात राज की नज़रों में नहीं आई।

पाठकों, राज और स्वाति की नज़रों ने एक और घटना पर पूरा ध्यान नहीं दिया जिससे लगता कि शायद का•का•का और सुराजपुरा के बीच कुछ न कुछ तो था। हुआ यूँ कि जनाधार पार्टी के उभरते हुये सितारे, जवानों में प्रसिद्ध, ख़ुद भी जवान श्री नीलेश गंभीर ने यह प्रतिज्ञा की कि पार्टी को ग़रीबों के लिये ही काम करना है, और चूँकि गंभीर नयी पीढ़ी के थे तो उनके विचार, भावनायें, काम करने का अन्दाज़, सब में एक आधुनिकता का बहुत ही संभ्रान्त ठप्पा लगा रहता था। ग़रीबों के प्रति अपनी और अपनी पार्टी की तन्मयता दिखाने के लिये उसने एक नया प्रतिमान स्थापित किया, जिसे उनकी पार्टी और देश की बाकि पार्टियों के नेताओं ने भी पूर्ण रूप से स्वीकारा, यानी उसकी नकल की।

तो नीलेश गंभीर, जो इंग्लैंड की आक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी के स्नातक थे, किसी ऐसे प्रदेश के भूले-बिसरे गाँव की ओर अपने पाँव बढ़ाते थे जहाँ उनकी पार्टी की सरकार नहीं होती थी। इन भूले-बिसरे गाँवों में आप ही अनुमान लगाइये कौन रहता होगा? जी हाँ, बिना बिजली, पीने योग्य पानी, सड़कों और बेसिक सुविधाओं (जिन्हें उपलब्ध कराना सरकार की ज़िम्मेदारी होती है) वाले इन गाँवों को भूले-बिसरे गाँव ही

कहा जायेगा, और यहाँ रहते हैं भारतीय जो ग़रीबी के दुश:चक्र में फंस चुके हैं, जिन्हें इन बुरे हालातों से निकलने के लिये मदद की आवश्यकता है। यह मदद इनका हक़ है, इनकी मदद कर कोई अहसान नहीं किया जाता, इनकी मदद कर इंसानियत की जाती है। यह इंसानियत बहुत ज़रूरी है, ख़ास तौर पर इसलिये क्योंकि इनकी ग़रीबी, भुखमरी, तंगी का कारण समाज की वह क्लास है जो किसी महामूरख की तरह संसार से हमेशा सब कुछ छीनना ही चाहती , सब कुछ अपने लिये ही रखना चाहती है।

नीलेश गंभीर ऐसे किसी गाँव में जा कर ऐसा घर तलाशते थे जो किसी शेड्यूल्ड कास्ट वाले का हो, या फिर किसी अछूत दलित परिवार का हो। अब दोस्तों गांधी जी के हरिजनों के नाम पर जो-जो काण्ड स्वतंत्र भारत में होते हैं उनसे तो आज की तारीख़ में बापू जी को एकाध बार नहीं लाखों बार उपवास रखना पड़ता। स्वतंत्रता के बाद से ही भारतीय राजनीति की तीनपत्ती में हरिजन या दलित पत्ता खेला जा रहा है। दलितों को सरकारी नौकरियों, शिक्षा में रिज़रवेशन व आर्थिक सहायतायें दे कर हाई कास्ट के बराबर लाने का खेल खेला जा रहा है। और हुआ यह है कि होशियार दलित इस का फ़ायदा उठा कर कहाँ से कहाँ पहुँच गये हैं जबकि जिन दलितों को वास्तविकता में उस सहायता की ज़रूरत थी वे वहीं के वहीं पड़े रह गये हैं। यूपी में सीमा कुमार जैसे नेताओं ने इतनी दौलत और शक्ति हासिल कर ली है कि दलितों की एक शक्तिशाली एलीट क्लास तैयार हो गयी है

जिसके रंग-ढंग पुराने सत्ताधारियों और पावरफुल क्लास जैसे ही हैं। इन्हें आम जनता पर ज़ुल्म ढाने का डबल अधिकार है, इनके ख़िलाफ़ जाएँ तो पहले तो दलित विरोधी होने इलज़ाम लगता है, फिर देश-विरोधी होने का। इनके सताने पर लड़ाई करने के लिए क़ानून का सहारा मत लीजियेगा, यह भारत का क़ानून है जिसकी आँखों पर पैसों, लालच, भेदभाव और वोट-बैंक की पट्टी चढ़ी हुई है।

तो नीलेश ऐसे दलित और कमज़ोर परिवार में जाता था जिनको अभी तक अपने दलितपन का राजनैतिक और सामाजिक फ़ायदा उठाना नहीं आया होता था। (यह और बात है कि बदकिस्मती से आज के हिन्दुस्तान में ऐसे हाई कास्ट परिवार भी हैं जो उतने ही पिछड़े हुये हैं जितने कुछ दलित)। नीलेश गंभीर उनके साथ बड़े प्रेम से खाना खाता, खाना उसी परिवार के यहाँ बनता था। अगले दिन यही समाचार देश भर की प्रेस में दिखाया जाता। और खाना खाने के बाद नीलेश रात वहीं गुज़ारता था, परिवार के लोगों से बातचीत करते हुये, उनकी मुश्किलों को समझते व अपने माडर्न ढंग से उनका समाधान बताते हुये, बिल्कुल जैसे किसी किताब में होता है।

तो इसी तरह एक बार सुराजपुरा तहसील के एक पिछड़े हुये गाँव में भी नीलेश गंभीर ने आ कर एक दलित परिवार के घर में खाना खाने और रातभर ठहरने का कार्यक्रम बनाया। पार्टी के कार्यकर्ताओं ने उस परिवार का सारा विवरण नीलेश को पहले से ही पहुँचा दिया था, और परिवार को उसका कार्यक्रम बता दिया गया था। उन्हें कुछ पैसे भी दे दिये

गये क्योंकि उनके पास नीलेश को खिलाने के लिये सामान नहीं था, पर उन्हें हिदायत दी गयी कि खाना ख़ास नहीं होना चाहिये, वैसा ही होना चाहिये जैसे वे रोज़ खाते थे, परन्तु सफ़ाई से बना हुआ। देश भर के प्रेस मीडिया को नीलेश के कार्यक्रम की जानकारी दे दी गयी थी और पब्लिसिटी भी की जा चुकी थी। पर ऐन वक़्त पर, यानी जिस दोपहर को नीलेश की सवारी उस घर में रुकनी थी उसी दिन सुबह पूरा परिवार अपनी छोटी-सी झोंपड़ी से गायब हो गया। कार्यकर्ताओं में हाहाकार मच गया। खान परिवार के ही एक सदस्य उस समय सुराजपुरा जनाधार के अध्यक्ष थे, उनके सिर पर ही यह मुसीबत पड़ी। झटपट उसी गाँव के एक दूसरे परिवार से बात की गयी और उन्हें इस कार्य के लिये मनाया गया। आपा-धापी में किसी ने ध्यान नहीं दिया कि वह दलित परिवार गाँव का सामाजिक रूप से सबसे अजीब परिवार था। परिवार का मुखिया शराब का बहुत शौकीन था और उसकी बीवी दो साल पहले किसी और के साथ भाग गयी थी, हालाँकि कुछ महीनों बाद लौट आई थी। उनका कोई बच्चा नहीं था, पर गांव की एक अनाथ लड़की, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह किसी वेश्या की नाजायज़ औलाद थी, उनके साथ पल रही थी। लड़की की उमर बारह-तेरह बरस थी और वह एकदम अनपढ़ थी। नीलेश गंभीर के आने की ख़बर सुन कर उन तीनों को बहुत प्रसन्नता हुई क्योंकि इसका मतलब था कि उन्हें पैसा मिलने वाला था। उन्होंने सोचा इतना पैसा मिलेगा कि शायद सारी ज़िन्दगी उनका खाना-पीना चलता रहेगा।

चूँकि सारे अनपढ़ थे और उनके पास टेलीविज़न नहीं था (किसी पार्टी ने पिछले चुनावों में वोट के बदले लोगों को टेलीविज़न दिए थे, पर नशा करने के कारण इस परिवार के मुखिया को इसकी भनक न लग पाई और चांस हाथ से छूट गया) व इसलिये इन्हें आस-पास क्या हो रहा है इसकी बिल्कुल जानकारी नहीं थी।

ख़ैर नीलेश महामहिम की सवारी उनके घर के द्वारे आ कर रुकी। नीलेश को परिवार बदलने की बात बताई नहीं गयी थी। पहले वाला परिवार सामाजिक दृष्टि से बहुत साफ़ था, और राजनैतिक दृष्टि से प्रचार करने के लिये एकदम सही।

घर में शराब की महक से नाक सिंकोड़ते हुये नीलेश ने अपनी नाक पर रूमाल लगाया। सारा घर बिखरा पड़ा था, बर्तन, कपड़े... सब इधर-उधर पड़े थे... घर के मुखिया ने हँसते हुये नीलेश का स्वागत किया और अपनी बीवी और बेटी से मिलवाया। तीनों के चेहरों से लालच भरी हँसी टपक रही थी। उनके कपड़े बहुत ही मैले-कुचैले थे और आस-पास गन्द फैला था इसलिये नीलेश उनके फ़र्श पर बैठने से झिझक रहा था। उसने कार्यकर्ताओं से पूछा कि क्या यह वही परिवार था जहाँ उसका जाना तय किया गया था। उसकी भाव-भंगिमा देख कर कार्यकर्ताओं ने उसे झोंपड़ी से बाहर ले जा कर सब बातें बताईं। तब तक कुछ पत्रकार भी आते दिख रहे थे। नीलेश ने कार्यकर्ताओं पर बहुत गुस्सा किया और उन्हें यह पता लगाने की हिदायत दी कि पहले से तय परिवार कहाँ चला गया था। और पत्रकार आते देख नीलेश फट से झोंपड़ी

के अन्दर चला गया। जाते-जाते नीलेश ने एक कार्यकर्ता को निर्देश दिया कि जब तक वह न कहे पत्रकारों को कुछ न बतायें और फ़ोटो भी न लेने दें।

अन्दर जाते ही शराबी की बीवी ने नीलेश को एक कटोरी में मगज़ करी पेश करते हुये कहा कि यह उसने ख़ास तौर पर स्पेशल मसाले डाल कर उसके लिये बनाई थी। नीलेश ने कटोरी से नज़र हटाते हुये कहा कि वह मांस नहीं खाता था। तभी उनकी लड़की ने उसकी बांह को सहलाते हुये पूछा कि क्या वह शादी-शुदा था?

घड़ी के दस मिनट गुज़रते ही नीलेश उस झोंपड़ी से निकल आया और बाहर आते ही उसे पत्रकारों का सामना करना पड़ा। पत्रकारों के पूछने पर उसने कहा कि उसकी तबियत अचानक से ख़राब हो गयी थी इसलिये वह वहाँ से जा रहा था और बिना कुछ बोले वह झटपट अपनी लैंडरोवर में धूल के गुबार उड़ाते हुए निकल गयी। पत्रकारों ने सोचा कि उस परिवार से ही मिला जाये जिसके साथ जनाधार पार्टी के भविष्य के कर्ता-धर्ता ने दो पल बिताये थे पर उस परिवार के सदस्यों से बात करना मुश्किल ही साबित हुआ क्योंकि उन्होंने अपनी झोंपड़ी से बाहर आ कर जनाधार के कार्यकर्ताओं से लड़ाई करना शुरू कर दिया था, और परिवार का मुखिया ऊँची आवाज़ में उन्हें माँ-बहन की गालियाँ दे रहा था। उन्हें लगा कि नीलेश के जाने की वजह वे ही थे और यह उनके लिये एक बहुत बड़ा नुक्सान था।

नीलेश गंभीर के इन दौरों की प्रोग्रैमिंग बहुत ही गुप्त

रखी जाती थी। कार्यकर्ताओं को समझ नहीं आया कि आख़िर वह परिवार कहाँ ग़ायब हो गया था और वो भी इतने कम समय में। सुराजपुरा तहसील के जनाधार अध्यक्ष, जो खान परिवार के थे, पर सारा इलज़ाम आया और वे जी-जान से पता लगाने में जुट गये कि आख़िर बात क्या हुई?

इस सवाल का जवाब अध्यक्ष महोदय को मिला अपने दूर के रिश्ते के भतीजे अक़बर हैरीसन से। नीलेश गंभीर वाली घटना के बाद खान परिवार के एक समारोह में जब दोनों की मुलाक़ात हुई तब अध्यक्ष महोदय ने अक़बर को सब कुछ बताया क्योंकि उनपर बहुत प्रेशर था और उनके मुँह से सारी बात झरने की तरह बह गयी। संयोग की बात देखिये कि अक़बर को उस गायब हुए परिवार के बारे में पता था। उसने बताया कि किसी अंजाने ने फ़ोन करके अक़बर की सेवा मंज़िल में ख़बर भिजवाई थी कि उस परिवार के मुखिया को एड्स था, तो एहतियात के लिए अक़बर ने सारी फ़ैमिली को ही अस्पताल में दाखिल करवा दिया और एक अलग वार्ड में उनके टेस्ट वगैरह करवाए। और हैरानी की बात यह थी कि टेस्टों में बिल्कुल कुछ नहीं निकला!

सुराजपुरा जनाधार अध्यक्ष और अक़बर के दूर के रिश्ते के चाचा ने यह सुन कर सोचा कि हो न हो यह काण्ड ज़रूर ओपोज़िशन वालों ने ही किया था। और अब उन्हें जनाधार हाई कमान, नीलेश गंभीर की माता श्री मारिया गंभीर के लिए इस घटना का सही स्पष्टीकरण भी मिल गया था।

अब राज और स्वाति की फ़ाइलों में यह घटना इसलिये

पहुँची क्योंकि जनाधार हाई कमान ने बात की जड़ का पता लगाने के लिए गुप्त रूप से यह केस सी०बी०आई० को सौंप दिया था, और कोई ख़ास सुराग न मिलने से वहाँ से यह का•का•का फ़ाइल में चढ़ा दिया गया, जबकि इस केस में कहीं भी का•का•का का नाम नहीं उभरा था।

नीलेश गंभीर की बात की जा रही है तो उसके परिवार की कुछ बातें भी सुनिए। पाठकों, हमारे हिन्दुस्तान में हिन्दी की छोटी-मोटी अख़बारों में अधिक सच्चाई भरी होती है बजाय अंग्रेज़ी अख़बारों के, जो भारत की असली नब्ज़ को पहचानने में अक्सर गलती करते हैं। पर ख़ुशी की बात यह है कि वे धीरे-धीरे सही राह पर आ रहे हैं। और इन्हीं कुछ सही अख़बारों में और हमारे देश के गली-कूचों में बूढ़े, रिटायर्ड लोगों की हिस्ट्री की मोटी-मोटी किताबों को भी मात देने वाली कहानियों और ज़ुबानियों में नीलेश की दादी, सुलभा गंभीर, जो भारत की पहली महिला प्रधान मंत्री थीं, को एक और ख़िताब से भी नवाज़ा जाता है, और वो है भारत की पहली करप्ट पालिटिशियन का ख़िताब।

तो हुआ यूँ कि सुलभा गंभीर के सुपुत्र श्री सुमित गंभीर की एक हवाई जहाज़ के एक्सीडेंट में अकस्मात मृत्यु हुई। अब बड़े-बूढ़े कहते हैं कि अपने ख़ुद के बेटे की चिता पर सुलभा गंभीर उसकी अंगूठी ढूँढती रहीं क्योंकि उस अँगूठी पर उसके स्विट्ज़रलैंड के उस बैंक खाते का नम्बर लिखा हुआ था जिसमें भारत से चुराये करोड़ों रुपये जमा थे, और अपनी बहू से उनकी इस अँगूठी की मिल्कियत पर लड़ाई भी

हुई। ख़ैर बोलने वाले तो बहुत कुछ बोलते हैं, उनका काम ही बोलना है।

सुलभा गंभीर का मर्डर ख़ुद उनके सरदार बॉडीगार्ड ने किया क्योंकि सुलभा ने अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में टेररिस्टों को मार गिराने के लिए आर्मी घुसवाई। सारे देश को इस मर्डर से करारा इमोशनल दुख लगा। यही दुख सुलभा के बेटे, पाइलट जसलोक गंभीर की राजनैतिक विजय का कारण बना। अगले इलेक्शनों में जनता ने उसे ही पार्टी और देश का मुखिया बना दिया। क्या कभी झारखण्ड, कश्मीर, नार्थईस्ट जैसे इलाकों में सालाना हज़ारों की तादाद में मरने वाले मासूम अंजानों के लिए भी भारतीय इतना इमोशनल दुख महसूस करते हैं? गरीबी, भुखमरी, बीमारी से रोज़ सैकड़ों मरने वाले भारतीओं के लिए हम इतना इमोशनल दुख महसूस करते हैं जितना सुलभा के लिए किया? क्या जनता की बजाय जनता द्वारा चुने गये लीडर ज़्यादा इम्पोर्टेन्ट हैं?

जसलोक को इंग्लैंड के केंब्रिज विश्विद्यालय में पढ़ने भेजा गया था। वहाँ इन्हें एक इटेलियन लड़की मारिया से प्यार हुआ जो वहाँ अंग्रेज़ी बोलने का कोर्स करने आई थी। किस्मत का खेल देखिए कि यही कम पढ़ी-लिखी लड़की अब जनाधार पार्टी और हमारे देश की प्रधान बन चुकी है। उसके पति को श्रीलंकाई टेररिस्टों ने भरी सभा में बम से उड़ाया, और हम हिन्दुस्तानियों को फिर से एक करारा इमोशनल झटका लगा, नतीजतन हमने एक फिरंगी को अपना लीडर बना लिया। हम कब तक अपना दिमाग बन्द रखेंगे? कब तक

इमोशन के नाम पर करप्ट, ग़ैर-क़ाबिल, जनता की फ़िक्र न करने वालों को वोट डालते रहेंगे?

दोस्तों मारिया गंभीर ने कुछ समय पहले भारत की ग़रीबी कम करने के लिए सरकारी खर्च कम करने का एक प्रोग्रैम बनाया। भारत में संसद सदस्यों को भगवान की तरह पूजा जाता है। ये पावर में तो आम आदमी के लिये काम करने के लिए आते हैं पर अगर यही आदमी उन्हें भगवान या आका न माने, अगर उन्हें तवज्जो न दे तो आम आदमी का कोई काम नहीं बनता है। इन्हीं संसद सदस्यों को हवाई जहाज़ में मुफ़्त सफ़र करने की इजाज़त है, और वो भी इकानमी क्लास में नहीं, बिज़नेस या फर्स्ट क्लास में जिनके किराये दोगुने और तिगुने होते हैं। मारिया ने अपनी पार्टी वालों के लिये एक आदेश जारी किया कि पार्टी का कोई भी संसद सदस्य अगर हवाई जहाज़ से सफ़र करे तो इकानमी, यानी सबसे सस्ती क्लास से ही करे जिससे कि सरकार के खर्चे में कमी हो और ग़रीबों की सेवा के लिये और पैसा उपलब्ध हो। मारिया गंभीर ख़ुद जनाधार पार्टी की अध्यक्षा थीं और संसद में उन्हें कैबिनेट मंत्री माना जाता था। साथ ही साथ उनके जीवन को बहुत बड़ा ख़तरा था इसलिये हमेशा दस-पन्द्रह सुरक्षा गार्ड उनको घेर कर चलते थे। मारिया ने अपने से ही शुरुआत कर इस पहल का उद्घाटन किया। उन्हें मुम्बई किसी समारोह में पहुँचना था तो उनके लिये हवाई जहाज़ में इकानमी की टिकट खरीदी गयी। अब इकानमी यानी कैटल क्लास में तो भारत की अधिकतर जनता यात्रा करती है, उन्हें कैसे

मारिया गंभीर की उपस्थिति से परेशानी में डाला जाये? यह सोच कर मारिया के चेले-चमचे, जो हमेशा उनके साथ सफ़र करते थे, और बाकि बचे सुरक्षा गार्ड (बाकि बचे मतलब जो उनके साथ इकानमी में गये उनके अलावा) के लिये एक और सेना जहाज़ ले लिया गया, यानी कि खर्चा कम होने की बजाय ज़्यादा हो गया! अगर मारिया को यह ज़िद नहीं होती तो वह भी उसी सेना के जहाज़ से जाती, पर नहीं उन्हें तो अपना चेहरा इकानमी श्रेणी में दिखाना था, ग़रीबों के लिये किये गये इस बलिदान के कदम को देश की पब्लिक को दिखाना था। इसलिये उनके लिये इकानमी में जगह का बन्दोबस्त किया गया, उनके साथ दस-पन्द्रह लोगों का भी जो उनके इर्द-गिर्द सुरक्षा घेरा बना कर बैठे रहे। इन इन्तज़ामों का पैसा तो ज़ाहिर है सरकारी ख़ाते से ही आया।

जब वह तीसरी बार यही काम करने के लिये उतारू थीं तब हुआ यह कि चलने से पहले पता चला कि किसी ने उनके जहाज़ के टायरों को पंक्चर कर दिया था और चूँकि टायर बदली करने में समय लगने वाला था, जो उनके पास नहीं था (क्योंकि उन्हें मुम्बई में जनाधार पार्टी के ओबेरोय होटल में आयोजित वार्षिक अधिवेशन में जाना था), वह सेना के जहाज़ से ही अपनी मंज़िल के लिये रवाना हो गईं। जाते-जाते किसी ने उनको पूरी तरह से सुरक्षा जांच कर एक लिफ़ाफ़ा दिया जो पंक्चर हुये टायर से चिपका हुआ मिला था और जिसपर उनका नाम लिखा हुआ था। सेना के जहाज़ में आराम से बैठे हुये उन्होंने यह लिफ़ाफ़ा खोला तो उसमे एक

काग़ज़ पर बड़े-बड़े अक्षरों में यह लिखा हुआ पाया–

शर्म करो बेशर्मों शर्म करो... ग़रीब तुम हो वे नहीं जिनके लिये तुम यह दिखावा करते हो... अपने होश संभालो!

मारिया की हिन्दी कमज़ोर थी, उन्हें यह किसी मूरख का काम लगा, या फिर शायद जो लिखा हुआ था उसे वह समझना ही नहीं चाहती थीं। उन्होंने अपनी आँख काग़ज़ पर आख़िर में दौड़ाई तो वहाँ उसे सुनहरी अक्षरों का•का•का लिखा हुआ मिला, साथ ही का•का•का का पूरा अर्थ, यानी **क़ातिलों का क़ातिल**। काग़ज़ को लिफ़ाफ़े में डाल कर उन्होंने इस बारे में सी०बी०आई० से बात करने का निश्चय किया और अपने सेक्रेटरी को अगले हफ़्ते सी०बी०आई० प्रमुख को आ कर उनसे मिलने का आदेश देने के लिए कहा।

हिन्दुस्तान में बजती तूती
मर्द शहंशाह, औरत जूती

कुछ और समय बीता और राज व स्वाति अपने-अपने तरीके से का•का•का पर अनुसंधान करते हुये सुराजपुरा पहुँचे। राज तो सरकारी गेस्ट हाउस में ठहरा और स्वाति, जो किसी ऐसी जगह नहीं ठहरना चाहती थी जहाँ बहुत लोगों का आना-जाना हो, उसने पुराने सुराजपुरा में एक छोटे से होटल में कमरा ले लिया। होटल छोटा था पर इतना भी सस्ता नहीं था। अब आप तो जानते ही हैं कि सस्ते होटलों में क्या-क्या काण्ड होते हैं, और वह भी अगर कोई अकेली औरत वहाँ ठहरे तो। दुर्भाग्यवश आज के भारत में औरतों की इज़्ज़त करना मर्दांगी के ख़िलाफ़ समझा जाता है। राजधानी दिल्ली को तो रेपों का शहर कहा जाता है और रोज़ कहीं न कहीं कोई बेचारी अकेली औरत इन नामर्द भारतीयों का शिकार बनती है। इन सब बातों से स्वाति वाक़िफ़ थी इसलिये वह एक ऐसे होटल में गयी जो थोड़ा महँगा भले ही था पर जहाँ सिक्योरटी अच्छा इन्तज़ाम था। वह होटल खान परिवार के

होटल बिज़नेस का एक हिस्सा था और उसका काफ़ी नाम था। बहुत से सैलानी, जो चार-सितारे या पाँच-सितारे वाले होटलों के भारी-भरकम किराये देने की हालत में नहीं होते थे वहाँ ठहरते थे। स्वाति ने अपना केओटीवी वाला पहचान पत्र होटल के रिसेप्शन में ज़रूर दिखाया और यह रजिस्टर में लिखा भी कि वह केओटीवी से थी क्योंकि प्रेस वालों का डर कहीं न कहीं आजकल भारत में हरेक बुरा करने वाले को होता है, हमारी निकम्मी और जनता को प्रोटेक्शन देने की बजाय डराने वाली पुलिस को भी!

बात अगर भारतीय औरतों की चल ही गयी है तो इससे का•का•का का जुड़ा कारनामा भी बताते चलें। चलें दक्षिण दिल्ली की तरफ़, महरौली के इलाके में। यह बात का•का•का के कारनामों के आरंभ से बहुत पहले की बात है। भारत के एक पूर्व राष्ट्रपति का एक रिश्तेदार, हरियाणा प्रदेश के महत्त्वपूर्ण राजनीतिज्ञों में से एक का बेटा और एक धनी खानदान का वारिस कनु लांबा महरौली स्थित एक बार में अपने दोस्तों के साथ पहुँचा। बार-रेस्टोरेंट दिल्ली की ही एक हाई क्लास फैशनेबल डिज़ाइनर नीना दसनानी का था। कनु एक प्रतीक था उस सब का जो उसे अपने जीवन में आसानी से मिला था, और उस सब का जिसका उसके लिये कोई मोल नहीं था, वह एक प्रतीक था अपने परिवार के मूल्यों का, अपने देश व समाज के विचारों का। रात के दो बजे उसकी शराब की माँग नकार दिये जाने पर कनु ने उस बार गर्ल की कनपटी पर जेब से पिस्तौल निकाल कर बिना आव या ताव

देखे गोली दाग दी जो एक मॉडल थी और उस ख़ास रात वहाँ लोगों को, ग्राहकों को शराब पेश करने के लिये बुलवाई गयी थी, ताकि लोग उसकी ख़ूबसूरती और ग्लैमर को देख कर खिंचे चले आएँ और शराब ज़्यादा बिके, नीना दसनानी का बैंक में रखा पैसा वृद्धि की राह पकड़ता ही रहे, बढ़ता ही रहे।

चूँकि कनु लांबा का छिपना इमपॉसिबल था, उसके चालाक वक़ीलों ने उसे अपने-आप को क़ानून को सौंपने की सलाह दी। और फिर क़ानून से खेलना तो भारत के वक़ीलों के लिए आम बात है। यह खेल लगभग दस साल तक चला पर इस सेलिब्रिटी केस में पढ़ी-लिखी पब्लिक का काफ़ी प्रेशर पड़ा और आखिरकार कनु लांबा को ताउम्र जेल हो गयी। पर कुछ समय पहले जब वह दिल्ली की तिहाड़ जेल में अपनी सज़ा काट रहा था तब एक अजीब घटना हुई। उसे सारी सुविधायें प्राप्त थीं क्योंकि वह आम कैदी नहीं था, और फिर पैसे की तो उसके परिवार के पास कमी नहीं थी। उसकी कोठरी में टेलीविज़न व डीवीडी प्लेयर थे और उसे टेलीफ़ोन कॉल करने की भी इजाज़त थी। वर्जिश के लिये उसे अलग से जिम में ले जाया जाता था। उसकी कोठरी की चाबी जेल अध्यक्ष के कमरे में रहती थी।

तो एक रात हुआ यूँ कि हरियाणा का एक जाट पुलिसवाला, जिसकी उमर साठ साल थी और जो अगले दिन अपनी तिहाड़ जेल में पूरे जीवन की सेवा से रिटायर होने वाला था अपनी आख़री रात को चुपके से जेल अध्यक्ष के कमरे से चाबी चुरा कर कनु की कोठरी में घुस आया। रात

के तीन बजे थे और कनु सो रहा था। पुलिसवाले ने उसके मुँह में कपड़ा घुसाया और उसके हाथ-पैर बांध दिये। अब तक कनु की नींद खुल गयी थी। पुलिसवाले ने उसके कपड़े उतारे और फिर पाठकों उसके साथ वह किया गया जो सिर्फ़ एक होमोसेक्शुअल ही कर सकता है। जी हाँ, कनु का बहुत दिल लगा कर बलात्कार किया गया। कनु लांबा सारी रात शर्म से लाल-लाल होता रहा और अगली सुबह उसने किसी को यह बात नहीं बताई। पुलिसवाले ने उसके पास एक लिफ़ाफ़ा छोड़ा था जिसे कनु ने सुबह खोल कर पढ़ा। काग़ज़ में यह लिखा था–

जैसा करोगे वैसा भरोगे... याद रखना! यह तो सिर्फ़ झांकी है, आगे-आगे देखना क्या गुल खिलेंगे!

और नीचे सुनहरी अक्षरों में **का•का•का** लिखा हुआ था और उसका अर्थ यानी **क़ातिलों का क़ातिल** भी। उस सुबह वह पुलिसवाला भी बहुत ख़ुश नज़र आ रहा था। वह पूरी ज़िन्दगी यह छिपाता रहा था कि वह होमो था, भारतीय समाज अभी भी इन रिश्तों को भली नज़र से नहीं देखता है, काम सारे होते हैं पर ये किस्से पब्लिक में उजागर नहीं होते। अपनी सेवा के आख़िरी दिनों में वह कर पाया जो वह हमेशा से करना चाहता था यानी किसी कैदी से अपने प्रेम का इज़हार। साथ ही साथ उसके बैंक खाते में सरकारी रकम के अलावा तीन लाख रुपये और भी प्रकट हो गये थे जो कनु लांबा के परिवार की चीनी मिलों के बैक-खातों से किसी ने

बहुत सफ़ाई से निकाल कर उसके ख़ाते में डाल दिये थे और डालने वाले का नाम था का•का•का। जय इण्टरनेट बाबा की!

तो मित्रों बात वापिस राज और स्वाति की ओर लौटाते हैं। स्वाति ने राज को चैनल-प्रमुख की तरफ़ से आश्वासन दिलवा दिया था कि अगर उन्हें का•का•का की कोई ख़बर हाथ लगती है तो वे उसे सरकार, यानी इस केस में राज मलहोत्रा को बिना बताये और बिना मंज़ूरी लिये नहीं प्रकाशित करेंगे, टीवी, अपने वेबपेज या प्रेस में भी नहीं। इस आश्वासन से राज स्वाति की ओर से सन्तुष्ट हो गया था और दोनों के बीच वह हल्की-सी टेंशन ख़त्म हो गयी थी। जैसे-जैसे वे और मिले राज के दिल में स्वाति के प्रति आकर्षण परवान चढ़ने लगा। सुराजपुरा जाने से पहले वे तीन बार मिले और चाय-कॉफी पर का•का•का से सम्बन्धित अपनी-अपनी खोज के बारे में बातचीत की, हालाँकि अधिक स्वाति ही बोली क्योंकि अफ़सर होने के नाते राज को अपने केस के बारे उतना ही बताने का अधिकार था जितना वह चाहता था। राज ने अपने बॉस को बता दिया था कि केओटीवी का•का•का के पीछे लग चुका था, और हालाँकि उसे शक था कि मेहता साहब ने ही ज़रूर स्वाति के बॉस को इस बारे में बताया होगा वह उन्हें कुछ नहीं बोला और सिर्फ़ क्लियर किया कि वह चाहता था कि केओटीवी की स्वाति देशमुख उसकी देख-रेख में ही सारी खोज करे और अपनी हदें पार न करे। राज को क़ानूनी रूप से यह अधिकार दे दिया गया। इस तरह से राज स्वाति पर पूरी नज़र रखे हुये था और अपने मन में सोचता

था कि इससे स्वाति की भलाई ही होगी। वह उसे नुक्सान पहुँचता नहीं देखना चाहता था। उसे लगता था कि जवान स्वाति दुनिया के बारे में कुछ ख़ास नहीं जानती थी और का•का•का जैसे षड्यंत्रकारियों से ऐसी भोली-भाली लड़की का बचाव बहुत ज़रूरी था। बाहरी तौर से वह यह दिखाता था कि का•का•का केस में आवश्यक था कि क़ानून के हाथ में ही सब कुछ रहे और इस बहुत नाज़ुक मामले में वही प्रेस की लगाम भी संभाले रखे।

दूसरी ओर स्वाति के लिए राज धीरे-धीरे दोस्त बनता जा रहा था। और कुछ नहीं। यह सही है कि उसे लगता था जैसे कि राज आलिम खान की किसी फ़िल्म के हीरो की तरह ही था और उसे राज को सीरियस देख कर उसपर मासूम हँसी आती थी। पर जिन नज़रों से राज ने उसे देखना शुरू कर दिया था वे नज़रें न तो वह पहचान पाई थी और न ही उसके मन में उसके लिये ऐसी कोई भावना पैदा हुई थी, कम से कम कॉन्शियसली तो नहीं। उसे अच्छा लगता था कि राज उसका ख़्याल रखना चाहता था और अपने तरीके से रख भी रहा था।

* * *

स्वाति अपने काम का पल-पल मज़े में बिता रही थी। अब तक उसे का•का•का के बारे में कुछ पता नहीं चला था पर यह खोज उसे काफ़ी माइण्डब्लोइंग लग रही थी। सुराजपुरा के होटल में एक दिन आराम कर उसने सबसे पहले अक़बर हैरीसन को फ़ोन किया और उससे मिलने का समय माँगा।

अक़बर ने उसे अपने दफ़्तर में अगले दिन बारह बजे मिलने का समय दे दिया। स्वाति होटल से बाहर निकली ही थी कि तभी उसके मोबाइल पर राज का फ़ोन आया। स्वाति ने उसे बताया कि वो ठीक से सुराजपुरा पहुँच गयी थी पर अभी उसने अपना काम शुरू नहीं किया था। राज ने उसे बताया कि वह भी सुराजपुरा पहुँच चुका था और वह स्वाति को दोपहर के खाने के लिये अपने सरकारी गेस्ट हाउस में इनवाइट करना चाहता था। स्वाति मान गयी और मिलने का समय तय कर के उसने पुराने सुराजपुरा की गलियों में घूमने का निश्चय किया क्योंकि राज के गेस्ट हाउस में जाने के लिये अभी कुछ समय बाकी था। सुराजपुरा शहर के पुराने हिस्से में एक बहुत पुरानी मशहूर मस्जिद थी जो बहुत विशाल थी। मस्जिद को जाने वाली गलियाँ तंग थीं और पुरानी हवेलियों के सुन्दर दरवाज़े गलियों की रौनक बढ़ा रहे थे। स्वाति अपने डिजिटल निकोन कैमरे से फ़ोटो खींचते-खींचते आगे बढ़ी। मस्जिद के दरवाज़े बहुत-सी गलियों में खुलते थे। ऐसे ही एक दरवाज़े से जब उसने मस्जिद के अन्दर झांका तो वहाँ की भव्यता देख कर वह बहुत इम्प्रेस हो गयी और मुँह खोले देखती ही रही। दरवाज़े पर एक मोटा-सा चौकीदार खड़ा था और स्वाति से नज़र मिलते ही उसने ऊपर लगे फट्टे पर इशारा किया जिसपर लिखा था कि मस्जिद में ग़ैर-मुसलमानों का जाना अलाउड नहीं था और औरतों को सारा जिस्म ढक कर ही अन्दर जाने की इजाज़त थी, जहाँ स्वाति ने तो एक टी-शर्ट और जीन्स पहनी हुई थी।

स्वाति ने सोचा कि शायद अपना प्रेस आइडी कार्ड दिखाने पर उसे अन्दर जाने दिया जाये, पर नहीं, चौकीदार ने कार्ड को देखा और कहा कि वह पढ़ना नहीं जानता था और पूछने लगा कि वैसे भी प्रेस वालों का मस्जिद में क्या काम हो सकता है? स्वाति ने मन-ही-मन सोचा कि राज की मदद से वह ज़रूर इस मस्जिद को देख पायेगी। वह आगे की तरफ़ निकल गयी और गलियों में से गलियाँ निकलती रहीं और वह मस्जिद के एक और दरवाज़े के सामने आ पहुँची। वहाँ भी चौकीदार खड़ा था और उपर लगे एक फट्टे पर ग़ैर-मुसलमानों को अन्दर न जाने का आदेश लिखा था। पर वहाँ चौकीदार ने उसे दरवाज़े की चौखट के पास खड़े रह कर फ़ोटो खींचने की इजाज़त दे दी। स्वाति ने उसे शुक्रिया कहा और वहाँ खड़ी हो कर अन्दर वाले लम्बे-चौड़े बरामदे के खम्बों पर हुए काम की तस्वीर लेने लगी। कैमरे का ज़ूम इस्तेमाल करते हुए वह अन्दर की तस्वीर और ज़्यादा नज़दीकी से ले सकती थी और जब वह यह कर रही थी तब उसने अन्दर एक दीवार पर का•का•का लिखा देखा! वह हैरान हो गयी। वह सोच कर खिलखिला उठी कि वह का•का•का की इस क़दर दीवानी हो चुकी है कि जहाँ सोचा भी नहीं जा सकता ऐसी जगहों पर उसे का•का•का के ख़याल आते हैं! पर नहीं, कैमरे को और ज़्यादा ज़ूम करने पर उसने देखा कि जिन लोगों ने अपने क़रीबी जनों के नाम पर मस्जिद को पैसा वगैरह दिया उन लोगों के नामों वाले मार्बल के पत्थर उस दीवार पर लगे हुए थे और उनमें से ही एक पत्थर पर का•का•का लिखा था। पर

उसे सिर्फ़ यही शब्द ही नज़र आया क्योंकि बाकि जो भी लिखा था वह छोटे अक्षरों में था और शायद उर्दू में था जो उसे पढ़नी नहीं आती थी। तभी चौकीदार ने उसे हिदायत देते हुए कहा कि वह ज़रा हटे क्योंकि वह जगह घेर रही थी और कोई वीआईपी आदमी एक हुजूम लिये अन्दर आ रहा था। स्वाति को पीछे हटना पड़ा और उसने काले चश्मों वाले एक इंसान को अन्दर जाते देखा। चौकीदार ने उस आदमी के हाथ चूमे और वह अपने छोटे काफ़िले के साथ अन्दर दाखिल हुआ। बाद में चौकीदार से पूछने पर पता चला कि वह मस्जिद का इमाम था जो देश भर के मुसलमानों का नेता भी माना जाता था क्योंकि उसकी आवाज़ हमेशा मुसलमानों के हित में निकलती थी। वह जमात-ए-हिन्द का अध्यक्ष भी था और मुसलिमों के बहुत से राजनैतिक और धार्मिक मसले सुलझाना इस जमात का काम था। नाम पूछने पर पता चला कि वह मुल्ला ख़ुमारी का पुत्र था, अबदुल्ला ख़ुमारी। ख़ुमारी शब्द से स्वाति को का•का•का का ख़ुमारी काण्ड याद आ गया और उसने झट से अपनी वर्क डायरी निकाल कर उसमें यह बात लिख डाली।

राज से मिलने का समय हो गया था इसलिये वह गलियों से निकल कर चौक पर पहुँची और वहाँ से राज के गेस्ट हाउस का पता बता कर एक ऑटो रिक्शा ले लिया। जैसे ही ऑटो चलने लगा एक आवारा दिखने वाला आदमी सामने आकर खड़ा हो गया और उसने ऑटो रुकवा दिया। उस आदमी ने जिस्म पर सिर्फ़ एक लुंगी पहन रखी थी और उसके

बाल व दाढ़ी बहुत लम्बे थे। आँखों में उसने एक काले लेंस वाला गाँधी चश्मा चढ़ाया हुआ था। ऑटो वाले ने हैंड ब्रेक खींची और बाहर निकल कर उससे कुछ बात की। स्वाति ने देखा कि ऑटो वाले ने उसे दस रुपये का एक नोट पकड़ाया। नोट मिलने के बाद आवारा आदमी स्वाति की ओर देखने लगा और एकदम अजीब तरीके से हँस पड़ा। फिर वह स्वाति के नज़दीक आया और मुँह पर हाथ रखे बोला :

"द सिचुएशन ऑफ़ दिस कंट्री इज़ वैरी बैड, प्लीज़ टेक केयर ऑफ़ युअर निअर्स एण्ड डियर्स।"

स्वाति को उसके शरीर में से एक महँगे कोलोन की हल्की-सी महक आई और वो कुछ पलों के लिए भ्रमित हो गई। ऑटो वाले ने आवारा को जाने के लिए कहा और उसने ख़ुद भी अपनी गाड़ी दौड़ा ली। पीछे से आवारा की आवाज़ सुनाई दी :

"बाय-बाय स्वीटहार्ट!"

गेस्ट हाउस पुराने शहर से दूर बसे एक नये इलाके में था। यह इलाका सुराजपुरा युनिवर्सिटी के पास पड़ता था। रिसेप्शन पर पहुँच कर स्वाति ने राज के लिए पूछा और उसे बताया गया कि वह उसका इन्तज़ार रेस्टोरेंट में कर रहा था, जो कि गेस्ट हाउस के दूसरे छोर पर था। वह मन-ही-मन सोच रही थी कि राज को वह सब बतायेगी जो आज हुआ था। पर राज का चेहरा देखते ही उसने अपने जोश को क़ाबू में कर लिया क्योंकि हमेशा की तरह राज सीरियस भाव-

भंगिमा अपनाये हुए था और एक मेज़ पर बैठा अख़बार पढ़ रहा था। उसे अमेलिया के साथ और उन दिनों की याद आ रही थी जब वे पैरिस से बाहर घूमने जाते थे और किसी होटल में सुबह-सुबह वह अमेलिया का रेस्टोरेंट में नाश्ते पर इन्तज़ार कर रहा होता था।

स्वाति ने राज को हेलो किया और राज ने उसे बैठने के लिए बोला। राज स्वाति को दिखाना चाहता था कि उसका आना राज के लिए एक साधारण-सी बात थी और वह इस तरह से अपनी भावनाओं को एक किनारे पर धर देना चाहता था। पर फिर भी कहीं न कहीं उसके बर्ताव में ऐसी कोई बात थी जो स्वाति को अहसास करवाती थी कि वह राज के साथ अनौपचारिक रूप से, एक दोस्त की तरह बर्ताव कर सकती है। राज चाहता था कि स्वाति के बैठने के बाद भी वह थोड़ी देर अख़बार पढ़ता रहे पर उससे रहा न गया और उसने स्वाति से उसका हाल पूछा और दोनों के बीच बातचीत शुरू हो गयी।

खाना खाते-खाते स्वाति ने राज को सब कुछ बताया। राज ने उससे यह भी पूछा कि क्या वह अपने होटल में ठीक थी, कि क्या उसे वहाँ कोई परेशानी तो नहीं थी, और स्वाति ने उसे कहा कि वह बहुत ख़ुश थी क्योंकि वह पूरी तरह से आज़ाद महसूस कर रही थी, और पहले ही दिन उसे का•का•का के निशान मिल गये थे। राज ने उसे अपना ध्यान रखने को कहा क्योंकि उसके अनुसार एक अकेली लड़की का एक होटल में अकेले रहना ख़तरनाक था। राज के मन में स्वाति

को अपने गेस्ट हाउस में ही एक कमरा दिलवाने का ख़्याल कुलबुला रहा था पर वह स्वाति को यह ऑफ़र बाद में देना चाहता था, जब उसकी आवाज़ की इमोशनल थरथराहट कम हो। दोनों ने खाने के लिए थालियाँ मँगवाईं। राज मलहोत्रा ने तो शुद्ध शाकाहारी थाली चाही पर स्वाति ने अपने लिए नानवेज थाली मँगवाई। वेटर ने उन्हें बताया कि सुराजपुरा ख़ानदानी मुर्ग का नाम पूरे भारत में मशहूर है, लोग चटकारे ले-ले कर यह मुर्ग खाते हैं और उनके रेस्टोरेंट की नानवेज थाली में यही मुर्ग दिया जाता है। वेटर ने बताया की सुराजपुरिया मटन भी देश-विदेश में बहुत मशहूर है, पर अगर उन्हें यह खाना हो तो अलग से मँगवाना पड़ेगा। स्वाति ने बताया कि उसने मुम्बई में सुराजपुरिया मटन पहले खाया हुआ था। वेटर बहुत ख़ुशमिज़ाज था और वह गलती से स्वाति और राज को प्रेमी समझ बैठा था। यह उसके बात करने के अन्दाज़ से पता चल रहा था।

स्वाति ने राज को यह भी बताया कि वह अगले दिन अक़बर हैरीसन से मिलने वाली थी। राज ने अपनी इन्वेस्टीगेशन से सम्बन्धित कोई भी बात स्वाति को नहीं बताई। राज ने मस्जिद के पत्थर पर का•का•का का नाम लिखे जाने वाले मामले में तहक़ीक़ात करने का निश्चय किया तो स्वाति ने उससे रिक्वेस्ट किया कि वह उसे भी मस्जिद में साथ ले चले क्योंकि का•का•का वाले पत्थर के अलावा उसे मस्जिद का अन्दरूनी भाग भी देखना था और मुस्लमान न होने की वजह से उसे वहाँ जाने की इजाज़त नहीं थी। फिर राज ने स्वाति से

कहा कि अगर उसे कहीं भी कोई भी मुश्किल हो तो वह उसे तुरन्त बताये। राज ने स्वाति को यह भी कहा कि उसे यह अच्छा नहीं लग रहा था कि वह अकेली होटल में रहे, और उसने पूछा कि क्या स्वाति के माँ-बाबूजी को यह बात ठीक लगती थी या नहीं? स्वाति ने मुस्कुराते हुए कहा कि उसके मॉम-डैड ने उसे अकेले ही अपनी ज़िन्दगी चलाना सिखाया है, पूरे तरीके से फ़्री हो कर, इसलिए वे चाहते थे कि स्वाति ख़ुद ही अपने काम करे, और फिर अगर कोई भी मुश्किल आती हो तो वे हमेशा उसके साथ थे ही।

खाना ख़त्म होने पर राज ने स्वाति की कुर्सी खिसकाई ताकि वह बाहर निकल सके। यह उसने यूरोप में सीखा था, और उसे बहुत अच्छा लगता था लड़कियों के लिए यह करना। एक-दूसरे के सम्पर्क में रहने का बोल कर दोनों ने अपनी राह पकड़ी। वेटर को राज ने खाने का बिल उसके खाते में डालने को कह दिया।

स्वाति वापिस पुराने सुराजपुरा की गलियों में लौट गयी और राज ने इंकलाब लालपुरी को फ़ोन मिला कर उससे अगले दिन मिलने का तय किया। उसका नम्बर उसे नवाब ख़ानदान के वेब-पन्ने से मिला था। फिर उसने सुराजपुरा पुलिस विभाग में फ़ोन किया और वहाँ अधिकारियों से बात की। उसे बताया गया कि उसके आने के बारे में उन्हें पहले से ही जानकारी मिल गयी थी और वे उसे किसी भी प्रकार का सहयोग देने के लिए तैयार थे। राज ने कहा कि वह पुलिस मुख्यालय आ कर का•का•का की फ़ाइल देखना

चाहता था।

राज ऑटो पकड़ कर गेस्ट हाउस से पुलिस मुख्यालय पहुँचा। पुलिस हेड ऑफ़िस शहर के पुराने भाग में था और अंग्रेज़ों के ज़माने से ही उसी इमारत में स्थापित था। ऑटो को मुख्य दरवाज़े के अन्दर नहीं जाने दिया गया और उसका किराया चुका कर राज पैदल ही भवन में दाखिल हुआ। सी०बी०आई० के अफ़सर वर्दी नहीं पहनते हैं, ख़ास तौर पर वे जो विशेष मिशन पर होते हैं। भवन के अन्दर घुसते ही वहाँ मेज़ पर बैठे एक हवलदार ने उससे आने का कारण पूछा और यह सुन कर की वह स्पेशल इंस्पेक्टर था उसे एक सलाम ठोका। फिर उसे वहीं एक बेंच पर बिठाया गया और थोड़ी देर ही में एक सब-इंस्पेक्टर उसे लेने आया। वह राज को सुराजपुरा पुलिस कमिश्नर के कमरे में ले गया।

यह कमिश्नर राज के बॉस श्री मेहता साहब के मित्र थे और उन्हें निजी तौर पर जानते थे। उन्होंने राज से मेहता साहब की ख़ैरियत पूछी। फिर कमरे में मौजूद सब-इंस्पेक्टर की ओर इशारा करते हुए वे बोले कि वह राज के साथ हमेशा रहेगा, अगर राज को कोई आपत्ति न हो। यह इसलिए कि एक वर्दीवाले को देख कर वे सारे काम किए जा सकते हैं जिनके लिए आम तौर पर भागा-दौड़ी करनी पड़ती है, जनता वर्दीवालों को देख कर सहयोग देती है। सब-इंस्पेक्टर का नाम काका शर्मा था, और कमिश्नर ने हँसते हुए कहा कि उसका सम्बन्ध का•का•का से सिर्फ़ नाम तक ही सीमित था। इस बात पर राज और काका दोनों को भी हँसी आ गयी। राज ने आयुक्त

का धन्यवाद दिया और काका शर्मा के साथ उसके दफ़्तर की ओर चला गया।

काका शर्मा ने राज को एक फ़ाइल देते हुए कहा कि का•का•का की सारी जानकारी उसी फ़ाइल में थी। यह फ़ाइल राज वाली फ़ाइल के मुकाबले में काफ़ी पतली थी, ज़ाहिर है क्योंकि काका शर्मा की फ़ाइल में का•का•का के सिर्फ़ सुराजपुरा वाले काण्डों की इनफ़रमेशन थी, जबकि राज की फ़ाइल में का•का•का के देश भर में किए गये कारनामों की फ़ेहरिस्त थी। राज के मन में शक़ उभरा कि शायद उसने यहाँ आ कर गलती की थी, शायद का•का•का का सुराजपुरा से कोई रिश्ता ही न था। क्या राज इसलिए सुराजपुरा आया क्योंकि स्वाति को भी सुराजपुरा आना था?

काका शर्मा ने राज को अपने दफ़्तर में बैठा कर चाय मँगवाई। राज ने उससे इंकलाब लालपुरी के बारे में पूछा। काका शर्मा ने बताया कि इंकलाब मौज-मस्ती करने वाला इंसान था, और उसके परिवार के पास मौज-मस्ती के लिए काफ़ी पैसा था। काका ने यह भी बताया कि इंकलाब का जीजा पुलिस के नारकोटिक्स विभाग में सहायक कमिश्नर था। काका शर्मा ने राज से सीधे ही पूछ लिया कि क्या उसे लगता था कि का•का•का सुराजपुरा से था? राज ने कहा कि कुछ ठीक तरह से कहा नहीं जा सकता मगर सुराजपुरा में का•का•का के जोखिमों की शुरूआत हुई और काफ़ी घटनायें भी वहीं हुई, तो शायद कोई बात हो। काका शर्मा ने हँसते हुए कहा कि यह का•का•का आदमी बहुत चालू था। पता नहीं

उसके पास इतने अजीब-अजीब विचार आते कहाँ से थे। राज ने मस्जिद में प्रवेश के लिए शर्मा से बोला तो उसने कहा कि कोई मुश्किल बात नहीं थी, अगर वह चाहे तो वह राज के साथ जा सकता था। राज ने उसे स्वाति की मस्जिद को अन्दर से देखने की इच्छा के बारे में बताना उचित नहीं समझा, उसने तय किया कि बाद में सही समय आने पर शर्मा को समझा देगा। राज ने शर्मा से खटाऊ काण्ड की डीटेल पूछी। शर्मा फिर से हँस दिया और बोला कि खटाऊ कारनामा तो मज़ेदार था ही पर सोहनी खन्ना काण्ड में तो का•का•का ने हद ही कर दी थी।

हुआ यूँ था कि अभिनेत्री सोहनी खन्ना सुराजपुरा के एक अनाथालय में चाचा नेहरू जन्म दिवस समारोह, जो देश भर में बाल दिवस के रूप में मनाया जाता है, में निमन्त्रित की गयी। अब ऐसे समारोह तो फ़िल्मी सितारों को बहुत पसन्द होते हैं क्योंकि इससे उनकी पब्लिक इमेज मज़बूत होती है, फिल्म निर्माता, डायरेक्टर इत्यादि देखते हैं कि जनता कितना इन सितारों को चाहती है और अपनी फिल्मों में इन्हें काम देते हैं–यह धंधा है बहुत बढ़िया, चाहे गन्दा हो या अच्छा! जब अख़बारों, पत्रिकाओं और टीवी में उनकी ये ख़बरें निकलती हैं तो लोग उनकी वाहवाही करते हैं, लोग सोचते हैं कि ये कितने महान हैं कि इतने बड़े हो कर भी इनमें समाज के पिछड़े हुए लोगों की मदद करने का इतना जज़्बा है। इन्हें कुछ ख़ास नहीं करना होता है, बस बच्चों के साथ दो-एक घण्टे बिता कर अच्छी-अच्छी तस्वीरें खिंचवा

कर थोड़े पैसे दे कर अपनी पुरानी ऐशो-आराम की ज़िन्दगी में लौटना होता है। सोहनी खन्ना के आने का कार्यक्रम अक़बर हैरीसन की संस्था सेवा मंज़िल के सहयोग से किया गया था। सोहनी खन्ना के चारटर्ड अकाउन्टेन्ट ने उसे बताया था कि इन्कम टैक्स से थोड़ी राहत के लिए उसे कुछ पैसे अनाथालयों जैसी संस्थाओं को देने चाहिये और इसलिए उसके सेक्रेटरी ने सोहनी को दिए जाने वाले अनगिनत निमंत्रणों में से सुराजपुरा के अनाथालय का निमंत्रण चुना और साथ ही साथ पाँच लाख रुपए का एक चेक भी उनके नाम से बनवा लिया। उसने सेवा मंज़िल को फ़ोन लगा कर कहा कि मुम्बई से दिल्ली आने-जाने का बिज़नेस क्लास का हवाई टिकट भी सोहनी को देना होगा और दिल्ली से सुराजपुरा आने-जाने के लिए एक एयर-कंडीशन कार भी, सोहनी के सेक्रेटरी के साथ आने-जाने की हवाई टिकट साधारण क्लास में हो सकती थी। अक़बर हैरीसन ने सोचा कि इससे अनाथ बच्चों का कोई फ़ायदा ही होगा इसलिए उसने शर्तें मान लीं। सोहनी खन्ना ने यह भी कहा कि वह वहाँ किसी भी खाने या ड्रिंक को हाथ नहीं लगायेगी क्योंकि उसका सिस्टम बहुत ही सेंसिटिव था।

सज्जनों, हुआ यूँ कि अक़बर ने अपनी संस्था के ड्राइवर को अपनी एयर-कंडीशन गाड़ी के साथ सोहनी खन्ना को दिल्ली हवाई अड्डे से लाने के लिए भेज दिया। सोहनी को कोई पहचाने नहीं इसलिए उसने बहुत बड़ा काला चश्मा पहन लिया था और उसका सेक्रेटरी बैग-बक्से उठाने का काम कर रहा था। अक़बर का ड्राइवर हिदायतों के अनुसार सोहनी के

सेक्रेटरी के नाम वाली तख़्ती हवाई अड्डे से बाहर निकलने वाले यात्रियों को दिखा रहा था।

उधर जैसे ही अक़बर का ड्राइवर दिल्ली हवाई अड्डे के लिए रवाना हुआ तब से ही सुराजपुरा में एक मोबाइल एस०एम०एस० वहाँ के बाशिन्दों के मोबाइलों पर बरसात की तरह बरस रहा था। कोई लिखित सन्देश नहीं था बल्कि एक फ़ोटो थी जिसमें सोहनी एक अन्य बॉलीवुड फ़िल्मी सितारे के होंठों से होंठ मिला कर ऐसे चूस रही थी जैसे किसी रद्दी-सी ब्लू फ़िल्म में आप देख सकते हैं। पूरे सुराजपुरा में सोहनी के आने की पब्लिसिटी की हुई थी और काफ़ी लोग अनाथालय के सामने भी इकट्ठे हो गये थे। उन्हीं लोगों में से कुछ के पास भी यह फ़ोटो पहुँचा और सब लोग अश्लील तरीके से हँसने लगे।

तो जब अक़बर का ड्राइवर एक दम चुप-चाप सोहनी खन्ना और उसके सेक्रेटरी को ले कर दिल्ली हवाई अड्डे से निकला तब तक सोहनी के सुराजपुरा में आने का तूफ़ान बहुत बड़ा रूप ले चुका था। अक़बर हैरीसन ने पुलिस कमिश्नर से बात कर के उन्हें सारी बात समझाई और उन्होंने यथास्थान पुलिस का बन्दोबस्त करवा दिया ताकि हुजूम जोश में आ कर सोहनी को कोई हानि न पहुँचाए। सुराजपुरा के जर्नलिस्ट भी सोहनी से उसके प्रेम-सम्बन्ध और ख़ूबसूरत से जिस्म के ऊपर सवाल करने के लिए तैयार थे।

पाँच घण्टे से निकली अक़बर की गाड़ी सोहनी को ले कर सुराजपुरा में दाखिल हुई। अनाथालय से दो किलोमीटर

दूर-दूर तक लोग पंक्तियाँ बना कर खड़े थे, और गाड़ी को देख कर हाथ हिला रहे थे, उनमें बहुत-सी महिलाएँ व बच्चे भी थे। सोहनी के सेक्रेटरी ने देखा के काफ़ी मर्द बेहूदे ढंग से हँसते हुए अपने मुँह में जीभ घुमा-घुमा कर चेहरा आगे कर रहे थे, अपने मुँह की तरफ़ हाथ से इशारे करते हुए। उसने सोचा कि बेहतर होगा कि सोहनी को कुछ नहीं कहा जाए। उसे अपनी इमेज की बहुत परवाह थी और यह सब देख कर उसका मूड ख़राब होना लाज़मी बात थी। जब गाड़ी अनाथालय के दरवाज़े पर पहुँची तब सोहनी का ध्यान भी उन मर्दों की तरफ़ गया जो अश्लील हरक़तें कर रहे थे, और उसे लगा कि सुराजपुरा गँवार लोगों की जगह थी। कुछ लोग अब अपने मोबाइलों को गाड़ी के शीशों की तरफ़ दिखा कर हँस रहे थे, तो उसने अपने सेक्रेटरी से कहा कि वह पता करे कि बात क्या थी। किसी ने ध्यान नहीं दिया था किंतु सबसे पहले आने वाले फ़ोटो एस०एम०एस० में भेजने वाले का नाम का•का•का लिखा था...

अक़बर और अनाथालय की स्वागत कमेटी सोहनी को लेने अनाथालय के दरवाज़े पर आयी। बच्चों के एक समूह के पास फूलमालाएँ थीं जो उन्होंने सोहनी को पहनाईं और उसके स्वागत में एक सुन्दर गाना गाया। इस सबके के बाद उसे अन्दर ले जाया गया और अनाथालय की अध्यक्षा ने उसे सारे अनाथालय के बारे में बताया और सब कुछ दिखाया। उसने बताया कि अनाथालय शहर के परिवारों के सहयोग के बल पर चलता था और उसके जैसे दानियों के

बल पर वे अनाथ बच्चों के लिए कुछ कर पाते थे। सोहनी को अक़बर से भी मिलवाया गया। सोहनी ने प्रेस वालों की उपस्थिति में कहा कि उसे बच्चे बहुत अच्छे लगते थे और वह उनके लिए मदद करने का जज़्बा रखती थी। उसने बच्चों के साथ फ़ोटो खिंचवाईं और पत्रकारों के सवालों के छोटे-छोटे जवाब दिए। पत्रकारों के ख़तरनाक निजी सवालों को उसने चालाकी से अनसुना कर दिया। सोहनी बहुत शान्त और शालीन लग रही थी। बिल्कुल वैसी ही जैसी वह दिखाना चाहती थी।

तभी उसके सेक्रेटरी ने भीड़ में जगह बनाते हुए आ कर उसके कान में बाहर खड़े मर्दों की अश्लील हरक़तों की वजह बताई। बस साहब तब तो क़हर मच गया। न आव न ताव देखते हुए सोहनी ने वहीं सुराजपुरा को बुरा-भला बोलना शुरू कर दिया। उसने कहा कि वहाँ के लोगों को कोई तमीज़ नहीं थी, कि वे सितारों की पर्सनल लाइफ बरबाद करने पर तुले थे, कि उन्हें कोई हक़ नहीं था उस के जीवन पर फ़ैसले देने का, वो थे ही कौन... वग़ैरह... वग़ैरह... अनाथालय के लोग सकते में आ गये और अक़बर भी। अभी सोहनी ने चेक उन लोगों के हाथ में नहीं दिया था तो वे सोचने लगे कि अगर उसका मन बदल गया तो वे तो मुश्किल में आ जाएँगे। उन्होंने वैसे ही बहुत से पैसे सोहनी और उसके सेक्रेटरी की हवाई टिकट और उनको हवाई अड्डे से लाने पर खर्च कर दिए थे, और अगर अब उन्हें कुछ नहीं मिलने वाला था तो आगे उन्हें काफ़ी मुश्किलें खड़ी होने वाली थीं।

सब कुछ थम-सा गया था और सब लोग सोहनी के गुस्से से इम्प्रेस हो कर उसी की ओर टुकुर-टुकर देख रहे थे। तभी अचानक एक छोटी अनाथ बच्ची, जिसे कुछ समझ नहीं थी सोहनी के पीछे पहुँची और उसको अपने द्वारा बनाया गया आइ लव यू कार्ड देने के लिए उसकी कमर पर हाथ लगाया, और दूसरे हाथ से उसने कार्ड सोहनी के आगे कर दिया। सोहनी ने झट से कार्ड खींचा और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। उसने बच्ची के मुँह तक को नहीं देखा। इसके बाद वह अक़बर से बोली कि वह ऐसे शहर को कुछ नहीं दे सकती जो उसकी रिसपेक्ट न करता हो। और यह कह कर वह अपने सेक्रेटरी से बोली कि चूँकि उसकी उड़ान पाँच घण्टे बाद रात को थी, वह सुराजपुरा के किसी अच्छे होटल में उसके लिए एक कमरा लेने का इन्तज़ाम करे। अक़बर ने बात को संभाल लिया, उसने कहा कि कमरा वह मेनैज कर देगा, उसे अपनी माँ का ख़्याल आया जो नवाबी महल होटल में जनरल मैनेजर थी, और उसे यह आस भी थी कि वह सोहनी का मन बदल देगा ताकि वह अनाथालय को कुछ पैसे तो दे कर जाए। उनका पहले से ही कितना खर्चा हो गया था।

उसने तुरन्त ही ड्राइवर समेत सोहनी और उसके सेक्रेटरी को होटल की ओर भेज दिया, और अपनी माँ को फ़ोन कर के कमरा भी दिलवा दिया। अनाथालय की अध्यक्षा से सोच-विचार कर के उसने तय किया कि एक-दो घण्टे बाद वह सोहनी से एक बार मिलने जायेगा ताकि उसका गुस्सा शान्त कर सके।

उधर गाड़ी से निकलती हुई सोहनी को सभी तरफ़ से मर्द चूमने के अश्लील इशारे कर रहे थे और अब उसे हालात की नज़ाक़त की चुभन महसूस हुई। उसने अपने सेक्रेटरी पर ही गुस्सा दिखाना शुरू कर दिया। उसे नालायक, बद्तमीज़, बेवकूफ़... न जाने क्या-क्या कहा। फिर उसने अपने प्रेमी को फ़ोन लगाया और उसे सब बातें बताईं। उसके प्रेमी ने उसे दिलासा दिया और कहा कि वह धीरज धरे क्योंकि वे लोग कलाकार थे, और समाज कलाकारों के साथ न्याय नहीं करता है, समाज को उनसे डर रहता है। उसने कहा कि अगर वह चाहे तो पास में ही फतेहाबाद शहर में जा सकती थी जो उसके प्रेमी के नवाबी पिता की अंग्रेज़ों के ज़माने की रियासत थी, मगर सोहनी ने कहा कि कुछ ही देर में वह वहाँ से निकलने ही वाली थी।

गाड़ी के ड्राइवर ने होटल पहुँचने के लिए एक लम्बा रास्ता लिया था क्योंकि दूसरे रास्तों में बहुत लोग जमा थे। घटना की ख़बर सुन कर कुछ लोग पागलपने पर उतर आए थे, और पंचरंग दल का झण्डा ले कर उसके कुछ कार्यकर्ताओं ने पत्थरबाज़ी शुरू कर दी थी, पर अभी तक सब कुछ पुलिस के वश में था। गाड़ी किसी सुनसान सड़क से जा रही थी कि तभी काला रेशमी कुर्ता-पायजामा पहने, लाल रंग का लबादा ओढ़े और एक काला मुखौटा लगाए एक आदमी गाड़ी के सामने आ पहुँचा और बांस का एक लम्बा डण्डा दिखा कर उसने गाड़ी रुकवा ली। ड्राइवर को बाहर कर के उसने सोहनी के सेक्रेटरी का बैग छीन लिया और उसे भी गाड़ी के बाहर

कर दिया। फिर सोहनी के कोमल हाथ-पैरों को बांध कर उसने उसे बेहोशी का इंजेक्शन दे दिया और गाड़ी चलानी शुरू की।

सोहनी के परिवार के सारे सदस्य इमरजेन्सी जैसी हालत में सुराजपुरा पहुँचे। खन्ना ख़ानदान मुम्बई में बहुत माना हुआ ख़ानदान था और उनके सम्पर्क दूर-दूर तक थे तो उन्होंने अपना ज़मीन आसमान एक कर दिया इस अपहरण को राष्ट्र के वीआईपी परिवारों की सुरक्षा का अहम् मसला बनाने के लिए और सुराजपुरा के पुलिस तंत्र ने सारा ज़ोर लगा दिया लेकिन उस दिन सोहनी का कोई अता-पता नहीं मिला। अगले दिन सुबह के ग्यारह बजे पुलिस मुख्यालय में फ़ोन आया कि सोहनी पुराने शहर के एक सस्ते से होटल के कमरे में बेहोश पड़ी है। पुलिस एकदम से वहाँ पहुँची और सारे कमरे तलाशे। और जी हाँ उनमें से एक गन्दे व छोटे कमरे में सोहनी खन्ना मिली। मेज़ पर लिफ़ाफ़े में एक ख़त पड़ा था जिसपर 'सिर्फ़ सोहनी के लिए' लिखा था। पुलिस ने ख़त से छेड़-छाड़ नहीं की और इन्तज़ार किया सोहनी के होश में आने का। सोहनी ने होश में आ कर कहा कि उसे कुछ नहीं मालूम था उसे कहाँ ले जाया गया, क्या किया गया। पुलिस ने उससे पूछा कि क्या उसे लग रहा था कि उसकी इज़्ज़त से खिलवाड़ हुआ था, तो उसने पावरफुल आवाज़ में 'नहीं' कहा। पुलिस ने उसे ख़त देते हुए कहा कि वह उसे खोल कर पढ़े। उसमें लिखा था–

ध्यान से जियो मैडम जी। बॉलीवुड में

वैसे ही औरतों का चित्रण हाशिये पर, मर्दों से निचले स्थान पर होता है। या फिर पूर्णतः फंतासी के रूप में, असलियत से कोसों दूर। और यह इंडस्ट्री अपने ऐक्टरों और हीरोइनों में जो दोमुँहापन पैदा करती है उससे निजात पाना भी किसी बुद्धिमान के लिए कतई मुश्किल होना चाहिए। हिन्दुस्तानी 'मर्दों' जैसा व्यवहार करना औरतों की आज़ादी नहीं बल्कि दासता को बढ़ावा देता है और उन्हें उपभोग करने की वस्तु बनाता है। कभी सोचा है कि एक गरीब, दलित वर्ग की औरत तुमसे क्या सीख पायेगी? उस पर तुर्रा यह कि तुम एक अमीर ख़ानदान से ताल्लुक रखती हो, तुम्हें वैसे ही बुनियादी ज़रूरतों की कमी नहीं। तुमसे और सारी बालीवुड की हीरोइनों से गुज़ारिश है कि सोचें, सिर्फ़ सोचें और देश की तमाम दबाई गई औरतों को ख्याल में रखकर अपने जीवन व कार्यक्षेत्र में सही रास्ता अख़्तियार करें, नहीं तो उल्टे-सीधे तरीकों से हम आपको यह याद कराते रहेंगे। शुक्रिया!

और सबसे नीचे सुनहरी अक्षरों में का•का•का लिखा था। और सुबह तक एक और बात हो चुकी थी। बैंक से किसी ने अनाथालय के कर्मचारी का रूप धर के सोहनी का चेक भुना लिया था और वे पैसे नकद में अनाथालय के दफ़्तर पहुँचा दिए गये थे। और चूँकि पैसे नकद रूप में आए

थे, सोहनी को वे पैसे लौटाने का सवाल ही पैदा नहीं होता था...

काफ़ी दिनों तक सुराजपुरा में इस बात को ले कर बहुत गहमा-गहमी रही। चाय की दुकानों, चौपालों, बाज़ारों इत्यादि हर जगह लोग यही बात करते रहे। विश्व हिन्दु सभा और पंचरंग दल ने तो दो-तीन दिन पुराने शहर में चक्का जाम किया क्योंकि मोबाइल वाली फ़ोटो से उनके काफ़ी कार्यकर्ता एक्साइट हो गये थे और उन्हें वापस ढर्रे पर लाना ज़रूरी था। उन्होंने सोहनी को सति-सावित्री की तरह बर्ताव करने की पब्लिक धमकी दी और समय का फ़ायदा उठाते हुए देश के हिन्दुओं को एक-जुट हो कर मुसलमानों और वेस्टर्न रीति-रिवाज़ों को अस्वीकार करने का साहस करने के लिए प्रेरित भी किया। उन्हें क्या मालूम कि भारतीय हिन्दु संस्कृति में सति-सावित्रिओं के अलावा अप्सरायें, योगिनियाँ, कोकशास्त्र या कामसूत्र की नायिकाएँ, गीत-गोविन्दम की राधाएँ वगैरह भी आती हैं।

मुँह में राम बगल में छुरी

राज के साथ खाना खा कर स्वाति ने सोचा कि थोड़ा आराम किया जाए। सो वह अपने होटल वापस चली गयी और शाम को तरो-ताज़ा हो कर एक बार फिर पुराने शहर की गलियों में घूमने चल पड़ी। मस्जिद के आस-पास चक्कर काटते-काटते उसे वहाँ के पूरे भारत में प्रसिद्ध शिव मन्दिर का दरवाज़ा भी दिख गया। बहुत अचरज की बात थी कि मन्दिर और मस्जिद एक तरफ़ से सटे हुए थे, यानी दोनों के बीच दक्षिणी दिशा में सिर्फ़ एक ही दीवार थी। ज़ाहिर है दीवार बहुत ऊँची थी और उस पर कांटे लगे हुए थे ताकि कोई उसे पार न कर सके। मस्जिद और मन्दिर दोनों के इतिहास के बारे में भिन्न-भिन्न विचारकों की अलग-अलग राय थी। आम तौर पर यह समझा जाता था कि मस्जिद को मन्दिर का एक हिस्सा काट कर बनवाया गया था, क्योंकि मन्दिर का बखान पुराणों तक में किया गया था और मुसलमान तो पुराणों के ज़माने के बहुत बाद ही भारत में घुसे थे। कहा जाता था कि नवाब ग़ाज़ी खान ने जागीर मिलने के बाद ही मन्दिर के एक हिस्से को तुड़वा कर मस्जिद का निर्माण करवाया। ख़ैर जो भी

बात थी असलियत में मुद्दा बहुत सेंसिटिव था। भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय इसी मन्दिर में मरी गाय फेंकी गयी और साथ ही साथ मस्जिद में मरे हुए सुअर को भी। छोटे-मोटे दंगे तो होते ही रहते थे, जो ज़्यादातर राजनेताओं और धार्मिक लीडरों द्वारा भड़काए जाते थे। अब आम आदमी को दंगों से क्या लेना-देना होता है, उसे तो दो वक़्त की रोटी, सर पर छत और सर्दी-गरमी के लायक कपड़ा-लत्ता मिल जाए तो वही बहुत है। एक बार सोचिये कि अगर ये नेता लोग, इन्टेलेक्चुअल क्लास के बातूनी भूत, धार्मिक लीडर, और अपने-आप को अमीर, विशेष, ख़ास, हाई-फ़ाई दिखाने की इच्छा रखने वाले मूरख भारत में न हों तो किस को क्या पड़ी है कि किसी से झगड़ा मोल ले ऐसी बातों पर जिन पर सैकड़ों-हज़ारों सालों से पर्दा पड़ चुका हो, जो बाते खा-पी कर ख़त्म हो चुकी हों। यहीं हिन्दुस्तान में यह भी कहा जाता है कि आप मरे जग प्रलय, तो कहाँ का मन्दिर कहाँ की मस्जिद और कहाँ की संस्कृति?

सुराजपुरा की मस्जिद और शिव मन्दिर पर ज़बरदस्त पहरा रहता था ताकि कोई शरारत न कर सके और कोई भी मुश्किल पैदा न हो। आज की दुनिया में इंसानों के बीच स्पिरिचुअल शान्ति को भी ख़तरा है... स्वाति पुलिस व पैरा-मिलिट्री वालों के झुण्डो को पार कर के मन्दिर में दाखिल हुई। मन्दिर की एक ख़ास बात यह कि अगर यहाँ कोई मन्नत माँगी जाती थी तो वह अवश्य ही पूरी होती थी, पर उसके लिए एक विशेष तपस्या से गुज़रना पड़ता था। यह कार्यक्रम

पन्द्रह दिनों का था। प्रार्थी को पन्द्रह दिन तक मन्दिर के अन्दर की गुफ़ाओं में वास करना पड़ता था और वह भी बिना कपड़ों के, और सिर मुण्डाकर। चूँकि यह तपस्या बहुत मशहूर हो चली थी इसलिए बहुत से लोग यहाँ इसे करने आते थे। मन्दिर की कार्यकारिणी सभा ने निश्चय लिया था कि हरेक साल सिर्फ़ एक सीमित संख्या में ही लोगों को यह करने की इजाज़त देंगे, और वह भी उन लोगों को जो सबसे अधिक बोली लगा पाएँगे। आख़िरकार मन्दिर के काफ़ी खर्चे थे, उन्हें पैसों की ज़रूरत थी। इस तपस्या से प्राप्त धन के कारण यह मन्दिर देश के अच्छी आमदनी वाले मन्दिरों में गिना जाता था। पाठकों इस मन्दिर में भी का•का•का ने अपना गुल खिलाया। हुआ यूँ कि भारत के महा फेमस उद्योगपति श्री सुकेश खटाऊ जी यहाँ इस तपस्या को पूर्ण करने के लिए पधारे। जो इनडायरेक्ट रूप से कारण बना उनके अति सम्मानित पिता की मृत्यु का। उनके पिता नाइलॉन प्रिंस मनोहर खटाऊ की गिनती भारत के महान इण्डस्ट्रियलिस्टों में की जाती है, ख़ास तौर पर उनकी ज़मीन से आसमान तक की लगाई गयी छलांग के कारण। लोग चाहे जो कुछ भी कहें तारीफ़ों के पुल बांधे या लफ़्ज़ों से नरक को स्वर्ग बना दें साफ़ और सोलह आने सच बात यह थी कि श्री मनोहर खटाऊ ने इंसानों की मुख्य नब्ज़ पहचान ली थी, यानी लालच। और उसी को पकड़ते हुए, सारे नैतिक आचरणों, अच्छे मूल्यों को ज़बरदस्त तरीके से ताक पर रखते हुए वह उन ऊँचाइयों पर पहुँच गये थे जहाँ सिर्फ़ वही पहुँच सकते थे, यानी पैसे के गोमुख पर।

जब उनकी मृत्यु हुई तो दो बेटों में लड़ाई शुरू हुई, पैसे की गंगा के कंट्रोल को लेकर। और फिर उनके ग्रुप का भाईयों में बँटवारा हुआ, और जहाँ तक कि हमें मालूम है बड़े ने छोटे को उस खेल में हरा दिया। छोटा पूर्ण शाकाहारी, धार्मिक किस्म का इंसान था, इसलिए व्यापारिक हथकंडे अपनाने के साथ-साथ वह कभी-कभी हिन्दु धर्म के अनगिनत देवों, देवियों और भगवानों की शरण में भी चला जाता था ताकि वे उसे अपने भाई के ख़िलाफ़ न्याय दिला सकें। भाइयों इससे पहले की आप इस मामले को कोई आम मामला समझें आप को बता दें कि यहाँ बात करोड़ों नहीं अरबों रुपयों की हो रही है। आम आदमी सोच भी नहीं सकता कि इतने रुपयों में कितने ज़ीरो होते हैं। दोनों भाई विश्व के सबसे अमीर लोगों में गिने जाते हैं और यह हाल कि नाम बड़े और दर्शन इतने छोटे! शायद सारी लड़ाई दोनों भाइयों की कम्पनियों के शेयरों का दाम बढ़ाने के लिए हो, ऐसा भी कुछ लोगों का मानना है।

तो साहब सुकेश खटाऊ अपने सुराजपुरा के शिव मन्दिर में भी अपनी हाज़िरी लगाने आया, पन्द्रह दिन वाली तपस्या करने के लिए ताकि भगवान शिव उसकी सुन लें और उन्हें अपने भाई के अत्याचार से इंसाफ़ मिले। अपनी कम्पनी के हेलिकॉप्टर में वह दिल्ली से सुराजपुरा पहुँचा और फिर दस गाड़ियों के दल में इसकी सवारी सुराजपुरा शिव मन्दिर के लिए हवाई अड्डे से चली। यह सबसे आगे अपनी रोल्स रॉयस गाड़ी में सवार था।

सबसे पहला पड़ाव नवाबी महल होटल में किया गया। यहाँ पाँच डबल बेड वाले कमरों में सुकेश खटाऊ के दल ने अपना सामान वगैरह उतारा और वहाँ एक कामचलाऊ दफ़्तर बनाया। सुकेश खटाऊ सीधे अपने सुइट में गया, जिसका एक रात का किराया एक लाख रुपये था। वहाँ जाते ही उसने पूजा अर्चना की, और अपने महँगे कोट-पैंट उतार कर सिर्फ़ धोती पहन ली और हल्का-सा नाश्ता कर के वह शिव मन्दिर के लिए निकल पड़ा। शिव मन्दिर के पुजारियों से पहले ही सब कुछ तय किया जा चुका था। चूँकि सुकेश खटाऊ देश के बहुत बड़े उद्योगपतियों में से एक था उसे यह तपस्या करने के लिए कुछ रियायतें दी गयी थीं। पन्द्रह दिन एक उद्योगपति की ज़िन्दगी में बहुत ज़्यादा होते हैं, बात करोड़ो-अरबों रुपयों की है दोस्तों। और सुकेश खटाऊ भी इन रियायतों की एवज में शिव मन्दिर को सम्पूर्ण सहयोग दे रहा था। उसकी ओर से ख़रे सोने के एक काफ़ी भारी शिवलिंग को मन्दिर में स्थापित करने की बात हो रही थी, साथ ही साथ पण्डे-पुजारियों के समूह को अच्छी-ख़ासी दक्षिणा मिलने वाली थी। सुकेश खटाऊ की इस तपस्या का मुहूर्त भी मुख्य पुजारी ने उसकी जन्म-पत्री और गृह दशा को भली-भाँति देख कर निकाला था।

सुकेश खटाऊ पन्द्रह दिनों तक गुफ़ाओं में रहने तो वाला था किंतु उसे इजाज़त थी कि गुफ़ा के बाहर से उसे हरेक दिन उसके कर्मचारी वे बातें बताएँ जिनपर उसका कोई निश्चय लेना ज़रूरी होता था। उसे गुफ़ा के अन्दर कपड़े

पहनने की इजाज़त नहीं थी पर गुफ़ा के अन्दर पहले से ही एक चादर पड़ी हुई थी जिससे वह रात को अपने-आप को ढक सकता था। जहाँ तक खाने-पीने का सवाल था, एक साधारण गुफ़ावासी को वही खाना मिलता था जो मन्दिर में आने वाले भक्त गण शिव भगवान को भेंट में देते थे। सुकेश खटाऊ के पन्द्रह दिनों के गुफ़ा निवास के दौरान मन्दिर में आने वाले भक्त जनों को भगवान को चढ़ाने के लिए मुफ़्त में खाना दिया गया, जो शहर के मशहूर हलवाई बलवन्त मल द्वारा ख़ास तौर से खटाऊ के लिए रोज़ बनवाया गया। और ज़ाहिर है वही खाना सुकेश खटाऊ को गुफ़ा में पहुँचाया जाता था, भगवान के मुँह लगने के बाद।

सुकेश खटाऊ ने एक और बात अपने पिता से सीखी थी, वह थी मीडिया का फ़ायदा उठाना। तो इनडायरेक्ट्ली यह ख़बर, यानी खटाऊ की शिव तपस्या की ख़बर को देश भर के मीडिया में फैलाया गया, ख़ास तौर पर इस तपस्या के कारण पर ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर देते हुए। कारण, आपको तो पता ही है, सुकेश पर उसके बड़े भाई द्वारा किया जाने वाला अत्याचार और अन्याय था। क्या हम भारतीयों का दिल नहीं भर आता कि बेचारा सुकेश खटाऊ अरबों रुपयों की वसीयत से वंचित हो रहा है?

तो पूरे आडम्बर, शानो-शौक़त, धूम-धाम के साथ सुकेश खटाऊ ने अपनी तपस्या आरंभ की। स्वयं भगवान शिव ने भी कभी अपनी तपस्या के दौरान या उसके बाहर भी इतना विलास, इतना ऐश्वर्य देखा होगा, यह बात बहुत डाउटफुल

है। शिव जी को तो मस्त-मौला कहा जाता है, वे लंगोटी पहन कर, लम्बे-लम्बे बाल रख कर, चिलम चढ़ा कर मस्ती से चलते-फिरते थे ऐसा पुराणों में लिखा है।

मन्दिर में उन पन्द्रह दिनों के दौरान एक यज्ञ चलता रहा, जिसे खटाऊ ने ही आयोजित करवाया। और खटाऊ के परिवार वाले और दोस्त भी यदा-कदा उससे मिलने आते रहे, और गुफ़ा के बाहर कुर्सियों पर बैठ-बैठ कर उससे बातचीत करते रहे। बाहर पूरे मीडिया में यह बात ख़ूब फैल गयी, सारे देश को ज्ञान हो गया सुकेश खटाऊ की इस तपस्या के बारे में, और छोटे-छोटे शहरों में या बड़े-बड़े शहरों के अचीन्हे छोटे-छोटे इलाकों में अजीब-अजीब-सी औरतें बढ़-चढ़ कर टेलीविज़न के पर्दों पर आ कर सुकेश खटाऊ के हक़ में बोलीं, और सुकेश खटाऊ के प्रति एक सहानूभूति की एक लहर का निर्माण हुआ, भले ही यह आर्टिफिशयल ढंग से किया गया। अगर आपके सामने कोई एक बात हज़ार बात दोहरायेगा तो आपके पास थक-हार कर उसे याद रखने के अलावा और कोई चारा है?

एक हफ़्ता गुज़र जाने के बाद सुकेश खटाऊ से मिलने उसके दो सगे मित्र, जिनका वर्णन पहले ही इस गाथा में किया जा चुका है, श्री रंजीत सिंह और श्री विरेन्द्र कुमार आए। ये दोनों भी हिन्दु धर्म में पूर्ण विश्वास रखते थे पर चूँकि उस समय उनकी ज़िन्दगी में कोई विशेष अड़चनें नहीं थीं वे इस तपस्या को करने के लिए ज़्यादा तत्पर नहीं दिखे, जबकि खटाऊ ने उन्हें यह साथ-साथ करने का निमंत्रण दिया

था। अब कल्पना कीजिए कि तीनों मित्र बातें कर रहे थे। दृश्य बहुत ही अनूठा था, दो साठ से अधिक उमर वाले लोग एक पुराने मन्दिर के दक्षिणी भाग, जो मस्जिद के साथ लगा हुआ था, में स्थित एक गुफ़ा के मुहाने पर कुर्सियों पर किसी ऐसे आदमी से बातें कर रहे थे जो दिखाई नहीं दे रहा था। यह आदमी नंगा खटाऊ था, गुफ़ा के अन्दर ज़मीन पर बैठा बातचीत कर रहा था। खटाऊ ने तय किया था कि आगन्तुकों को अपना चेहरा उन पन्द्रह दिनों तक नहीं दिखायेगा इसलिए वह गुफ़ा के मुहाने से हट कर अन्दर से ही बात करता था। हालाँकि मुख्य पुजारी ने उसे चेहरा दिखाने की छूट दे रखी थी, लेकिन उसका मन नहीं मानता था, और भगवान को नाराज़ करना उसका ध्येय नहीं था।

तीनो यार इधर-उधर की बातें कर रहे थे तभी मन्दिर का एक पुजारी तीनों के लिए प्रसाद ले आया। यह वही ख़ास खटाऊ के लिए बनाया गया प्रसाद था। उस दिन इस प्रसाद में देसी घी में बनीं पूरियाँ, छोले और ख़ालिस दूध में बनी खीर शामिल थे। तीनो मित्रों ने प्रसाद का भरपूर मज़ा लिया। तृप्त हो कर कुछ नींद सी आने लगी। उन्हें कुमार और सिंह बाद में मिलने का कह कर अपने होटल की ओर निकल चले। वे नवाबी महल होटल में नहीं बल्कि सुराजपुरा में नये-नये बने मेरिडियन होटल में ठहरे थे, जिसमें विरेन्द्र कुमार ने एक पूरा फ्लोर ही खरीद रखा था। मेरिडियन होटल के साथ साझेदारी में यह व्यापार उसी का था।

ख़ैर दोनों जन अपने-अपने कमरों में जा कर सो गये।

दूसरी ओर खटाऊ को भी ऐसी नींद आई कि वह भी अपनी गुफ़ा में खर्राटे मार-मार कर सोने लगा। अगले दिन तीनों दोस्तों की अपनी-अपनी जगह पर नींद खुली। सिंह और कुमार को याद था कि वे अपने कुर्ते-पायजामे में ही सो गये थे, पर अब उन्होंने पाया कि वे पूरे नग्न थे। उन्हें बात समझ नहीं आई। वे तैयार होने अपने-अपने गुसलख़ाने की ओर गये पर दोनों को कुछ समय के बाद ही अपने-अपने दायें चूतड़ में एक तेज़ दर्द का अहसास हुआ। उन्होंने वहाँ नज़र मारी तो दायां चूतड़ काफ़ी सूजा-सूजा दिखा... हाथ फिराया तो कुछ सूखा-सूखा खून हाथ में आया। उन्हें कुछ भी समझ नहीं आया। ख़ैर दर्द को सहन कर तैयार हो कर उन्होंने नाश्ता करने के लिए होटल के रेस्टोरेंट की तरफ़ प्रस्थान किया। सिंह के नीचे पहुँचने के पाँच मिनट बाद ही कुमार भी वहाँ पहुँच गया। पर अब दर्द और भी असहनीय हो गया था। दोनों को बैठने में मुश्किल हो रही थी और कुर्सियों पर मचले जा रहे थे। शिष्टता की ख़ातिर पहले तो दोनों ने एक-दूसरे से कुछ नहीं पूछा पर जब दर्द सहन से बाहर हो गया तो दोनों ने अपनी-अपनी व्यथा एक-दूसरे को सुनाई। दोनों को दायें चूतड़ में ही दर्द था ऐसा सुन कर सिंह की आँख फड़कने लगी। उसने नाश्ता अपने कमरे में मँगवाने का आर्डर दिया और कुमार के साथ अपने कमरे में चला गया। दोनों ने अपने पायजामे उतारे और कुमार ने सिंह का दायां चूतड़ देख कर हैरानी की आह भरी। वहाँ चूतड़ पर यह गुदा हुआ था–

भारत का तीसरा पाखण्डी

उधर सिंह भी कुमार का चूतड़ देख कर हैरान हुए जा रहा था... उस पर यह गुदा हुआ था–

भारत का दूसरा पाखण्डी

गोदना त्वचा में इतने अन्दर तक किया गया कि पूरी ज़िन्दगी तो उसे मिटाना नामुमकिन लग रहा था। पर इतना अन्दर तक गोदने के लिए तो बेहोशी की दवा की ज़रूरत पड़ती है, ऐसा सिंह ने सोचा। तभी सिंह का फ़ोन बज उठा। सुकेश खटाऊ ख़ुद फ़ोन पर था और उसकी आवाज़ काँप रही थी। उसने कहा कि उसके दायें चूतड़ में भयंकर दर्द था और वह तपस्या छोड़ कर वापिस मुम्बई जा रहा था। मगर उसे मालूम था कि सिंह और कुमार के साथ भी यही हुआ होगा। उसने उन्हें कहा कि अगर वे उसके साथ उसके हेलिकॉप्टर पर मुम्बई चलना चाहें तो वे सारी बातें उन्हें रास्ते में समझा सकता है। सिंह और कुमार ने इसी में अपनी भलाई समझी।

हेलिकॉप्टर में पता चला कि खटाऊ के चूतड़ में इतनी गहराई से गोदने पर ज़ख़्म थोड़ा ख़राब हो गया था, यानी कि उसमें हल्का–सा इनफ़ेक्शन हो गया था। बात मामूली–सी थी पर खटाऊ को अपने चूतड़ के खोने का बहुत डर लग गया था और इसीलिए वह जल्द से जल्द मुम्बई में अपने डाक्टर के पास जा कर इलाज करवाना चाहता था। सुराजपुरा शिव मन्दिर वालों को वह एक और शिवलिंग दान करने का वायदा कर आया था और वे उसकी एक हफ़्ते की तपस्या को ही सफल तपस्या मान चुके थे, और यही प्रेस और मीडिया में कहने वाले थे, कि एक चमत्कारी ज्योतिष योगकाल पैदा

हो गया था और एक हफ़्ते में ही पन्द्रह दिनों की तपस्या का फल सुकेश खटाऊ को मिल गया था!

सिंह अपनी उत्सुकता को काबू नहीं रख पाया और उसने खटाऊ से पूछा कि उसके चूतड़ पर लिखा क्या था... खटाऊ ने दर्द भरी आवाज़ में कहा–

भारत का पहला पाखण्डी

तीनों यार हेलिकॉप्टर में अपने बायें चूतड़ के बल पर बैठे हुए थे, और खटाऊ ने एक ख़त अपने कोट की जेब से निकाल कर अपने मित्रों को दिखाया...

पाखण्डी वो जो दिखावा करे, जो झूठ बोले, जो दुमुँहा हो, जो गिरगिटिया हो और जो अपने स्वार्थ की ख़ातिर लोगों को उल्लू बनाता हो जैसा कि आप तीनों ने हाल ही में किया और बहुत समय से करते ही आ रहे हैं। आप तीनों इस व्याख्या पर खरे उतरते हैं और मुझे विश्वास है कि इस जीवन में तो आप बदल नहीं सकते सो यह गोदना भी आप की पूरी ज़िन्दगी साथ देगा।

सबसे नीचे सुनहरी अक्षरों में का•का•का लिखा हुआ था। जिस हाल ही की घटना का सन्दर्भ का•का•का ने इस ख़त में दिया उसका ब्यौरा पाठकों कुछ इस प्रकार था। बात यह थी कि विरेन्द्र कुमार के नाम उत्तर प्रदेश के बदायूँ ज़िले में काफ़ी ज़मीन थी, अब काफ़ी का मतलब काफ़ी ही है, यानी आम कल्पना से भी बाहर, क़रीबन सौ-दो सौ एकड़।

क़ायदे से देखा जाए तो यह ज़मीन खेती-बाड़ी की ज़मीन थी और कई गाँवों के बीच में स्थित थी। जब यूपी में रंजीत सिंह की पार्टी की सरकार थी, जो कि एक बहुमत सरकार नहीं थी, तब सिंह ने जुगाड़ कर या करवा कर ज़मीन कुमार के नाम करवा दी, ज़ाहिर है उसी कम कीमत पर जो खेती-बाड़ी की ज़मीनों की होती है। पर हिन्दुस्तान में खेती-बाड़ी की ज़मीन किसी शहरी के नाम नहीं हो सकती है, खेती-बाड़ी की ज़मीन खरीदने से पहले आपको प्रूव करना पड़ता है कि आप किसान हैं। तो चूँकि सिंह की पार्टी की सरकार थी यह भी आराम से हो गया, ज़मीन विरेन्द्र और उसकी धर्म पत्नी डिम्पल कुमार के नाम हो गयी, और सावधानी के तौर पर दोनों के सरनेम काग़ज़ों पर नहीं लिखे गये। फिर तख़्ता पलटा। यूपी में सीमा कुमार की बहुमत सरकार आ गयी। सीमा कुमार तो दलितों की महारानी थी, और सिंह की पार्टी से उसके आंकड़े कभी ठीक नहीं बैठे थे। तो वह अपने पूरे दम-ख़म के साथ सिंह की पार्टी और उसके काले धंधों के पीछे पड़ गयी। सो बदायूँ की ज़मीन की बात भी उजागर हो गयी और सारे देश में कुमार के इस पाखण्ड पर थू-थू हुई। इस सदी के एक महान अभिनेता के कर्म देखिए। ख़ुद को कोई कमी न होते हुए भी ग़रीब किसानों की ज़मीन के लिए जुगाड़ करना और झूठ बोलना!।

सिंह ने लाख कोशिश की कुमार को बचाने की और प्रेस में उलट-सीधी बयानबाज़ी भी की ताकि जनता इस मसले को भूल जाए। सिंह की छवि तो वैसे ही ख़राब थी, और है

भी, और इस घटना ने उसके गिरगिटियापन पर और भी कीचड़ उछाले। दोनों मित्रों ने सहायता की गुहार लगाते हुए सुकेश खटाऊ को बुलाया। खटाऊ ने झट से पैसा गंगा की तरह बहाया और अपनी माँ के नाम से उसी ज़मीन पर कुमार की बहू के नाम एक विद्यालय खोलने की घोषणा करवा दी जहाँ कन्याओं को मुफ़्त शिक्षा दी जाने वाली थी। साथ ही साथ वह सारी ज़मीन खटाऊ की एक बेनामी कम्पनी के नाम कुमार द्वारा दान करवा दी गयी। यह बेनामी कम्पनी कहने को तो गाँवों के विकास के लिए कार्य करती थी पर असल में यह उस ज़िले में एक बांध बनाने की अभिलाषा रखती थी जिससे कि वहाँ बनाई गयी बिजली देश के अन्य भागों में अच्छी क़ीमत पर बेची जा सके और देश का विकास किया जा सके। उस बांध को बनाने से वहाँ के गाँवों में रहने वाले लाखों आदिवासी और स्थानीय जनसंख्या को जो नुक्सान होने वाले था, उसका किसी को ख़्याल नहीं आया। उनके घर-बार, काम-धंधे सब एक ही झटके में नष्ट होने वाले थे। ख़ैर शीला अदनानी जैसे समाज सेवकों की बदौलत, और सीमा कुमार की सिंह की पार्टी और उसके दोस्तों की आवारागर्दी नष्ट करने की इच्छा (ज़ाहिर है इसलिए कि वह अपनी स्वयं की आवारागर्दी फैला सके) के कारण इस पूरी परियोजना का पर्दाफ़ाश मीडिया में हुआ और खटाऊ, सिंह और कुमार की दुनिया कुछ समय के लिए एक काँटों भरी धुरी पर आ कर रुक गयी। पर आपको तो पता ही है कि भारतवर्ष ऐतिहासिक रूप से एक इतना विकसित देश है जो अब अपने सबसे बुरे समय में

फंसा हुआ है, यानी कि हिन्दु विचारधारा से सोचें तो अब हम कलयुग में हैं, और सतयुग बहुत पीछे छोड़ चुके हैं। तो इस कलयुग में हमारी स्मृति बहुत क्षीण होती है, जनता सब कुछ भूल जाती है। इस युग में मालदार, पावरफुल लोग अपने मन की चला पाते हैं, और वे ख़ुद भी अपने ही बुने हुए चक्रों में फंसे हुए रहते हैं। सो यही हुआ। न्याय की अंधी देवी ने इस जंजाल को साफ़ करने में बहुत देर लगाई और तब तक आम भारतीयों को अन्य इतनी मुश्किलों का सामना करना पड़ा कि वे इन बातों को भूल गये। कुमार, सिंह और खटाऊ के महँगे-महँगे वक़ीलों ने उन्हें आँच तक न आने दी और अन्त में जीत उसी शैतान तिकड़ी की हुई। बात को घुमा-फ़िरा दिया गया। पर का•का•का नहीं भूला, और उसने उन तीनों को ऐसा दाग दिया जो जन्म भर वे मिटा नहीं पाएँगे... अगर आपको मौका मिले तो उनके चूतड़ देखियेगा, शायद इससे आपको थोड़ा और अवेयर रहने में मदद मिले!

बहरहाल स्वाति के कदमों की राह में चलें। गलियों में घूमते-फिरते जब उसने शिव मन्दिर का दरवाज़ा देखा तो अन्दर चली गयी। शाम होने वाली थी और मन्दिर में काफ़ी कम लोग मौजूद थे। मन्दिर के अहाते में एक बहुत पुराना पीपल का पेड़ था जिसके ऊपर बन्धे धागों और रोली से लगता था कि वहाँ लोग मन्नतें मानते थे। स्वाति मन्दिर के दक्षिणी भाग में गयी जहाँ से उसे मस्जिद की दीवार दिखी और साथ ही गुफ़ाओं के मुहाने भी। उसने अपना कैमरा निकाला और एक गुफ़ा की तस्वीर लेने ही वाली थी कि

अचानक एक मोटा अधनंगा पुजारी उसके सामने आ कर खड़ा हो गया और बोला कि वह मन्दिर में फ़ोटो नहीं ले सकती थी। स्वाति ने अपना परिचय दिया और कहा कि वह मन्दिरों पर एक लेख लिख रही थी और उसके लिए उसे फ़ोटुओं की ज़रूरत थी। पुजारी ने उसे कहा कि वह जा कर मुख्य पुजारी से मिले और उन्हें अपना सम्पूर्ण परिचय दे कर उनसे ही फ़ोटो खींचने की आज्ञा माँगे। वह उसे मन्दिर के अहाते से होता हुआ उत्तरी भाग में ले गया जहाँ एक दो-मंज़िला इमारत बनी हुई थी। उसने बताया कि वह इमारत मन्दिर के पुजारियों के लिए थी और मुख्य पुजारी का दफ़्तर भी वहीं था। स्वाति को बात पलटाने का समय नहीं मिला और उसे उस पुजारी के साथ इमारत में दाखिल होना पड़ा। निचले तल पर बहुत से छोटे-छोटे कमरे थे जिनमें काफ़ी लोग सोए दिख रहे थे... वहाँ पूरे के पूरे परिवार एक ही कमरे में जमे हुए थे। उनके ट्रंक-बिस्तरों को देख कर स्वाति ने अन्दाज़ा लगाया कि वे ज़रूर ही तीर्थ-यात्री होंगे। वहाँ एक सुन्दर-सी बच्ची को एक कमरे के दरवाज़े पर देख कर उसने उसका गाल सहलाया और वह बच्ची मुस्कुरा दी। स्वाति का मन था उसकी फ़ोटो उतारने का पर अपनी ओर पुजारी की कड़ी नज़र महसूस कर वह फिर से उसके पीछे हो ली। पुजारी उसे सीढ़ियों के ज़रिए तीसरे फ्लोर तक ले गया जहाँ हालात, साज-सज्जा बहुत अलग थे। बहुत चुप्पी छाई थी और विलासिता के लक्षण दिखाई पड़ रहे थे। पूरे फ़र्श पर कालीन बिछा था और भगवानों और सन्तों की जड़ित तस्वीरें दीवारों पर लटकी

थीं। यहाँ निचली मंज़िल के मुक़ाबले कम कमरे थे और हर कमरे के बाहर एक सोफ़ा पड़ा था। सोफ़े असली चमड़े के थे और हर सोफ़े के साथ एक छोटी मेज़ भी थी जिस पर एक सुन्दर-सा लैंप पड़ा हुआ था। जिस गलियारे में वे चल रहे थे वहाँ चन्दन की अगरबत्ती की ख़ुश्बू फैली हुई थी। गलियारे के अन्त में एक शिव जी की संगमरमर की मूर्ति थी और उसके पीछे एक बन्द खिड़की जिसमें से सूरज की रौशनी आ रही थी। यह रौशनी शिव जी का प्रभामण्डल बना रही थी। वहाँ एक सोफ़े पर स्वाति को बैठने का इशारा कर के पुजारी साथ वाले कमरे के दरवाज़े को खट-खटा कर अन्दर घुसा। थोड़ी देर बाद वह बाहर आया और स्वाति को अन्दर जाने के लिए कहा। वह ख़ुद भी स्वाति के साथ अन्दर गया। जब वे अन्दर जा रहे थे और दरवाज़ा आधा खुला था तब स्वाति को दो आदमियों की बातचीत के स्वर सुनाई दिए और अचानक का•का•का शब्द भी और वह चौंक पड़ी। फिर उसने सोचा कि शायद यह उसका भ्रम था क्योंकि उसे चलते-फिरते, उठते-बैठते हर जगह का•का•का ही दिखता और वहाँ का•का•का शब्द सुनाई देना सच नहीं हो सकता था।

वह अन्दर गयी तो उसे एक उच्चासन पर बैठा डील-डौल वाला एक साधू नज़र आया जिसने पता नहीं कितनी रूद्राक्ष की मालाएँ पहनी हुई थीं और पता नहीं कितनी ही रत्न-जड़ित अंगूठियाँ अपनी उँगलियों में शोभित कर रखी थीं। उसने सिर्फ़ एक नारंगी रंग की धोती पहन रखी थी और उसके सिर पर चाँद निकला हुआ था यानी सिर के आगे वाले

अधिकतर भाग में बाल नहीं थे। सिर के पीछे वाले बाल ख़ूब लम्बे थे और दाढ़ी-मूछ ज़मीन से दो फुट ऊपर तक पहुँच रही थी। उसके सारे बाल, जो दिखाई दे रहे थे, चट सफेद रंग के थे। इस पद्मासन में बैठे साधू के सामने नीचे ज़मीन पर चौकड़ी जमाए एक बूढ़ा-सा व्यक्ति बैठा था जिसने सफेद रेशम का कुर्ता पायजामा पहन रखा था, पर जिसकी आँखें बहुत तेज़ लग रही थीं, दूसरी तरफ़ साधू की आँखें काफ़ी आनन्दमय लग रही थीं, जैसे कि झूम रही हों। स्वाति ने देखा कि जूते दरवाज़े के एक तरफ़ पड़े थे तो उसने भी अपने जूते वहाँ उतार दिए और आगे बढ़ी। दोनों सज्जनों के बीच की बातचीत में एक पड़ाव आया हुआ था और साधू महाराज ने स्वाति को नीचे बैठने को कहा। उसके बाद साधू महाराज ने स्वाति के साथ आने वाले पुजारी को बुला कर उसके कान में कुछ कहा। वह बाहर चला गया और तब तक साधू महाराज ने अपनी आँखें बन्द रखीं, और स्वाति को कुछ अजीब से अहसास हुए, उसे लगा कि वह वहाँ फंस गयी थी। उसने दूसरे सज्जन की ओर देखा तो उसकी आँखें भी बन्द पाईं। थोड़ी देर बाद पुजारी अन्दर आया और उसके हाथ में एक तश्तरी थी जिसमें तीन कांच के जाम थे और उनमें लाल रंग का कोई पेय था। साधू महाराज ने अचानक से संस्कृत में एक श्लोक बोलना शुरू कर दिया, उसकी आवाज़ गहरी और अति गंभीर थी। दो मिनट बाद उसने अपनी आँखें खोलीं और पुजारी से पेय स्वाति और मौजूद सज्जन को देने को कहा। स्वाति ने जाम उठा तो लिया पर उसमें से उठती महक को

भाँप कर उसने उसे न ही पीने का फ़ैसला लिया। साधू महाराज ने उसे पीने का इशारा किया और अपने जाम से एक घूँट भरा। स्वाति ने उसे कहा कि वह कोई भी ड्रिंक ऐसे ही बिना जाने नहीं पी सकती थी क्योंकि उसकी डाइजेशन बहुत सेंसिटिव थी। साधू महाराज और वह सज्जन हँस दिए और साधू ने कहा कि उसमें कुछ नहीं था, सिवाय कुछ आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों और शक्ति बढ़ाने वाली औषधियों के... साधू की आँखें पेय को पीने के बाद और भी चमकने लगी थीं। स्वाति ने बात बदलते हुए कहा कि क्या वह यहाँ इस मन्दिर की फ़ोटो ले सकती थी? साधू महाराज ने कहा कि हाँ ज़रूर, पर उसे अपना मक़सद क्लियर करना पड़ेगा। स्वाति को लगा कि कहीं कोई गड़बड़ न हो जाए इसलिए उसने सिर्फ़ यही कहा कि वह एक पत्रकार थी और चूँकि उसे मन्दिर अच्छा लगा उसने सोचा कि वह उसपर कुछ लिखे। साधू महाराज ने उससे पूछा कि उसका नाम क्या था और वह किस कम्पनी के लिए काम करती थी तो स्वाति ने उसे केओटीवी के बारे में बताया। साधू महाराज ने कहा कि अगर वह चाहे तो मन्दिर के फ़ोटो खींच सकती थी पर उसे साधू महाराज का एक इण्टरव्यू भी करना पड़ेगा। स्वाति ने उससे पूछा कि क्या फ़ोटो उतारने की यह एक शर्त थी, तो साधू महाराज ने हँसते हुए कहा कि हाँ वह एक शर्त थी। इससे पहले कि स्वाति कुछ और पूछती उसने पीछे खड़े पुजारी से कहा कि वह स्वाति को बाहर ले जा कर उसके और मन्दिर के बारे में बता दे और सम्पर्क करने के लिए टेलीफ़ोन नम्बर इत्यादि भी दे दे। स्वाति

ने उठते-उठते कहा कि वह अपने सम्पादक से बात करके ही उन्हें कुछ बतायेगी। दूसरे सज्जन ने स्वाति के सम्मुख हो कर कहा कि अगर वह हिन्दु है तो उसे यह इण्टरव्यू ज़रूर करना चाहिए, क्योंकि हिन्दुओं की आवाज़ संसार में प्रसारित करना बहुत आवश्यक था और यह एक तरह से पुण्य का काम था, और यह कि श्री श्री 1008 अवधूत विभूति स्वामी से बढ़ कर हिन्दुओं के हित में भारत में और कोई नहीं सोचता है। उसने यह भी कहा कि विश्व हिन्दु सभा की तरफ़ से स्वामी जी को पूर्ण सहयोग है और वे उनके आदरणीय हैं। और आख़िर में उसने यह भी बोला कि जिस ड्रिंक को स्वाति ने हाथ भी नहीं लगाया था वह जन्म-जन्मान्तर से, पौराणिक काल से हिन्दु पीते आ रहे थे और उसी को पी कर वेदों के रूप में अकाल विद्या की रचना हुई है।

स्वाति ने सज्जन की बातों को सुन कर कुछ नहीं कहा, वह जल्द से जल्द उस माहौल से निकलना चाहती थी। जूते पहनने के दौरान साधू महाराज की नज़र उसपर जमी रही और दूसरे सज्जन ने अपनी बातों पर उसका कोई जवाब न पा कर अपना मुँह फेर लिया था। स्वाति ने जूते पहने और पुजारी के दरवाज़ा खोलने पर झट से बाहर आ पहुँची।

इमारत से बाहर आ कर चैन की साँस लेते हुए स्वाति को बड़ी राहत महसूस हुई। उसका ध्यान सीढ़ियाँ उतरते समय उसके पीछे आते हुए पुजारी से पूरी तरह से हट गया था, इसलिए जब वह इमारत से निकली तो एकदम से पुजारी को अपने सामने पा कर चौंक-सी गयी और उसे तुरन्त पहचान

न पाई। पुजारी ने उसे बताया कि जिन साधू महाराज से वह मिली थे वे सुराजपुरा शिव मन्दिर ट्रस्ट के कर्ता-धर्ता थे, उसके मुखिया थे और रेशमी सफेद कुर्ते-पायजामे में जो इंसान साधू महाराज जी के सामने बैठा था वह विश्व हिन्दु सभा के अध्यक्ष श्री सीतामढ़ी रघुवंशी थे। स्वाति ने इन दोनों के बारे में अख़बारों व अन्य संचार माध्यमों में काफ़ी बार पढ़ा था और उसे थोड़ी हैरानी हुई कि उसे सीधे ही उनके पास ले जाया गया, किसी छोटे पदाधिकारी के पास नहीं। उसने मन-ही-मन हँसते हुए सोचा कि शायद का•का•का का मामला उसकी भाव-भंगिमाओं या एटिच्यूड को एक महत्त्वपूर्ण आयाम दे रहा है जिससे लोग प्रभावित हो रहे थे और उसे भी एक महत्त्वपूर्ण पर्सनैलिटी समझ रहे थे। उसने पुजारी को धन्यवाद देते हुए कहा कि अगर वह उसे अपना टेलीफ़ोन नम्बर दे दे तो वह उससे बाद में सम्पर्क कर पायेगी। तभी अचानक एक जवान अठ्ठारह साल से भी कम लगने वाली लड़की इमारत तक भाग कर आई और उसके पीछे सफेद-लाल साड़ी में दो मिडल एज औरतें। वे औरतें उसे रोकने की कोशिश में थी और लड़की जिस इमारत से स्वाति निकली थी उसमें घुसने की कोशिश कर रही थी। उनकी बहसबाज़ी से लगा कि वह लड़की साधू महाराज यानी स्वामी जी से मिलना चाहती थी और बाकि औरतें उसे उनसे मिलने से रोक रही थीं। स्वाति के साथ खड़ा पुजारी तुरन्त हरक़त में आ गया और उसने उस लड़की को बहुत बलपूर्वक पकड़ लिया। उसने लड़की को औरतों के हवाले किया और कहा कि ध्यान रखें कि वह फिर

से न छूट जाए। स्वाति को यह मामला बहुत अजीब लग रहा था और उसके चेहरे पर हैरानी का भाव आ गया था। पुजारी ने उसे समझाने वाले लहजे में कहा कि वह लड़की उनके अबला नारियों वाले आश्रम से ज़बरदस्ती निकल आई थी और बिना स्वामी जी को बताए ऐसे उनसे नहीं मिला जा सकता था। ऐसी बहुत-सी नारियों की तक़लीफ़ों का निवारण स्वामी जी करते थे पर उनका समय बहुत क़ीमती था इसलिए ऐसे ही किसी से नहीं मिल सकते थे।

स्वाति ने पुजारी का फ़ोन नम्बर अपने मोबाइल में डाल दिया और मन्दिर के अहाते से होते हुए बाहर निकली। इसे पूरे किस्से में वह मन्दिर के अन्दर तो जा ही नहीं पाई। उसने सोचा कि मन्दिर को देखने किसी और दिन आयेगी क्योंकि अब तक शाम हो चली थी और बेहतर था कि वह होटल लौट जाए। उसे अगले दिन अक़बर हैरीसन से मीटिंग की तैयारी भी करनी थी। बाहर निकलकर अनायास ही उसकी नज़र दूर बैठे एक भिखारी पर पड़ी जिसने उस आवारा जैसी ही लुंगी पहन रखी थी जो सुबह उसके ऑटो के सामने आ खड़ा हो गया था। वह एकटक उसे देखती रही और उसे लगा कि वो भी उसे देखकर मुस्कुरा रहा था। पर जब वो उसके पास से गुज़री उसे अपनी गलती का अहसास हुआ। भिखारी न तो मुस्कुरा रहा था और न ही स्वाति पर कोई ध्यान दे रहा था।

उधर राज ने काका शर्मा से काफ़ी देर तक बातचीत की और कुल मिला कर इसी नतीजे पर पहुँचा कि या तो

सुराजपुरा पुलिस मुख्यालय मूर्खों का निवास-स्थान है या फिर का•का•का इतना शातिर है कि सुराजपुरा में रहते हुए वहीं की पुलिस को ज़बरदस्त चूना लगा रहा है। पुलिस मुख्यालय को का•का•का के बारे में कुछ नहीं पता था और न ही उन्होंने कुछ पता लगाने की ख़ास कोशिश की थी। और चूँकि मामला अब सी०बी०आई० में पहुँच गया था तो उन्होंने इस केस से अपना पल्ला झाड़ लिया था। राज ने काका शर्मा को बताया कि उसे सुराजपुरा मस्जिद के बारे में कोई जानकारी मिली है इसलिए वह वहाँ जाना चाहता था। उसने काका से कहा कि वह उसके मस्जिद में प्रवेश करने का इन्तज़ाम करे। काका शर्मा ने कहा कि कोई मुश्किल नहीं थी, जब वह चाहे मस्जिद में जाया जा सकता था। काका शर्मा वहाँ के मस्जिद समिति के सदस्यों से वाक़िफ़ था और उनसे बात कर के मस्जिद में प्रवेश करने में कोई अड़चन नहीं आने वाले थी। राज ने उससे स्वाति की बात करने से पहले थोड़ा सोचा और फैसला लिया कि शर्मा को स्वाति के केओटीवी में का•का•का के मामले पर काम करने वाली बात बताना उचित नहीं होगा। उसने काका से कहा कि उसकी एक महिला मित्र सुराजपुरा मस्जिद के शानदार इतिहास से काफ़ी प्रभावित है और चूँकि वह अब सुराजपुरा में है तो राज उसे भी अपने साथ मस्जिद में ले जाना चाहेगा, पर वह हिन्दु परिवार में पैदा हुई थी, सो क्या उसे मस्जिद में ले जाना संभव होगा? काका शर्मा के मुख पर एक हल्की-सी मुस्कुराहट खिल गयी और वह सब कुछ समझते हुए बोला कि राज को चिन्ता करने की कोई ज़रूरत

नहीं थी, वह अपनी महिला मित्र को मस्जिद में अपने साथ ला सकता था क्योंकि काका शर्मा के मस्जिद वालों से रिलेशन काफ़ी अच्छे थे। उसने यह ज़रूर कहा कि राज की महिला मित्र को मस्जिद के अन्दर अपना सारा शरीर ढक कर रखना होगा, इस मामले में वह उसकी कोई मदद नहीं कर सकता था।

राज ने काका शर्मा को हल्की आवाज़ में थैंक्यू कहा और कहा कि जब भी उसे कोई काम होगा वह उससे सम्पर्क करेगा। पुलिस मुख्यालय से बाहर आते-आते राज सोचने लगा था कि कहीं उसने काका शर्मा से यह एहसान माँग कर गलत तो नहीं किया था? ऑटो में बैठ कर वह अपने गेस्ट हाउस की ओर चला और स्वाति को ले कर अपनी भावनाओं के बारे में और का•का•का केस की सुराजपुरा पुलिस फ़ाइल के बारे में अपने गेस्ट हाउस के कमरे में आराम से सोचेगा, ओल्ड मंक के जामों के साथ। उसे कॉम्पलेक्स इमोशनल परिस्थितियों में शराब पीने से काफ़ी सहायता मिलती थी। कुछ साल पहले ही ऐसे ही एक दिन उसने पैरिस में पूरी रात शराब पी थी और अगली सुबह अमेलिया से अपने बहुत ही स्वीट रिश्ते का अन्त किया था।

शक़ का घेरा

स्वाति की नींद सुबह घड़ी के अलार्म ने तोड़ी। उसे कोई मीठा-सा सपना आ रहा था जिसमें कोई उसका हाथ पकड़ कर एक लम्बे-चौड़े फैले हुए बाग में ले जा रहा था, बाग में तरह-तरह के रंगीन फूल खिले हुए थे और हवा एक सोंधी-सोंधी महक बिखेरते हुए बह रही थी। अलार्म की आवाज़ सुन कर उसकी आँखें अचानक से खुलीं और सपने को याद कर के उसके चेहरे पर एक छोटी-सी मुस्कान दौड़ गयी। रात को सारे दिन की घटनाओं को लिखते हुए और टीवी देखते-देखते वह का•का•का के बारे में सोचती रही। उधर एक नई बात भी उसके मन में घर कर गयी थी, उसे राज का उसके प्रति बर्ताव और अच्छा लगने लगा था... वह उसे अपना एक दोस्त मानने लगी थी। उसे राज के बात करने का ढंग और उसकी शान्त प्रकृति इम्प्रेस करने लगे थे, स्वाति का राज पर विश्वास बढ़ता ही जा रहा था।

पूरी तरह से तैयार हो कर उसने अपना लैपटॉप उठाया और होटल के रिसेप्शन में कमरे की चाबी छोड़ कर

बाहर निकली। एक ऑटो वाले को आवाज़ लगा कर उसने उसे नवाबी डीएलएफ हाइट्स इलाके का नाम बताया तो ऑटो वाले ने उसे कहा कि वहाँ जाने के लिए उसे मीटर से पचास रुपए ज़्यादा देने होंगे। पूछने पर उसने बताया कि चूँकि वह बहुत अच्छी कॉलोनी थी, जहाँ सिर्फ़ अमीर लोग ही रहते थे इसलिए वहाँ कोई सवारी नहीं मिलती थी, वहाँ सब रहने वालों के पास अपनी-अपनी गाड़ियाँ थीं। स्वाति ने पचास की बजाय तीस रुपये कहा और थोड़ा ना-नुकुर करने के बाद ऑटो वाला मान गया। स्वाति ने उसका चेहरा पास से देखा तो उसे दिल्ली के उस ऑटो वाले की याद आ गयी जिसने उसे जहाँगीरपुरी के जेजे कॉलोनी में का•का•का के भण्डारों के बारे में पहली बार बताया था। दो हफ़्तों के बाद जब स्वाति ने उसे फ़ोन किया था तो उसने स्वाति को कहा कि अगले रविवार को ही का•का•का का आख़िरी भण्डारा होने वाला था। स्वाति ने उसे कहा कि वह अगले रविवार को उसके घर आ कर उसे ऑटो में अपनी कॉलोनी के भण्डारे में ले जाए। उसने ऑटो वाले को अपनी मौसी के घर का पता और अपना टेलीफ़ोन नम्बर भी दे दिया ताकि जगह न मिलने पर वह उससे कोन्टैक्ट कर सके।

जब ऑटो वाले ने उसे भण्डारे के टेन्ट के सामने उतारा तो उसे वहाँ कुछ अलग-सा नहीं लगा। उसने ऑटो वाले को उसका किराया दिया और ऊपर से सौ रुपए भी दे दिए। वह ख़ुश हो गया और स्वाति को टेन्ट के अन्दर ले गया। वहाँ एक अधेड़ मोटा आदमी कुरसी पर बैठा था और

उसके हाथ में एक डण्डा था। स्वाति खाने के समय से दो घण्टे पहले वहाँ पहुँच गयी थी, उसने सोचा था कि शायद उसे का•का•का का कोई सुराग़ मिल जायेगा। मोटे आदमी ने उसे अन्दर जाने से मना किया और कहा कि अभी खाने का समय नहीं हुआ था और हलवाई अन्दर खाना बना रहे थे। स्वाति ने उससे पूछा कि वह भण्डारा किस के आदेश पर हो रहा था तो वह बोला कि उसे कुछ नहीं पता था। उसे अन्दर जाने वालों की चौकीदारी करने के पैसे मिल गये थे और वह इससे ज़्यादा कुछ नहीं जानता था। स्वाति ने पूछा कि उसे पैसा कहाँ से मिला तो चौकीदार ने कहा कि अन्दर हलवाई ने उसे पैसा दिया था पर अभी उससे नहीं मिला जा सकता था। ऑटो वाले ने उससे पूछा कि क्या आज आख़िरी भण्डारा था तो उसने बताया कि हाँ उसे यही कहा गया था और आज भण्डारा सब के लिये खुला था, बच्चों, जवानों, बूढ़ों, मर्द, औरतों सब के लिए... पर जो भी अन्दर खाने जाने वाला था उसे एक काग़ज़ और एक पैकट दिया जायेगा और उसे पढ़ने के बाद ही उसे अन्दर खाने के लिए जाने दिया जायेगा। स्वाति बहुत सरप्राइज़ हुई और उसने टेन्ट के आस-पास थोड़ी नज़र मारी और ऑटो वाले से कहा कि वह आस-पास थोड़ा चक्कर लगाना चाहती थी, क्या पता का•का•का के बारे में कोई चीज़ पता चल जाए।

कॉलोनी के घरों में स्पष्ट तौर पर गरीब क्लास के लोग ही रहते थे। घरों की हालत बुरी थी, बच्चे नंगे इधर-उधर घूम रहे थे, औरतें बाहर बैठी आपस में बतिया रही थीं,

काफ़ी मर्द भी फुटपाथों पर बैठे हुए थे। उनमें से काफ़ी शराब पिए हुए लग रहे थे। स्वाति को अच्छे कपड़ों में देख कर कुछ बच्चे उससे हाथ फैला-फैला कर पैसे माँगने लगे। ऐसे ही एक बच्चे को उसके शराब में धुत पिता ने स्वाति से पैसे माँगते हुए देख कर एकदम से एक थप्पड़ रसीद कर दिया और उसे खींचते हुए स्वाति के पास से ले गया। बच्चा थोड़ी देर तो रोता रहा फिर दूसरे बच्चों के पास जा कर चुप हो गया, लगा जैसे कि उसे थप्पड़ खाने की आदत पड़ चुकी थी। घरों के बाहर और सड़क, फुटपाथों पर बैठी सारी औरतें, मर्द और बच्चे गन्द से अटे हुए थे शायद वो सभी भण्डारे का इन्तज़ार कर रहे थे।

स्वाति को गरीबों में तो कोई ख़ास रुचि नहीं थी, उसकी नज़र तो तेज़ी से कॉलोनी के नुक्कड़ों, आड़ी छिपी जगहों, घरों की छतों वगैरह पर तिर रही थी या किसी भी ऐसे आदमी, औरत या बच्चे की खोज में थीं जो उसकी नज़रें चुराने की कोशिश में हो। पर नहीं, उसे कहीं भी ऐसा कुछ नहीं मिला जो शक़ के दायरे में हो, जिससे लगे कि का•का•का या फिर शायद उसके समूह के लोग भण्डारे का दूर से निरीक्षण कर रहे हों। स्वाति कुछ परेशान-सी हो गयी, शायद अन्दर से उसे इतनी गरीबी, इतने बुझे हुए लोग और बदहाली देखना नहीं भाया। उसके दिमाग ने उसे एक बायो-साइकोलोजिकल संकेत भेजा और उसकी सिगरेट पीने की इच्छा जागृत हो गयी। ऑटो वाला उसके साथ-साथ ही चल रहा था, और उसके सामने सिगरेट पीने की जुर्रत वह नहीं कर

सकती थी। भारत में एक महिला को सिगरेट पीते देखना अधिकतर मर्दों के बस की बात नहीं है। यह अच्छा नहीं समझा जाता है और औरतों पर बुरी नज़रों का जाल घिर जाता है। इसलिए स्वाति हमेशा ऐसे पुरूषों के साथ में ही सिगरेट पीती थी जो मर्द और औरतों को एक समान मानते थे और महिलाओं को हमेशा जांचते ही नहीं रहते थे, उन पर अपने दकियानूसी फैसले नहीं सुनाते रहते थे। उसे लगा जहाँगीरपुरी कॉलोनी में सब के सामने सिगरेट पीना अच्छा नहीं होगा क्योंकि आर्थिक तौर से निचले क्लास के मर्दों के बारे में उसकी राय कुछ अच्छी नहीं थी। उसे ख़्याल नहीं आया कि निचले क्लास की बहुत-सी औरतें बीड़ी वगैरह पीती थीं, परन्तु यह बात सही थी कि औरतों को मर्दों के सामने यह आज़ादी नहीं दी जाती है। स्वाति ने अपनी सिगरेट पीने की इच्छा को कंट्रोल किया और वह हलवाई को ढूँढने टेन्ट के पीछे की ओर बढ़ी। तभी उसके मोबाइल की घण्टी बजने लगी। जब उसने फ़ोन अपने बैग से निकाला तो देखा कि उसके मॉडल टाउन वाली मौसी के लड़के का फ़ोन था, वही लड़का जो रॉक म्यूज़िक गाता था। उसकी उमर स्वाति से दो-एक साल ज़्यादा ही थी और चूँकि वह बहुत शान्त लड़का था स्वाति उसे का•का•का के बारे में सब कुछ बता चुकी थी। सिद्धार्थ ने तो यह तक कहा था कि वह का•का•का का प्रशंसक बन गया था। वह मानता था कि अगर वह अपने म्यूज़िक और गानों से का•का•का के द्वारा किए गये कारनामों का एक परसेंट हिस्सा भी कर सके तो वह बहुत ख़ुश होगा।

सिद्धार्थ कहता था कि आज की तारीख़ में न्याय अमीरों, ताक़तवरों और पावरफुल लोगों के हाथ में ही है। उसके अनुसार का•का•का का मकसद उन क़ातिल इमोशन्स, उन क़ातिल विचारों, उन क़ातिल हिस्सों का अन्त करना है जो हम इंसानों के दिलों-दिमागों में रहते हैं। उसने समझाया कि का•का•का का क़ातिल शब्द से मतलब उसका शाब्दिक अर्थ नहीं था, उसका क़ातिलों का क़ातिल से मतलब सिम्बोलिक था। इसीलिए उसके अनुसार का•का•का कभी भी जिनपर धावा बोलेगा उनके जीवन का अन्त नहीं करेगा, चाहे भले ही उन्होंने इनडायरेक्ट्ली पता नहीं कितने ही लोगों की जानें ली हों। सिद्धार्थ मानता था कि भारतीय समाज को का•का•का जैसे लोगों की बहुत ज़रूरत थी, क्योंकि यहाँ काफ़ी गन्दगी ने जगह बना ली थी, और सामाजिक सफ़ाई करने के लिए दिल नहीं दिमाग से काम लेना होता है, चालाकी से उन पर हमला करना पड़ता है जिनके कदम सीमाओं से इतने बाहर पड़ चुके हैं कि वे सोसायटी के लिए ख़तरा बन चुके हैं। सिद्धार्थ की राय में का•का•का अपने जलवों से उन लोगों को डराना चाहता था जो अपने काण्डों से समाज का बेहद नुक्सान करते हैं, और इसके साथ-साथ का•का•का समाज में एक नई चेतना का भी निर्माण करना चाहता था जिससे लोगों को समझ आए कि एक समाज में सबका समान स्थान है, और एक्सप्लॉयटेशन में दोनों, एक्सप्लॉयट करने वाला और होने वाला, समान तरीके से ज़िम्मेदार होते हैं। सिद्धार्थ ने स्वाति से गुज़ारिश की थी कि वह उसे का•का•का की सारी इनफोरमेशन

देती रहे। स्वाति ने सिद्धार्थ की बातों को बहुत ध्यान से सुना था और उसके आइडिया अपनी कॉपी में लिख लिए थे।

स्वाति ने जवाब देने के लिए फ़ोन का बटन दबाया और उसे सिद्धार्थ की शान्त आवाज़ सुनाई दी। उसकी आवाज़ सुन कर स्वाति को राहत मिली क्योंकि वह का•का•का की मौजूदगी की कोई भी निशानी मिलने पर थोड़ी बदहवासी हो गयी थी। सिद्धार्थ को पता था कि वह का•का•का के जहाँगीरपुरी वाले भण्डारे में जाने वाली थी और इसलिए उसने उसे फ़ोन किया था। स्वाति ने उसे कहा कि उसे अभी तक कुछ नहीं पता चला था। सिद्धार्थ ने कहा कि अगर वह चाहे तो वह वहाँ आ कर उसका साथ दे सकता था। पर स्वाति ने सोचा कि यह ठीक न होगा क्योंकि उसे बॉस से का•का•का की बात अपने तक ही रखने की इंस्ट्रक्शन मिली हुई थी, जबकि वह सिद्धार्थ को काफ़ी कुछ बता चुकी थी और इसलिए अन्य कोई गड़बड़ होते नहीं देखना चाहती थी। उसने सिद्धार्थ को कहा कि वह उसे बाद में फ़ोन करेगी और बतायेगी कि वह आए या नहीं।

फोन पर बात करते-करते स्वाति हलवाई के टेन्ट के पिछले भाग में रसोइयों को आर्डर देते देख रही थी। उन सब के चारों ओर टेन्ट वाले परदे लगे हुए थे, जिनकी ऊँचाई दस मीटर थी। स्वाति फ़ोन बन्द कर के ऑटो वाले के साथ वहाँ पहुँची और उसने मेन हलवाई को बुलाया और उससे पूछा कि उसे खाना बनाने का काम किसने दिया था। हलवाई उसके पास नहीं आया और दूर से ही पूछने लगा कि वह कौन थी। स्वाति ने कहा कि वह केओटीवी से आई थी और भण्डारे के

बारे में जानकारी लेना चाहती थी। हलवाई कोई लोकल आदमी ही लग रहा था, कॉलोनी में रहने वाले बाशिन्दों में से एक। उसने कहा कि उसे कुछ पता नहीं था, उसे यह खाना बनाने के पैसे दिए गये थे और कहा गया था कि चौकीदार भी रखे। उसके एक जानने वाले ने उसे ये पैसे दिए थे और कहा था कि खाना बनवाने वाली पार्टी ख़ुद भण्डारे में नहीं आयेगी और न ही वह उसे देख पायेगा। उसके जानने वाले ने उसे कुछ छपे हुए काग़ज़ और पैकट भी दिए थे जो उन लोगों में बाँटने थे जो खाना खाने आने वाले थे। फिर हलवाई चुप हो गया। स्वाति के और कुरेदने पर उसने बताया कि उसे और कुछ नहीं पता था, वह यह भण्डारा पहली बार कर रहा था। उसे पता था कि हर महीने यह भण्डारा वहाँ होता था पर हर बार ही कोई अलग हलवाई काम करता था। उसने कहा कि उसे तो सिर्फ़ पैसे से मतलब था और काम करने से। स्वाति ने उससे उस आदमी का अता-पता पूछा जिसने उसे पैसे दिए थे तो वह कुछ नहीं बोला। स्वाति ने जब बार-बार पूछा तो वह बोला कि मैडम आप इस पचड़े में न पड़ो, यह कोई बड़ा आदमी है जिसे कोई तक़लीफ़ होगी और किसी ज्योतिषी ने उसे बिना अपना नाम ज़ाहिर करे ग़रीबों को खाना बाँटने के लिए कहा होगा... और उसे अपना मुँह बन्द रखने के लिए मेहनताना मिल चुका था इसलिए वह और कुछ नहीं बता सकता था। स्वाति चकरा गयी। हलवाई की बातों से लग रहा था कि सच में ही हो सकता था कि किसी ने अपना नाम ज़ाहिर किए बिना ही ग़रीबों को खाना खिलाने का बीड़ा

उठाया हो, भारत के ज्योतिषियों की इमैजिनेशन शक्ति विश्व में सबसे अधिक होती है। पता नहीं कहाँ-कहाँ से गड़बड़ें, मुश्किलें, विघ्न, आपात-काल, अरजेन्ट स्थितियाँ बनाई और ढूँढी जाती हैं और उनके नाना प्रकार के इलाज बताए जाते हैं। पर फिर उसे समझ आया कि का•का•का ने यह योजना हलवाइयों और भण्डारे के लिए बाकि काम करने वाले लोगों के शक़ को दबाने के लिए बनाई होगी। उसे एहसास हुआ कि अगर हलवाई उसे उस आदमी का पता बता भी दे जिसने उसे पैसे दिए थे तो भी वह का•का•का के बिछाए जाल को नहीं तोड़ पायेगी, क्योंकि का•का•का ने अपने हर कदम पर कोई कहानी बुन रखी थी। उसे का•का•का के दिमाग की कारस्तानियों पर हैरत हुई और साथ-साथ उसके मन में का•का•का की वाह-वाह करने की इच्छा हुई।

जब वह कुछ देर हलवाई का मुँह ताकते-ताकते खड़ी रही तो ऑटो वाले ने उसे कहा कि वह और कुछ नहीं बताने वाला था। वह हलवाई से किसी भी उत्तर की अपेक्षा किए बिना वहाँ से चल दी। वो टेन्ट के मुहाने पर खड़े हो कर भण्डारे के खुलने का इन्तज़ार करने लगी। एक पल के लिए स्वाति के मन में विचार कौंधा कि राज मलहोत्रा को फ़ोन लगा कर उसे भी वहाँ बुला ले, लेकिन फिर उसने सोचा कि इस भण्डारे का पता उसी ने पहले लगाया था, और सी०बी०आई० अगर यहाँ भी पहुँच गयी तो हो सकता था कि उनके साथ का•का•का की कोई निशानी बाँटनी पड़े और उसके हाथ से मामला निकल जाए।

थोड़ी देर बाद हलवाई द्वारा इशारा करने पर चौकीदार ने एक-एक कर के सबको अन्दर जाने दिया। अन्दर जाने से पहले वह हरेक को एक काग़ज़ और एक पैकट देता रहा, और जब तक अन्दर जाने वाला इंसान वह काग़ज़ पढ़ नहीं लेता था उसे अन्दर जाने की मनाही थी। अकेले आए बच्चों को चौकीदार कहता कि वे किसी बड़े के साथ आएँ। स्वाति और ऑटो वाला भी टेन्ट से हो कर अन्दर गये। स्वाति ने पैकट तो नहीं खोला पर काग़ज़ हाथ में ले कर पढ़ने लगी। काग़ज़ पर लिखा था :

स्वतंत्र, गणतान्त्रिक और जनवादी भारत के निवासियों,

इस पर्चे के द्वारा आपसे एक रिक्वेस्ट की जा रही है। यह रिक्वेस्ट आपके हित में ही है। हमारी जनसंख्या दिन-ब-दिन बढ़ती ही जा रही है... और हमारे संसाधन दिन-ब-दिन घटते ही जा रहे हैं। हमारे अमीर लोग और अमीर होते जा रहे हैं और ग़रीब और ग़रीब। दुनिया में भी यही हाल है और भारत दुनिया से अलग नहीं है। इसके कई कारण हैं पर यह भी सत्य है कि लालच, घृणा, हिंसा जैसी भावनाओं ने भारतीयों में घर बना लिया है। आपसे पहला अनुरोध यह है कि भारत में काम-क्रान्ति लाएँ। काम-क्रान्ति से मतलब है कि सेक्स, यानी काम-क्रीड़ा, शारीरिक प्रेम को घिन्न ना समझा जाए। काम-क्रीड़ा इंसान की सबसे आनन्ददायी भावनाओं में से एक है और प्रकृति का मनुष्यों के बीच शान्ति रचने का एक अचूक बाण भी है। पण्डे-पुजारियों,

मुल्लों-मौलवियों, पादरियों और गुरुओं वगैरह ने सदियों से आपको झूठ बोला है, किसी भी धर्म में शारीरिक प्रेम को तुच्छ नहीं माना गया है और अगर कोई इसके विपरीत कहता है तो वह झूठ कह रहा है। तो सेक्स को बुरी नज़र से मत देखिए, फ़िल्मों में, रेडियो में, नाटकों में, साहित्य में, आम जीवन में जितनी सेक्स सम्बन्धी चर्चाएँ, कार्यक्रम, बातचीत, आदान-प्रदान चाहें वे करें, इस मुद्दे को इतना साफ़ कर दें कि कोई इसे धूमिल कर फिर से किसी को भी बेवकूफ़ न बना पाए। सेक्स रचना का एक यूनीक भाव है, इसे नष्ट न करें। दूसरा अनुरोध है कि काम-क्रीड़ा करते समय, प्रेम करते समय कंडोम व अन्य गर्भ-निरोधक प्रणालियों का उपयोग अवश्य करें। आपको कुछ कंडोम यहाँ भेंट में प्रस्तुत किए गये हैं। समझिए कि अधिक बच्चों की बजाय कम लेकिन शिक्षित, समझदार और अच्छे बच्चे पैदा करना ही आज की तारीख़ में हमारा राष्ट्र धर्म है। हमें अपनी अधिकांश ग़रीब जनता को आगे बढ़ाना है और कम बच्चे पैदा कर के हम यह ग्रोथ ज़रूर हासिल कर पाएँगे। जब स्थिति सामान्य हो जायेगी, जब सब नवजातों के लिए भरपूर संसाधन, रिसोर्स होंगे तब हम फिर से अपने प्रेम की इन लाजवाब निशानियों को जितना चाहें पैदा कर पाएँगे। पर अभी संयम कीजिए, कंट्रोल रखिए, और हाँ काम-क्रान्ति लाइये... अपने अन्दर झांकिए और फैसला लीजिए, आप पाएँगे कि जो भी यहाँ कहा गया

है बिल्कुल सत्य है और आपके हित में है। हमारा कोई और ध्येय नहीं है सिवाय हम सबकी भलाई के, आप ख़ुद ही देख लीजिए, आपको इतने समय से खाना दिया जा रहा है, और बदले में आप से सिर्फ़ यही दो अनुरोध कर रहे हैं, सो ध्यान दीजिए। ख़ुद को बदलेंगे तो दुनिया बदलेगी!

आपकी जानकारी के लिए इन भण्डारों के आयोजन का सारा पैसा हमने सोसायटी के भ्रष्ट सदस्यों की जेबों से लिया है, कहीं चुरा कर और कहीं उन्हें फंसाकर। पर मूल तौर पर यह आपका ही पैसा है, अगर आपको भारत के भ्रष्ट व्यापारियों, नेताओं, अभिनेताओं, बड़े या छोटे पर मोटे सरकारी अफ़सरों इत्यादि से पैसा छीनने का मौका मिले तो बिल्कुल न हिचकियेगा, यह आपका जन्मजात अधिकार है!

और सबसे नीचे एक लाल खाने में सुनहरी अक्षरों में का•का•का लिखा था। स्वाति काग़ज़ को पढ़ने के बाद टेन्ट के अन्दर घुसी। काफ़ी अच्छा प्रबन्ध किया गया था। काफ़ी भिन्न-भिन्न सब्ज़ियों और चावल व दाल से मेज़ें सजी हुई थीं। स्वाति के साथ ऑटो वाला भी अन्दर आया था और उसने स्वाति से पूछ कर खाना प्लेट में डाल कर खाना शुरू कर दिया था। मेज़ के शुरुआती हिस्से में सलाद भी पड़ा था। स्वाति ने सलाद से अपनी प्लेट भरी और एक औरतों के ग्रुप की ओर बढ़ी। अब चौकीदार ने बाहर पंक्ति बनाए अन्य लोगों को अन्दर आने से मना कर दिया था क्योंकि टेन्ट में

केवल पचास व्यक्तियों की जगह थी। चूँकि यह भण्डारा काफ़ी समय से हो रहा था इसलिए लोग भी शान्त थे, उन्हें पता था कि वहाँ सबको खाना मिलने वाला था। हालाँकि चौकीदार ने सबको पहले से ही बता दिया था कि उस दिन मर्द भी भण्डारे में आ सकते थे फिर भी शुरूआत में कुछ कम ही मर्द आए। अब धीरे-धीरे उनकी तादाद पंक्तियों में बढ़ रही थी क्योंकि लोगों ने आपस में बातचीत कर के यह बात फैला दी थी। चौकीदार ने एक और बात कही थी कि उस दिन भण्डारा शाम के छः बजे तक ही चलने वाला था, इसका मतलब था कि उन लोगों को ही खाना मिलने वाला था जो छः बजे तक टेन्ट के अन्दर घुसने वाले थे। क्यू में खड़े लोग यही हिसाब लगा रहे थे और अपने जानने वालों, दोस्तों, रिश्तेदारों आदि को फ़ोन कर रहे थे या दूसरों को क्यू में अपना स्थान रखने का कह कर अपने जानने वालों को ढूँढ कर यह बात बताने चले गये थे। पर फिर भी ऐसा नहीं लग रहा था जैसे कि यह पहली बार हो रहा हो। सब कुछ एक सुनिश्चित रफ़्तार से चल रहा था, जो तेज़ की बनिस्बत मध्यम ही थी। लोगों में हफ़ड़ा-दफ़ड़ी नहीं दिख रही थी।

स्वाति अपनी प्लेट हाथ में लिए औरतों के एक समूह के पास पहुँची और उनसे दुआ-सलाम की। चेहरे-मोहरे से वे औरतें हिन्दु ही लग रही थीं। उनमें से कुछ अपने नन्हें बच्चों के साथ आई हुई थीं, और उन्हें अपने साथ-साथ खाना खिला रही थीं। स्वाति को उनके भावों से लगा कि वे औरतें आपस में कोई राज़ की बातें कर रही थीं जो उसके आने पर रुक

गयी थीं। स्वाति ने माहौल में फ्रेशनेस लाते हुए सीधे ही उनसे पूछ लिया कि क्या वे का•का•का को जानती थीं। सभी औरतें ठठा कर हँस पड़ीं और बोलीं की वे का•का•का को ख़ूब जानती थीं क्योंकि उसका खाना, उसका नमक बहुत समय से खा रहीं थीं। स्वाति ने उनसे पूछा कि क्या उन्होंने वह काग़ज़ पढ़ा है जो आज उन्हें दिया गया था। औरतें अबकी बार ज़ोर से हँसने की बजाय मुस्कुरा उठीं और उनमें से एक बोली कि उसने अपनी सारी सहेलियों को वह काग़ज़ पढ़ कर सुनाया था, और वे सब वही बात कर रही थीं। उसने स्वाति को बताया कि काग़ज़ में सही बातें लिखी थीं, ऐसा सभी औरतें मानती थीं, पर मर्द ज़ात को ये बातें कभी समझ नहीं आने वाली थीं। इसलिए उन औरतों को पता नहीं चल रहा था कि वे क्या करें। स्वाति के पूछने पर उसी औरत ने बताया कि वे सारी औरतें मज़दूरी करती थीं, और उनमें से अधिकतर के पति भी मज़दूरी करते थे। उस औरत का नाम मुन्नी था और स्वाति को उसपर एकदम से इतना विश्वास हो आया कि वह उसके साथ एकदम सहज-स्वाभाविक रूप से एक क़रीबी सहेली की तरह बात करने लगी। शायद उस लड़की की आवाज़ में एक तरह की नज़दीकी थी जिसे स्वाति ने कभी भी अपनी शहरी सहेलियों में नहीं पाया था। सच बात तो यह थी कि वह पहली बार अपने से इतनी अलग क्लास की ग़रीब औरत से इंसानों की तरह बात कर रही थी। का•का•का की खोज ने उसके मन के भीतर से, उसके आवाज़ से वह मालिकाना लहजा मिटा दिया था जिसे अब तक इस्तेमाल कर

वह ग़रीब क्लास की औरतों से आम तौर पर बात करती थी, जैसे उसके घर की कामवाली या उसकी माँ की एसिस्टेन्ट वगैरह। चूँकि मुन्नी ने ही उन सारी औरतों के बीच में से उसे जवाब दिया था तो उसने मुन्नी को उनका प्रतिनिधि-सा मान लिया। बाकि औरतें आपस में बोलती-चालती रहीं और स्वाति ने मुन्नी से पूछा कि क्या उसने कभी का•का•का को देखा था? या अब यह काग़ज़ पढ़ने के बाद क्या वह अपने जीवन को बदलने वाली थी, उसमे सेक्स क्रान्ति लाने वाली थी? मुन्नी ने कहा कि उसने का•का•का को कभी नहीं देखा था पर उसके और अन्य औरतों के लिए वह बहुत सम्माननीय था। उन्हें सम्पूर्ण भारत में सबसे कम मज़दूरी मिलती है ज़बरदस्त मेहनत का काम करने के बावजूद भी और उनके परिवारों के खर्चे नहीं चल पाते, और का•का•का इतने समय से उन्हें कुछ दे रहा है... मुन्नी बोली कि वह जो भी था उसकी बातें उन्हें सच्ची लगती थीं और वह अपने छोटे तरीके से ही उसके अनुरोधों का पालन करेगी। उसे लगता था कि औरतों को भारतीय समाज में भोग की वस्तु समझा जाता था, और अब औरतों को उन व्यक्तियों का भोग करना चाहिए जो ऐसा समझते थे। मुन्नी ने स्वीकारा कि वह कुछ बड़ा करने के लिए बहुत छोटी थी, वह एक विशाल सागर में सिर्फ़ एक बूँद के समान थी, पर उसे का•का•का की बातें एकदम सही समझ आती थीं।

स्वाति को मुन्नी की बातों में वज़न लगा। उसकी ख़ुद की विचार-व्यवस्था, थॉट प्रोसेस में नये आयाम खुल रहे थे।

मुन्नी और अन्य औरतों को वहाँ ख़ुश देख कर, और आराम से का•का•का की बातों को समझते देख कर उसके पूर्वाग्रह भी मिट रहे थे। जिस माहौल में वह पली-बढ़ी थी वहाँ कभी निचले वर्गों पर अधिक ध्यान नहीं दिया जाता था, उन्हें दरकिनार कर दिया जाता था। अधिकतर जवान भारतीय जो सुरक्षित परिवेशों में रहते हैं वे समझते हैं कि बहुत पैसा कमाना बहुत आम इच्छा है, और सारे लोग उनके जैसे ही होते हैं... उन्हें कड़वी सच्चाईओं का ज्ञान नहीं होता है। उन्हें यह नहीं पता होता है, या फिर वे मानना ही नहीं चाहते कि उनके सजे-संवरे संसारों के हाशियों में एक काला भारत बसता है, कि भारत के कुछ पिछड़े इलाकों में पानी की जगह कुछ लोग बकरियों का पेशाब तक पीते हैं क्योंकि वहाँ पानी की बहुत सीरियस समस्या है, कि उड़ीसा के आदिवासी इलाकों में कुछ औरतें सारी ज़िन्दगी एक ही साड़ी पहने गुज़ारती हैं, कि भारत के अधिकतर मासूम, भोले-भाले और अनगिनत क्षमताओं वाले बच्चे बचपन से ही मज़दूरी शुरू करते हैं और पूरी लाइफ मज़दूरी ही करते रहते हैं...

स्वाति को उसी समय, उस टेन्ट में एक तीव्र इमोशन का एहसास हुआ जिसने उसके भूत, वर्तमान और भविष्य को एक कर दिया। स्वाति ने सोचा कि इस अनुभव के बारे में बाद में अपने दोस्तों को जीवन भर बतायेगी, एक ऐसी घटना के रूप में जिसने उसे पत्रकारिता में बने रहने के लिए प्रेरणा दी। उस अनूठे पल में उसे प्रतीत हुआ कि सब इंसान एक जैसे हैं, सब एक ही चेतना के भिन्न-भिन्न रूप हैं, चाहे वे

बाहरी तौर पर और सामाजिक व आर्थिक तौर पर कितने ही अलग क्यों न हों। मित्रों उसने महसूस किया कि इस अनुभव के लिए वह हमेशा का•का•का की ऋणी भी रहेगी। उस पल में उसे अपने भाई सिद्धार्थ के विचार भी पूर्ण रूप से समझ आ गये, उस एक ही क्षण में जैसे उसकी काया-पलट हो गयी... पर बाहरी तौर पर सब कुछ वैसे का वैसा ही था... मुन्नी उसके चेहरे की ओर देख रही थी, बाकि औरतें आपस में बातचीत कर रही थीं, ऑटोवाला पास ही खड़ा हो कर मज़े से खाना खा रहा था, और टेन्ट में जैसे एक आनन्द की लहर दौड़ रही थी। सब लोग सन्तुष्ट हो कर खाना खा रहे थे। मुन्नी से बात करते हुए कि उसे लगा कि सिद्धार्थ को फ़ोन करना ज़रूरी था और उसने झट से फ़ोन लगाया और उसे कहा कि अगर वह वहाँ आ सकता था तो अवश्य आए, क्योंकि वह उसे वहाँ सबसे मिलाना चाहती थी। स्वाति की एक्साइटमेंट भरी आवाज़ सुन कर सिद्धार्थ को लगा कि शायद स्वाति को का•का•का मिल गया।

सिद्धार्थ अपनी बुलेट मोटरसाइकिल फटफटाता हुआ आधे घण्टे के भीतर स्वाति के बताए हुए पते पर पहुँच गया।

मोटरसाइकिल को सड़क के किनारे पर खड़ा कर वह टेन्ट में घुसने के लिए क्यू में खड़ा हो गया। अन्दर से स्वाति ने उसे देख कर अपना हाथ हिलाया... चौकीदार द्वारा दिया जाने वाला काग़ज़ पढ़ कर सिद्धार्थ के चेहरे पर प्रशंसा का एक गहरा भाव छा गया।

दोस्तों, स्वाति और सिद्धार्थ उस दिन काफ़ी समय

मुन्नी और उसकी सहेलियों के साथ रहे। लेकिन स्वाति को का•का•का का कोई सुराग नहीं मिला। मुन्नी ने दोनों को भण्डारे के बाद अपने घर बुलाया और स्वाति और सिद्धार्थ से जी भर के बातें कीं। स्वाति को उस दिन अपनी इंसानियत का पूरा-पूरा अहसास हुआ और उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि सिद्धार्थ उस संसार में काफ़ी रमा हुआ था। उसे इस दुनिया का काफ़ी भान था भले ही वह भी उसी सुरक्षित माहौल में पला-बढ़ा था जिसमें स्वाति भी पली-बढ़ी थी। शायद संगीत सुनने और उसकी रचना करने से उसके चक्षु खुल गये थे। जब वे चाय वगैरह पी कर मुन्नी के घर से निकले तब तक सूरज ढल चुका था और टेन्ट जनता के लिए बन्द हो चुका था। हलवाई के आदमी और चौकीदार सब सामान समेट रहे थे। बड़ी-बड़ी मूँछों वाला एक दुबला-पतला आदमी जिसमें आँखें पर एक सस्ता-सा रंग-बिरंगे लेंस वाला चश्मा पहन रखा था टेन्ट को उतरते देख रहा था। वह सिद्धार्थ की मोटरसाइकिल पर अपना पैर जमाए बैठा था और जब सिद्धार्थ ने उसे पाँव हटाने को बोला तो वह घूर-घूरकर उसे देखने लगा। जब वह टस से मस न हुआ तो स्वाति ने भी उसे पाँव हटाने को बोला। स्वाति उसके थोड़ा समीप आई तो उसे एक महँगे कोलोन की हल्की-सी गंध आई जो उसे अच्छी लगी। तभी दूर से हलवाई की आवाज़ आई :

"अरे मैडम ये तो गूंगा-बहरा है, इसने आज पहली बार ही हमारे साथ काम में हाथ बटाया है, पर ये भी आपके का•का•का जितना ही रहस्यमयी है, हमें तो पता ही नहीं कहाँ

का है।"

स्वाति ने बात को समझा और उस आदमी के और समीप जाकर उसे मोटरसाइकिल से पाँव हटाने का इशारा किया। वह समझ गया और पाँव हटाकर उसने अपनी जेब से एक पर्ची निकाली और स्वाति के हाथ में दे दी। पर्ची पर यह लिखा था :

"मेरा नाम काली है, मैं सुराजपुरा से हूँ। सुराजपुरा देश का सबसे अच्छा शहर है।"

स्वाति को लगा कि शायद भगवान उसे सुराजपुरा जाने के लिए संकेत भेज रहा है। उसे उस आदमी पर दया भी आई और उसने एक काग़ज़ पर बड़े-बडे अक्षरों में 'हेल्प इन सुराजपुरा' और अपना मोबाइल नम्बर लिख कर उसे दे दिया। उसे यकीन हो चला था कि उसका अगला पड़ाव सुराजपुरा ही था।

तब तक सिद्धार्थ अपनी मोटरसाइकिल उठा चुका था और स्वाति को पीछे बैठा कर दोनों वहाँ से भट-भट करती बुलेट पर निकल गए। घर पहुँच कर दोनों ने जल्दी-जल्दी खाना खाया क्योंकि सिद्धार्थ ने स्वाति को बताया था कि उन दिनों दिल्ली के गंधर्व महाविद्यालय में पलुस्कर समारोह चल रहा था और उस दिन पण्डित कशालकर का गायन आयोजित किया गया था। सिद्धार्थ के अनुसार दिन का अन्त इससे बेहतर तरीके से नहीं किया जा सकता था। स्वाति ने कभी भी हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत पर अपने कान नहीं लगाए थे पर

उसे सिद्धार्थ पर विश्वास था और उसने सोचा कि इस तरह से वह भारतीय संस्कृति को बेहतर जान पायेगी।

अगर आप दिल्ली से वाक़िफ़ हैं तो कल्पना कीजिए कि मण्डी हाउस के कमानी सभागार में यह समारोह आयोजित किया गया था और वहाँ माहौल बहुत ही सौहार्दपूर्ण था। अंग्रेज़ी संगीत के समारोहों के विपरीत यहाँ सब लोग शान्त थे, और एक बहुत मौलिक, लोकल आभिजात्य लोगों के चेहरों से प्रकट हो रहा था, कोई हबड़ा-दबड़ी नहीं थी, सब कुछ आत्मसात हो रखा था। बातें हिन्दी ज़ुबान में हो रही थीं, और वह भी पूर्ण विश्वास के साथ और पूर्ण विश्वास में। पण्डित कशालकर की गौरवमय, बादल-गर्जन करती श्रुतियों ने सिद्धार्थ और स्वाति को सम्मोहित कर दिया, और वे उनके रंग में रम गये... स्वाति ने सभागार में प्रवेश से पहले इस बात पर ज़रूर सोचा था कि क्या उस परिवेश में भी का•का•का कोई कारनामा कर सकता था?

पाठकों इसे इमोशनल उत्तेजना कहिए या फिर वक़्त की नज़ाक़त, सभागार के अन्दर पण्डित कशालकर का गरिमामय गायन सुनने के कुछ मिनटों बाद ही स्वाति ने बगल की कुर्सी पर बैठे अपनी मौसी के लड़के का हाथ अपने हाथ में ले लिया, और सिद्धार्थ ने भी हाथ खींचने का साहस नहीं किया। अन्तिम राग ख़त्म होने पर स्वाति और सिद्धार्थ ने अंधेरे में एक-दूसरे की ओर देखा और स्वाति के मुलायम होंठ सिद्धार्थ के होठों से जुड़ गये।

* * *

मित्रों वापस चलें सुराजपुरा के उस ऑटो में जिसमें सवार हो कर स्वाति अक़बर हैरीसन से मिलने जा रही थी। चूँकि अभी वह सुराजपुरा में नई-नई आई थी वह ऑटो से शहर का दृश्यावलोकन कर रही थी। शहर अलसाया-अलसाया-सा लग रहा था। ऑटो सुराजपुरा के उस भाग से भी गुज़रा जहाँ बहुत-सी मल्टीनैशनल कम्पनियों के बड़े-बड़े दफ़्तर स्थित थे, और यक़ीन मानिए अगर आप अपने-आप को उन चमचमाती इमारतों के बीच पाएँगे तो यही सोचेंगे कि कहीं हांग-कांग या अमरीका के न्यूयॉर्क के केंद्र में तो नहीं पहुँच गये हैं! इतनी ऊँची-ऊँची इमारतें इस ढंग से बनाई गयी हैं कि लगता है कि वह विश्व का सबसे विकसित इलाका है, और अगर इन बिल्डिंगों के अन्दर प्रवेश कीजियेगा, जिसका अवसर आपके इस तुच्छ सेवक को प्राप्त हुआ है तो पाइयेगा कि इमारतें अन्दर से पूरी की पूरी वातानुकूलित हैं, अन्दर बढ़िया से बढ़िया मार्बल और उनके ऊपर कालीन लगे हैं और साज-सज्जा पर बेहद पैसा खर्च किया गया है। यह एक अन्य भारत है, एक नया भारत, जिसमें सिर्फ़ कुछ चुने हुए भारतीयों को ही अन्दर आने की अनुमति प्राप्त है।

स्वाति ने उन बिल्डिंगों को देख कर काफ़ी फोटुएँ खींचीं और अपने उन दोस्तों के बारे में सोचा जो इस तरह की दुनिया में रहते थे और काम करते थे, भारत की मॉडर्निटी के प्रतिनिधियों के समान। उस इलाके से थोड़ी दूर वह कॉलोनी थी जहाँ अक़बर का दफ़्तर था। पहली नज़र में स्वाति ने पहचान लिया कि वह एक आवासीय कॉलोनी थी और वहाँ

बड़े-बड़े रिहायशी बंगले थे। उनमें से ही एक बंगले में जा कर ऑटो वाले ने अपनी सवारी रोकी। ऑटो वाले को किराया देने के बाद स्वाति ने देखा कि बंगले के प्रवेश गेट से सटे एक नेमप्लेट पर अक़बर हैरीसन का नाम लिखा हुआ था और गेट के एक तरफ़ एक छोटा दरवाज़ा खुला था जिसपर सेवा मंज़िल लिखा हुआ था। अन्दर जाने पर उसे एक चौकीदार ने रोक कर उसका नाम और आने का कारण पूछा। एक कॉपी में उसका नाम वगरैह लिख कर उसने स्वाति को अन्दर जाने के लिए कहा। स्वाति गेट से सीधी बंगले के अन्त तक गयी जहाँ चौकीदार ने उसे इशारा किया था। वहाँ एक दरवाज़े पर सेवा मंज़िल लिखा हुआ था, स्वाति ने दरवाज़े को हाथ लगाया तो वह खुल गया। अन्दर एक ग्रामीण-सी लगने वाली लड़की एक मेज़ के पीछे बैठी हुई थी। उसने स्वाति को अक़बर के दफ़्तर की ओर इशारा किया और कहा कि वह वहाँ जा कर बैठ सकती थी और अक़बर दस मिनट में आ जायेगा। स्वाति ने उसे थैंक्यू कहा और इंगित कमरे की तरफ़ बढ़ी। अन्दर जाकर स्वाति की नज़र कोने में पड़ी किताबों से भरी एक अलमारी पर पड़ी। उसने अपना बैग कुर्सी पर पटका और किताबें देखने अलमारी की ओर बढ़ी। उसने एक किताब बाहर निकाली ही थी कि पीछे से अक़बर का सलाम सुनाई दिया। अक़बर ने स्वाति की ओर आते हुए अपना हाथ बढ़ाया और हाथ मिलाकर बोला :

"आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।"

"आपका दफ़्तर बहुत शानदार लगा। अच्छी-ख़ासी

रौशनी है और हवादार भी है!" स्वाति ने कहा।

"जी हाँ, ख़ास तौर से लॉरी बेकर फाउंडेशन वालों से बनवाया है।" अक़बर बोला।

स्वाति को एक फिरंगी लगने वाले आदमी के मुँह से ख़ालिस उर्दू लहज़ा सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई।

अक़बर ने स्वाति को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और ख़ुद भी सामने वाली कुर्सी पर बैठ गया। न चाहते हुए भी स्वाति की नज़र उसकी गर्दन पर पड़े एक काले निशान पर पड़ गयी, जिसे पाठकों आम भाषा में लव-बाइट कहा जाता है।

स्वाति ने अक़बर को अपने बारे में सब कुछ बताया और कहा कि टीवी चैनल की ओर से वह का•का•का पर खोज कर रही थी इसलिए सुराजपुरा आई थी। और सुराजपुरा में जिन-जिन लोगों का•का•का का से वास्ता पड़ा था उनसे मिल रही थी। स्वाति ने ध्यान दिया कि अक़बर के चेहरे पर का•का•का का नाम लेने पर एक हल्का-सा खिंचाव आ गया था। उसने अक़बर से पूछा कि उसे क्या लगता था का•का•का कौन था और उसका लक्ष्य क्या था। अक़बर ने ऐसा चेहरा बनाया जैसे कि उसे इस बात में कोई रुचि न हो। उसने कहा कि भारत में और दूसरे बहुत से मुद्दे हैं जो का•का•का से ज़्यादा इम्पोरटेन्ट हैं। उसके अनुसार का•का•का का मामला कोई ख़ास मामला न था, और उसे इस विषय पर अपना समय ख़राब करने की कोई इच्छा न थी। उसने कहा कि यह

भारत में कुछ अजीब-सा लगता है पर पश्चिमी देशों में अराजकतावाद या एनार्की एक स्वीकारी हुई आइडियोलोजी है। समाज में हमेशा कोई न कोई किसी न किसी के हाथों दबाया जाता है, या मार खाता है। और एण्टी स्टेट तत्व होना एक साधारण घटना है, बल्कि कहा जाए तो अगर किसी समाज में सरकार विरोधी तत्व न हों तो यह असाधारण मान जायेगा। उसने कहा कि हमारे देश को स्वतंत्र हुए साठ साल से भी ज़्यादा हो गये हैं, और सही मायने में देखा जाए तो अब हमारे देश की एक साफ़ पर्सनैलिटी पूरे ज़ोर-शोर से उभर रही है, संसार में हमारी पहचान हमारे ही ढंग से बन रही है। तो का•का•का जैसे ग्रुप होना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है और हमें इस पर अधिक ध्यान नहीं देना चाहिए।

स्वाति को अक़बर इतनी धांसू उर्दू बोलता देख कर कुछ देर के लिए अपनी पलकें झपकाना भूल गयी। उसे अपनी ओर दीदें फाड़ते देख कर अक़बर ने सोचा कि वह उसकी बातों से हैरान हो रही होगी और उसने अपनी बातों का रुख़ दूसरी ओर मोड़ा। वह कहने लगा कि निश्चय ही का•का•का को पूरी तरह से सोच-विचार कर के ही बनाया गया होगा, उसकी आइडियोलोजी को प्रैक्टिकल जामा पहनाने के लिए सही तरीका अपनाया गया होगा क्योंकि यह एण्टी स्टेट का•का•का कोई ऐसा-वैसा अराजक तत्व नहीं था। अक़बर ने कहा कि उसे लगता था कि इस का•का•का के अन्दर एक हद तक पागलपन भी है, कि वह मानसिक रूप से स्वस्थ नहीं है। यह सब कह कर अक़बर चुप हो गया। स्वाति की पलकें अब

झपकनी शुरू हो चुकी थीं। उसने अक़बर से पूछा कि क्या उसे का•का•का के बारे में कुछ पता था? अक़बर ने स्वाति के प्रश्न में कुछ रहस्य महसूस किया, जैसे कि स्वाति किसी चीज़ की तरफ़ इशारा कर रही हो। पर उसने कहा कि उसे का•का•का के बारे में कुछ नहीं पता था।

राज मलहोत्रा के साथ का•का•का के ऊपर अपनी एक बातचीत में स्वाति को लगा था कि राज को का•का•का गाथा में शरीक़ अन्य लोगों की बजाय खान परिवार पर थोड़ा ज़्यादा शक़ था। स्वाति को यह इसलिए भी लगा था क्योंकि वह यह तो जान गयी थी कि राज मुसलमानों को बहुत अच्छी नज़रों से नहीं देखता था, उसका परिवार भारत-पाक विभाजन के समय पाकिस्तान से आया था और चाहे भले ही वह भारत में पैदा हुआ था उसके माँ-बाप ने उसे अपने ऊपर हुए ज़ुल्मों की कहानियाँ सुनाईं थीं और उसके मन में मुसलमानों के प्रति एक फिक्स्ड नेगेटिव इमेज का निर्माण हो गया था जिसे आम तौर पर भारत के कट्टर हिन्दूवादी बढ़ावा देते हैं और राजनैतिक रूप से भुनाते भी हैं। उस समय के काफ़ी रिफ्यूजियों ने मुसलमानों व इस्लाम धर्म के प्रति इस पूर्वाग्रह को पाले अपना सारा जीवन काटा है और अपने से आगे की पीढ़ियों को भी इसी सोच में ढाला है। और फिर स्वाति ने का•का•का फ़ाइल में उदाहरण के रूप में सोहनी खन्ना वाले केस को ले कर अक़बर की भूमिका पर भी अपने मन में सवाल खड़े कर लिए थे। इन्हीं दो कारणों से उसकी आवाज़ में वह रहस्य दिख रहा था जो अक़बर से उसका राज़ उगलवाना चाहता था।

मित्रों स्वाति के बारे में आपको काफ़ी कुछ बताया जा चुका है, उस सुबह सुराजपुरा में अक़बर के सामने उसकी मनःस्थिति कुछ इस प्रकार बन चुकी थी जैसे कि वह का•का•का को पकड़ने की बजाय उसका साथ देने को तैयार हो।

स्वाति ने कुछ पल इन्तज़ार किया ताकि अगर अक़बर कुछ कहने वाला हो तो कहे, और फिर उसने सोचा कि न तो वह उसे इतना जानती थी और न ही अक़बर उसको उतना जानता था कि वह का•का•का जैसे मामले पर उसके सामने अपने सारे राज़ यूँ ही खोल दे... तो उसने अपनी रणनीति बदलने की सोची। उसने दोस्ती का रुख़ अपनाया। अचानक से उसने पूछ लिया कि क्या अक़बर शादीशुदा था। पल भर के लिए अक़बर की आँखों का झपकना बन्द हो गया। उसकी आँखें जैसे स्वाति से पूछ रही थीं कि यह क्या था। फिर उसने बताया कि वह शादीशुदा नहीं था। यह कह कर वह चुप हो गया और स्वाति के अगले सवाल का इन्तज़ार करने लगा। स्वाति ने बात आगे बढ़ाई, वह पूछने लगी कि क्या वह किसी धर्म में विश्वास रखता था। अक़बर ने कहा कि वह अपने आप को मुसलमान मानता था पर पाँच वक़्त नमाज़ नहीं पढ़ता था और न ही कट्टरवादी था, उसके विचार सूफ़ी इस्लाम से काफ़ी मिलते-जुलते थे और वह धर्म को एक निजी मामला समझता था बजाय एक सामाजिक और सामूहिक प्रथा के। तभी सीढ़ियों पर से धप-धप करते हुए किसी के ऊपर चढ़ने की आवाज़ें आने लगीं। निचले फ्लोर वाली लड़की एक तश्तरी में दो चाय के प्याले लिए उनके समीप

पहुँची और उसने स्वाति के सामने मेज़ पर प्याला रख कर मुस्कुरा कर चाय लेने का आग्रह किया। स्वाति को उसकी मुस्कुराहट में बहुत नर्माई का अहसास हुआ। वह भी मुस्कुरा दी। तभी अक़बर ने उठ कर थोड़ी दूर पड़े डिस्क प्लेयर में एक डिस्क डाली और संगीत-लहरियाँ हवा में गूँजने लगीं। संयोग की बात देखिए डिस्क में संगीत स्वाति के भाई सिद्धार्थ के रॉक ग्रुप का था, इसका मतलब था कि अक़बर को सिद्धार्थ के बैंड द्वारा रचा संगीत पसन्द था और यह देख कर स्वाति ने थोड़ी राहत महसूस कि क्योंकि इसका मतलब था कि उसे अक़बर के और क़रीब जाने का एक छोटा-सा रास्ता बनता दिख रहा था। तो उसने अक़बर को बता दिया कि जिस संगीत को वे सुन रहे थे उसमें उसके भाई ने गिटार बजाया था और गाने भी गाए थे। अक़बर यह सुन कर दंग हो गया और स्वाति को और ही नज़रों से देखने लगा। उनके बीच का वातावरण हल्का हो गया और अक़बर के व्यवहार में एक विशेष चमक-सी आ गयी थी। उसने कहा कि सुराजपुरा में सिद्धार्थ के रॉक ग्रुप को ला कर उनका एक कंसर्ट करना चाहिए। उसे उनका संगीत बहुत अच्छा लगता था, और वह घण्टों तक उनके गाने सुनता रहता था। उसने स्वाति से पूछा कि वह सुराजपुरा में कहाँ रहती थी तो स्वाति ने उसे अपने होटल का नाम बताया। अक़बर ने उसे कहा कि उस रात को वह क्या कर रही थी, तो स्वाति ने कहा कि उस रात को वह खाली थी। अक़बर ने उसे कहा कि वह और उसकी गर्लफ़्रेन्ड रात को स्वाति के होटल के पास ही एक मशहूर कबाबों वाले

रेस्टोरेंट में खाना खाने वाले थे, और अगर वह चाहे तो वहाँ उनके साथ आ सकती थी। स्वाति को लगा कि उसकी बात बन गयी थी। उसने हाँ कर दी। फिर उसने पूछा कि उसकी प्रेमिका क्या सुराजपुरा की ही थी तो अक़बर ने कहा कि रात को ही वह उन दोनों का परिचय करवा देगा और स्वाति ख़ुद ही जान लेगी कि उसकी माशूका कहाँ की थी। बात को फिर से का•का•का की ओर ले जाते हुए अक़बर ने स्वाति से पूछा कि वह का•का•का के बारे में अब तक क्या पता लगा पाई थी। स्वाति ने चाय की चुस्कियाँ लेते हुए कहा कि असलियत में उसे का•का•का के बारे में अब तक कुछ भी पता नहीं चला था! स्वाति ने कहा कि उसे सिर्फ़ का•का•का के कारनामों की ख़बर थी, उसने कहा कि का•का•का जो भी था उसके पास बहुत शातिर दिमाग था और हर बार अपने पीछे लगे हुए लोगों को चकमा देने में क़ामयाब हो जाता था। वैसे तो काफ़ी लोग उसके पीछे लगे भी नहीं हुए थे, पर का•का•का अपने कारनामों को इस तरह से अंजाम देता था कि अगर बाद में कोई उसके पीछे उसके निशान ढूँढते-ढूँढते आए भी तो भूलभुलैया में गुम हो जाए। अक़बर ने कहा कि उसे सुराजपुरा के बाहर का•का•का के कारनामों का कुछ पता नहीं था, और सुराजपुरा में भी केवल वही बातें पता थीं जो उससे सम्बन्धित परिवेश में घटित हुई थीं। स्वाति ने उसे थोड़ा खुल कर बताया कि का•का•का का नाम भारत की राजनैतिक शासक क्लास और एलीट क्लास में अब लगभग सबको पता चल गया था और सभी उस के ख़िलाफ़ थे, और इसलिए सभी, यानी जो सत्ता

में थे और अन्य जो सत्ता में नहीं भी थे चाहते थे कि का•का•का का ख़ुलासा हो, उसे दबोच लिया जाए, इससे पहले कि किसी उलटे-सीधे तरीके से का•का•का के हाथ उन तक पहुँचें। और का•का•का ने इतना ऊँचा हाथ मार रखा था कि का•का•का के बारे में कोई ख़बर न तो सरकार ने अपनी ओर से जनता को बताई थी और न ही मीडिया को कुछ बोलने करने की परमिशन दी गयी थी, हालाँकि संचार माध्यम और सरकार दोनों कुछ ख़ास पता भी नहीं लगा पाए थे, व इसीलिए राज और स्वाति वहाँ आए थे। स्वाति के मुँह से राज का नाम गलती से निकल गया, और वह नहीं चाहती थी कि अक़बर को राज के बारे में वह बताए, इसलिए उसने जल्दी से बात बदल दी। उसने अक़बर को कहा कि छदम यादव की दिल्ली वाली घटना का•का•का की मज़ाकिया सूझ-बूझ और अतियथार्थवादी विचारधारा का एक साफ़ प्रतीक थी। अक़बर की आँखों में स्वाति को एक कौंधती हुई बहुत हल्की-सी बिजली का आभास हुआ (हो सकता है कि वह स्वाति की कल्पना-शक्ति का नतीजा हो), और उसने अक़बर को उत्सुकता से अपनी गरदन उचकाते हुए देख कर अपनी बात की पूरी तहें खोलीं।

मित्रों छदम यादव भारत के काफ़ी जाने-माने राजनेता है, यह तो आप जानते ही होंगे। इनके बारह बच्चे हैं, यानी कि इन्होंने अपनी पत्नी को सजीवन बच्चे जनने और पालने के काम में ही व्यस्त रखा, यह परिवार आज के भारत में औरतों की समानता का ज्वलन्त उदाहरण है। यादव जाति

(कई यादव ऊँची जात के भी होते हैं, पर यह पिछड़ी जात वाले यादव समूह से रिश्ता रखते हैं। भारत के हिन्दुओं, मुसलमानों, सिखों और ईसाईयों तक में भी सरनेम सैंकड़ों सालों से जाति या उपजाति का सूचक रहा है, पर मुसलमान बादशाहतों और बाद में अंग्रेज़ों के राज में जातिनामों में काफ़ी गड्ड-मड्ड होती देखी गयी, कोई भी कैसा भी सरनेम रखने लगा, और अब स्वतंत्र भारत में सरनेम से किसी की कॉस्ट का पता लगाना कुछ टेढ़ी खीर के समान है–अच्छा ही है, इंसान को इंसान समझा जाता है, न कि जाति व उपजाति!) का होने की वजह से इन्हें राजनीति में अच्छी रफ़्तार से बढ़ने का मौका मिला और यह काफ़ी समय तक बिहार राज्य के मुख्यमंत्री भी रहे। पर बिहार की बात तो हम सब जानते ही हैं। करप्शन, ग़रीबी, क्राइम और छुआछूत जैसे मुद्दों में यह स्टेट भारत के सबसे एडवान्स्ड राज्यों में से एक है। छदम यादव जैसे राजनेताओं की वजह से यहाँ डण्डा और पैसा बहुत इम्पोरटेन्ट हैं और यहाँ इन्हीं की भाषा बोली जाती है, जैसे शायद आदिम काल में होता होगा (क्या अब नहीं होता? ध्यान से देखें तो सारे संसार का यही हाल है चाहे जितना भी हम कहें व मानें कि इंसान जानवरों या आदिवासियों की दुनिया से कहीं आगे पहुँच चुका है... एक साफ़ नज़र डाल कर देखिए तो पाइयेगा कि दुनिया के सबसे धनी और पावरफुल देश वही हैं जिनके हथियारों के भण्डार संसार में सबसे अधिक भरे-पूरे हैं, उनकी इस इनडायरेक्ट धमकी के बल पर ही दुनिया चलती है, संसार अपनी धुरी पर रह पाता है, वरना

तो किसे पता अगले पलों में क्या हो)।

तो छदम यादव ने अपने मुख्यमंत्री काल के दौरान बहुत से घोटाले किए होंगे, बहुत-सा माल बनाया होगा, इस पर तो कोई शक़ ही नहीं है... बारह बच्चों को पालना आसान नहीं होता है। पर इनमें से एक घोटाले का पर्दाफ़ाश ज़रूर हुआ, और बाद में हिन्दुस्तानी न्याय अपनी कार्यवाही करता रहा और बहुत-से सालों बाद किसी को कुछ याद नहीं रहा। इस घोटाले में इन्टरस्टिंग बात यह थी कि छदम यादव ने सरकार को काग़ज़ों पर पशुओं का चारा खरीदवाया और असलियत में चारे का पैसा ग़बन किया गया, उस पैसे से चारा तो क्या एक घास का तिनका भी नहीं खरीदा गया। मुख्यमंत्री का पद छोड़ने के बाद छदम को केंद्र में जनाधार पार्टी की मिली-जुली सरकार में कैबिनेट मंत्री का एक पद मिला, चूँकि उनके पास अपनी पिछड़ी जाति के काफ़ी वोटों का समर्थन था जिसने उसे सांसद बनाया, और पद हासिल करना जनाधार सरकार को समर्थन देने की उसकी शर्त थी। सो जब छदम को नयी दिल्ली भारत की राजधानी में एक अंग्रेज़ों के ज़माने का बड़ा-सा बंगला मिला तो उसने वहाँ सांसदों को मिलने वाले जनता पर खर्च करने वाले भत्ते में से उस बंगले के बड़े-से गार्डन में एक पशु-बाड़ा बनवा डाला। उसे पशुओं से काफ़ी प्रेम था, ऐसे मीडिया में उसके बयान आते रहते थे, और हो भी क्यों नहीं, मित्रों चारा घोटाले में पशुओं के नाम पर लाखों-करोड़ों रुपयों के वारे-न्यारे हुए थे। इस पशु-बाड़े में छदम यादव मस्ती से गायों को दुहता था

और मुर्गियों, बकरियो वगैरह को चारा डालता था, ठेठ गाँव के स्टाइल में। संसद का काम करने के लिए तो बहुत से लोग थे ही। पाठकों एक सांसद को भारतवर्ष में इतनी सुविधायें मिलती हैं कि लगता है कि वे जनता के लिए नहीं जनता उनके लिए काम करती है। इन्हें राजाओं की तरह माना जाता है, चाहे भले ही ये पढ़े-लिखे न हों, या इनके ख़िलाफ़ पुलिस केस चल रहे हों, या फिर जनता की सेवा करने के नाम पर इनके पास सिर्फ़ फ़िल्मों में अभिनय करने का एक्सपीरियंस हो।

छदम यादव के सरकारी बाग में जो पशु-बाड़ा बनाया गया उससे जो प्रोडक्ट बनते थे, जैसे कि दूध, अण्डे, गोश्त इत्यादि उन्हें छदम के लोग बाज़ार में बेचते भी थे और यह बिजनेस छदम की प्रिय धर्मपत्नी के नाम पर किया जाता था ताकि क़ानूनी तौर पर कोई परेशानी खड़ी न हो, आम आदमी तो सांसद को इन बातों पर क्या परेशानी देगा, छदम को ज़्यादा चिन्ता अपने राजनैतिक दुश्मनों की थी इसलिए उसने यह व्यापार अपनी पत्नी के नाम पर चला रखा था। यानी कि छदम के लिए वह बंगला रहने की मुफ़्त सुविधा के साथ-साथ आमदनी का अन्य ज़रिया भी बन चुका था, और पशुओं के रख-रखाव पर जितना भी खर्चा आता सब कुछ सरकारी तंत्र के खाते से जाता... आम के आम और गुठलियों के दाम! सो एक बार की बात है कि छदम यादव सरकारी यात्रा पर निकले हुए थे। सरकार का नाम तो काग़ज़ों यात्रा के कारणों में कोई भी बहाना मार कर डाल दिया गया था, बात

यह थी कि छदम के चुनाव क्षेत्र में विरोधी पार्टी वाले काफ़ी प्रचार-प्रसार कर रहे थे और जिस तरह से ख़बरें मिल रही थीं वे काफ़ी सफल हो रहे थे। चूँकि चुनाव में सिर्फ़ एक वर्ष की ही देरी थी छदम का जी घबराने लगा, भई इतनी सुख-सुविधाओं का त्याग करना आसान बात नहीं है, दिल को झटका लगता है। संसार में बड़े लोग ज़्यादातर अपने ऐश्वर्य के छिनने के डर को भगाने के लिए ही सारे जतन करते हैं। ख़ैर छदम ने तुरन्त सरकारी यात्रा का कार्यक्रम बनाने के लिए अपने सेक्रेटरी को कहा और एक हेलिकॉप्टर पर दिल्ली से अपने चुनाव क्षेत्र की ओर निकल पड़े, ऑफ़िशयल तौर पर अपने ज़िले की विकास परियोजनाओं का मुआइना करने के लिए। पीछे छदम के छः बच्चे और श्रीमती जी बंगले पर रह गयी, क्योंकि बाकि छः बच्चे पढ़ाई के लिए विदेश में रह रहे थे। देखिए कितने खर्चे होते हैं एक पॉलिटिशयन के जिन्हें सरकार उसे जनता का प्रतिनिधि समझ कर पूरा करती है। चाहे भले ही वोट देने वाली जनता-जनार्दन भूख-प्यास और बगैर सुविधाओं के मर रही हो पॉलिटिशयन की सुख-सुविधा में कोई कमी नहीं आना चाहिए। छदम की बीवी श्रीमती लीलावती देवी भी अपने-आप में ही एक अनोखी महिला थी। छदम ने तो जैसे-तैसे धन-बल का प्रयोग कर के कॉलेज से ग्रेजुएट डिग्री हासिल कर ली थी पर लीलावती देवी मुश्किल से पाँचवी कक्षा तक ही पहुँच पाई थी। उसके बाद उसके पिता ने उसका स्कूल जाना बन्द करवा दिया था। भई लड़कियों को तो शादी पति की सेवा में ही जीवन बिताना होता था।

पर छदम यादव के विकास के साथ-साथ लीलावती देवी की बुद्धि और समझ का भी विकास हुआ। एक बार तो बिहार में भ्रष्टाचार के आरोप लगने के कारण छदम यादव को मुख्यमंत्री पद से इस्तीफ़ा देना पड़ा, और वक़्त-बेवक़्त बीवी ही काम आई। उसने अपनी बीवी को ही मुख्यमंत्री बना दिया, और उसी के बल पर राज किया। पॉलिटिशयन का दिमाग वैसे ही तेज़ होता है, पर यह बात भी सच है कि अपनी लुटिया डूबती देख कर हर कोई जी-जान से बचने की कोशिश करता है। और उन पलों में बुद्धि के बन्द दरवाज़े फ़टाक से खुल जाते हैं। छदम यादव और सीमा कुमार जैसे राजनीतिज्ञों की बुद्धि की एक अन्य दाद देनी होगी, वह है हिन्दु कास्ट सिस्टम के पिछड़े, अनुसूचित और अछूत वर्गों को सफ़ाई से बहला-फ़ुसला कर उनके कीमती वोट हासिल करने की विद्या में सफल होना। पाठकों नवीन, शाइनिंग भारत में पिछड़ापन, धार्मिक छुआछूत, ग़रीबी, भेद-भाव करना... सब कुछ बिकता है, और भारत पर राज करने वाला अच्छी तरह से जानता है कि कैसे इन मामलों से ख़ुद को फायदा पहुँचाया जाए।

चलें वापस लीलावती देवी और उनके सरकारी बंगले की ओर। पतिदेव के डिपार्चर के बाद उनके छः छोटे बच्चे दिल्ली के महँगे प्राइवेट अंग्रेज़ी माध्यम स्कूलों में अपनी-अपनी कक्षाओं में पहुँच चुके थे। लीलावती देवी पति के कहे अनुसार अपने पशु-बाड़े में काम करते लोगों की देख-रेख कर रही थी। तभी बाहर मेन दरवाज़े पर तैनात सुरक्षा कर्मियों में से एक वहाँ आया और बोला कि एक आदमी, जिसका

नाम उसने काली कमली वाला बताया, दरवाज़े पर खड़ा था और लीलावती देवी से मिलना चाहता था। उसने सुरक्षा कर्मी को बताया कि लीलावती को पता होगा कि वह आने वाला था। लीलावती ने कहा कि उसे कुछ मालूम नहीं था और कहा कि छदम यादव जी ने भी उसे ऐसे किसी आदमी के बारे में नहीं बताया था। तभी दूर दरवाज़े के पार से काली कमली वाले की आवाज़ सुनाई दी–

"भौजी प्रणाम, मैं हूँ काली कमली वाला... भैया ने आपको नहीं बताया क्या? भूल तो नहीं गये न?"

बात इतने प्यार से की गयी थी कि लीलावती के दिल का दरवाज़ा एक ही झटके में खुल गया और उसे लगा लगा जैसे कि काली कमली वाले से उनका जन्मों का नाता हो। उसने सोचा कि कहीं कुछ याद न रहा हो या फिर कोई गलती न हो जाए इसलिए सिक्यूरिटी वाले से कहा कि उस आदमी की जाँच-पड़ताल कर के उसे अन्दर आने दिया जाए।

काली कमली वाले ने अन्दर आते ही अपनी भौजी को साष्टांग प्रणाम किया। वह एक दुबला-सा व्यक्ति था जिसके काले गरदन तक आते हुए बाल थे और दाढ़ी भी अच्छी-ख़ासी बढ़ी हुई थी। कमर पर उसने धोती बांधी हुई थी और सारा शरीर एक काले भागलपुरी चादर से ढका हुआ था। कुल मिला कर उसका रूप लीलावती देवी को बहुत मनभावन लगा। अपने विचारों की दुविधा में और छदम यादव जी को नाराज़ न करने की कोशिश में लीलावती देवी ने काली कमली वाले को कहा कि हाँ वह उसे जानती थी, और उसे पता था

कि वह आज आने वाला था। काली कमली वाले ने सिर हिला-हिला कर, हाथ जोड़ कर धन्य हो धन्य हो कहते हुए अपनी भौजी की इज़्ज़त में इज़ाफा कर डाला। और छूटते ही पूछा कि काम शुरू किया जाए? लीलावती देवी को कुछ समझ न आया तो उसने पूछा कि कैसा काम?

मित्रों काली कमली वाले ने अपनी बेइंतिहा मीठी ज़ुबान और चतुराई का इस्तुमाल करते हुए उससे कहा कि छदम यादव ने उसे अपने पशु-बाड़े के सारे उत्पादों और सारे पशुओं को ग़रीब किसानों को मुफ़्त में बाँटने का आदेश दिया था। लीलावती देवी थोड़ी दुविधा में पड़ी थी, पर जब काली कमली वाले ने झट से अपना फ़ोन आगे करते हुए कहा कि अगर वह चाहे तो छदम यादव से बात कर के सब कुछ पूछ सकती थी तब उसने अपने मन से सारे बादलों को हटा कर काली कमली वाले को कहा कि इतने पुण्य के काम में वह अवश्य ही छदम यादव की इच्छा का पालन करेगी। लीलावती ने मन-ही-मन सोचा कि उन्हें तो किसी चीज़ की कमी नहीं थी, और भगवान ने इतना दिया था तो और भी दे देगा लीलावती के हाँ भरते ही काली कमली वाले ने अपना ताम-झाम फैला लिया। सरकारी खर्चे पर ट्रक मँगवाए गये, पशु-बाड़े में से जो भी चीज़ दूसरों के काम आ सकती थी उसे निकाल लिया गया और ट्रक में लाद दिया गया। तीन दिनों तक ट्रकों की भराई का काम चलता रहा। सारा सामान जब लद गया तो काली कमली वाले ने भौजी से विदाई ली और बच्चों को प्यार दिया, साथ ही साथ कहा कि भगवान उन्हें

हमेशा सुखी रखे। सारे के सारे ट्रकों का किराया छदम यादव की जेब से लिया गया और उन्हें दिल्ली के आस-पास के उन गाँवों में भेजा गया जहाँ अधिक ग़रीबी व लाचारी देखी जा सकती थी। वहाँ पहुँच कर सारा सामान व पशु किसानों व उन लोगों में बाँट दिए गये जिनके पास कुछ नहीं था। सामान बाँटते वक़्त दान करने वाले का नाम छदम यादव नहीं बताया गया परन्तु एक कार्ड लोगों को दिया गया जिसमें अंग्रेज़ी व हिन्दी में सुनहरे अक्षरों में का•का•का लिखा था।

चार-पाँच दिन बाद छदम यादव अपने बंगले में वापस लौटे तो हवाई अड्डे पर यह सोच कर ख़ुश हो रहे थे कि आनन्द से अपनी गायों का दूध दोहेगा व ख़ूब रज कर शुद्ध दूध-घी-पनीर खाएगा-पीएगा। जब बंगले में गाड़ियों का हुजूम पहुँचा तो पशु-बाड़े की वीरानी देख कर छदम यादव का दिल बैठ गया और सब कुछ जानने के बाद तो उसे लगा कि सर्वनाश हो गया। उसे लग रहा था कि अगली बार चुनाव में उसका पत्ता साफ़ होने वाला था और बिना सरकारी पद के फिर से इतना बड़ा पशु-बाड़ा बनाना और चलाना संभव नहीं हो पायेगा। काली कमली वाले ने अपनी माया से छदम यादव को परिचित करवा दिया था।

* * *

रात को स्वाति के होटल में मिलने का समय तय कर के अक़बर ने स्वाति से इजाज़त माँगी और स्वाति ने भी अपनी राह पकड़ी।

शिकारियों का शिकार

उधर राज की सुबह थोड़े आलस में बीती। यह आलस पिछली रात की ओल्ड मंक और सुराजपुरा के सरकारी गेस्ट हाउस में मौजूद घुप्प चुप्पी की वजह से था जो उसको उनींदा बना रही थी। उसने सुबह पंचरंग दल के तहसील अध्यक्ष श्री विनय कोकिल रघुवंशी से मिलने का कार्यक्रम बनाया था, और एक घण्टा देर से उठने के कारण उसने सोचा कि शायद यह संभव न हो पाए। पर जब उसने उनके दफ़्तर में फ़ोन किया तो पता चला कि विनय कोकिल वहीं थे और वह थोड़ी देर से आ कर उनसे मिल सकता था। राज के आलस की एक और वजह स्वाति भी थी जिसकी ब्यूटीफुल और नॉटी-सी इमेज उसके मन में बार-बार अंगड़ाई ले रही थी। स्वाति की बातें, मुस्कुराहटें, आँखों की लुका-छिपी, सब कुछ उसके दिलोदिमाग पर हावी होते जा रहे थे। उसे स्वाति से अपने प्यार का एहसास हो चुका था और उसने सोच लिया था कि सबसे पहले तो वह स्वाति को गेस्ट हाउस में रहने के लिए बोलेगा और फिर अपने दिल की बात भी बोल देगा। मित्रों, उसके मन में अमेलिया से अपने मीठे रिश्ते का अन्त करने

का दर्द तो था ही, इसलिए वह फिर से असफल नहीं होना चाहता था। मज़े की बात यह थी कि अमेलिया राज से अपने रिश्ते के बारे में वह सब नहीं सोचती थी जो राज सोचता था। उनके बीच के कल्चरल फ़ासले इतने ज़्यादा थे कि आपसी समझ की दूरी दूरी ही रही कभी नज़दीकी न बन पाई।

तैयार हो कर राज मलहोत्रा अपने गेस्ट हाउस से बाहर निकला। काका शर्मा ने उसके लिए ड्राइवर समेत एक पुलिस जीप का प्रबन्ध करवा दिया था। ड्राइवर पुलिस वाला ही था, जिसे सुराजपुरा के चप्पे-चप्पे की जानकारी थी। राज को सलाम कर के ड्राइवर ने कहा कि काका शर्मा ने उसे सन्देश भिजवाया था कि अगर वह चाहे तो शाम को मस्जिद में जाया जा सकता था। राज ने सोचा कि वह स्वाति को फ़ोन कर के पूछेगा और फिर काका शर्मा को जवाब देगा। उसने चालक को पंचरंग दल के दफ़्तर चलने के लिए कहा।

पंचरंग दल का दफ़्तर भी पुराने शहर की चारदीवारी में था। वैसे तो कुछ गलियाँ काफ़ी तंग थीं और इतनी गाड़ियाँ आ-जा रही थीं कि सीधे-सीधे जाने के लिए बहुत इन्तज़ार करना पड़ता, पर पुलिस की जीप को देख कर लोग बाजू हट जाते थे और अपनी स्कूटर-मोटर हटा लेते थे। राज को लगा कि सुराजपुरा में पुलिस का दम-ख़म अभी भी बाकि था। जीप में बैठते ही उसे अपनी का•का•का को पकड़ने की ज़िम्मेदारी का ख़्याल सताने लगा था। उसे लगने लगा कि वह फालतू में ही हाथ-पैर मार रहा था। का•का•का का पता लगाना बहुत ही मुश्किल काम बन गया था। पूरे देश में अपना

जाल बिछाने वाले व्यक्ति (या ग्रुप) को पकड़ने के लिए तो पूरे देश की पुलिस की आवश्यकता है। और फिर पब्लिक तो का•का•का से बिल्कुल नाराज़ नहीं थी, यानी कि वह सिर्फ़ अपनी और सरकारी आइडियोलोजी की नज़र में एक क्रिमिनल को पकड़ने व उसे सज़ा देने के काम को अंजाम दे रहा था, और हैरानी की बात थी कि उसके द्वारा ज़्यादातर पीड़ित जन शोर नहीं मचा रहे थे, उन्होंने साधारण जनता में अपने ऊपर किए गये का•का•का के ज़ुल्मों का ख़ुलासा कभी नहीं किया था। यह तो सरकार के शासकों व बड़े-बड़े इण्डस्ट्रियलिस्टों और समाज की एलीट क्लास को डर लगा था जिसके कारण यह केस शुरू किया गया था। और वह भी पूरी गोपनीयता में। क्या सरकार को आम लोगों के का•का•का के कारनामों का पता लगने पर भड़क जाने का भी डर था?

जीप एक बड़े से भवन के सामने रुकी जिसकी बगल में एक हिन्दू धर्मशाला का पन्द्रह फुट ऊँचा दरवाज़ा था। धर्मशाला के छज्जों से काफ़ी साधू-सन्त सड़क पर लोगों की आवाजाही को ताकते हुए दिखे। राज उतर कर पंचरंग दल भवन में घुसा। अन्दर सब लोग भगवा रंग में सार दिखे। किसी भी महिला की उपस्थिति नहीं दिखी। स्वागत कक्ष में कोकिल का पूछने पर उसके साथ एक आदमी भेज दिया गया और वह राज को एक गलियारे के साथ-साथ ले जाने लगा। गलियारे में काफ़ी अंधेरा छाया हुआ था पर राज को रास्ता दिखाने वाला आदमी बिना किसी हिचक के चलता ही जा रहा था जैसे उसे सब कुछ दिखाई दे रहा हो। दो-तीन बार

गलियारा मुड़ा और एक दरवाज़े के सामने वह आदमी एकदम से रुक गया। फिर उसने पहली बार अपने पीछे राज पर नज़र फेरी और उसे देख कर दरवाज़े को खटखटाया। अन्दर से जवाब आने पर उसने दरवाज़ा खोला और राज को रुकने का इशारा कर के वह अन्दर चला गया। दो मिनट बाद वह बाहर आया और राज को अन्दर आने का इशारा किया। अन्दर दीवारों पर हिन्दू भगवानों की तस्वीरें जड़ी थीं और सामने वाली खिड़की के आगे पड़ी मेज़ और कुर्सी पर एक मोटा आदमी बैठा था जिसने रेशम का पीले रंग का कुर्ता पायजामा पहना हुआ था। इस आदमी का चेहरा कुछ साफ़ नहीं दिख रहा था क्योंकि कमरे में बिजली नहीं थी, सारी रौशनी बाहर खुलने वाली खिड़की से आ रही थी। खिड़की से एक विशाल बरगद का पेड़ भी दिख रहा था जिसकी कुछ शाखाएँ खिड़की तक पहुँच रही थीं। राज ने मोटे आदमी को नमस्ते की और उसने राज को अपने सामने वाली कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। उसने राज को लाने वाले आदमी से नाश्ता लाने को कहा और राज की ओर सम्मुख हुआ। उसने बिना किसी इण्ट्रोडक्शन के सीधे ही राज से बात करनी शुरू कर दी।

"देखिए यह देश के विरुद्ध काम करने वाली ताक़तों की एक साज़िश है। क्या नहीं था भारत में... यहाँ वह सब कुछ था जिसकी कल्पना की जा सकती है। फिर हमारे भोलेपन का फ़ायदा सबसे पहले तो उन मुल्लों ने, उन कटुओं ने उठाया जो हमारी सम्पदा लूटने हमारे घर पर लगातार वार करते रहे, जानते हैं कि सोमनाथ के मन्दिर पर सतरह बार

हमला हुआ और हर बार वहाँ से सोना, जवाहरात, धन इत्यादि लूटे गये? फिर हमारे स्वयं के नीच जात के लोगों ने, मलेच्छों ने इन मुसलमानों का साथ दिया और हमारे घर पर इनका राज हो गया। हम फिर भी चुप रहे, हमने अतिथि देवो भवः का मंत्र जपा... हिन्दू धर्म है ही ऐसा... वसुधैव कुटुम्बकम्... पर क्या हुआ? हमारी औरतों के साथ ज़बरदस्ती, हमारे घर में लूटपाट और हमारे लोगों का धर्म परिवर्तन। हमने कुछ नहीं कहा, भई सबको आज़ादी दी जो भी करें। हमारे धर्म में से ही सिख धर्म निकला, और अब देखिए ऐसे जताते हैं जैसे कि हम से बिल्कुल अलग हों... ख़ैर फिर अंग्रेज़ मलेच्छों की नज़र हम पर पड़ी। वो भी आ गये हमें लूटने, हमारी संस्कृति और विचारधारा को तबाह करने। हमें ग़रीब बनाया, हमारा ही उत्पाद हमसे ख़रीद कर हमें ही बेचा... गांधी जी ने इस मामले में उनको सही पहचाना। पर गांधी जी जैसे लोगों से क्या हिन्दू धर्म व संस्कृति की सुरक्षा हो पायेगी? क्या गांधी-नेहरू जैसे लोग पाकिस्तान बनने से रोक पाए? और पाकिस्तान ने हमें कितना नुक्सान दिया किसी ने अब तक इसका हिसाब लगाया है? यह का•का•का भी इन्हीं हिन्दू-विरोधी ताक़तों की चाल है। सब मिल गये हैं, देशद्रोही मुसलमान, सिख, अंग्रेज़... सब मिल गये हैं। पर सौभाग्य की बात है कि हिन्दुओं के बीच जागृति आई है, अब बात हद से आगे बढ़ गयी है। हिन्दुओं को इकट्ठा होना है और मिल कर भारत को दूध की नदियों वाला सोने का राष्ट्र बनाना है। कभी भी इतिहास में हमने हिन्दुओं के बीच इतनी एकता नहीं देखी है जितनी अब है, हमें... "

तभी कमरे में एक छोटे दस-बारह साल के लड़के का आगमन हुआ जिसके हाथ में दो प्लेटें थीं और कोकिल का भाषण बन्द हो गया। कोकिल जी के लिए रोज़ पुराने सुराजपुरा के बलवन्त मल हलवाई के यहाँ से पूरी-सब्ज़ी का नाश्ता आता था। लड़के के हाथ में दो प्याली चाय भी थीं। उसने प्लेटें और प्यालियाँ मेज़ पर धरीं और कोकिल को नमस्ते की। कोकिल ने जेब से दस रुपये का नोट निकाल कर उसे कहा कि पूरी-सब्ज़ी के पैसे बाहर से ले ले। लड़के के मासूम चेहरे पर प्रसन्नता से हँसी फूट पड़ी और उसके टूटे दान्त बाहर दिखने लगे। कोकिल ने राज को भोग लगाने का इशारा किया और स्वयं भी गरमा-गरम पूरी-सब्ज़ी पर टूट पड़ा।

राज की समझ में नहीं आया कि क्या किया जाए। एक तरफ़ तो उसे कोकिल के का•का•का पर विचार पता चल गये थे और वह सोच रहा था कि और कोई सवाल पूछा जाए कि नहीं और दूसरी तरफ़ उसे ऑफिशियल काम पर खाने का निमंत्रण स्वीकार करना ठीक नहीं लग रहा था। उसे कोकिल की बातों में दम तो लगा पर कहीं न कहीं यह भी दिखाई दे रहा था कि उसके दृष्टिकोण में कोई अभाव था। उन दिनों अयोध्या पर बाबरी मस्जिद के विध्वंस के आरोपियों पर चलने वाली जाँच की रिपोर्ट संसद में लाई गयी थी। मित्रों रिपोर्ट बनने में आठ साल लगे और आधिकारिक सूत्रों के अनुसार इस पर आठ करोड़ रुपये खर्च किए गये। मामला कुछ गरमाया हुआ था क्योंकि एकधारा पार्टी के सारे मुख्य

नेताओं को किसी न किसी रूप से इस रिपोर्ट में दोषी क़रार दिया था, रिपोर्ट का फ़ैसला था कि बाबरी मस्जिद का विनाश जान-बूझ कर किया गया, कि यह कार्यवाही सोच-समझ कर पहले से ही रची गयी थी। हिन्दू धर्म के नेताओं के अनुसार बाबरी मस्जिद के स्थान पर पहले राम मन्दिर था और चूँकि मन्दिर को तोड़ कर मस्जिद बनाई गयी थी इसलिए मस्जिद को तोड़ कर मन्दिर पुनः स्थापित करना लाज़मी था। यह साफ़ दिखता है कि जिन्होंने पहले मन्दिर तोड़ा होगा उन्होंने इस्लाम की गहराइयों में जा कर सूफ़ी इस्लाम को नहीं जाना होगा और जिन्होंने बाद में मस्जिद तोड़ी होगी उन्हें हिन्दू आध्यात्मकिता के अद्वैत फ़लसफ़े के बारे में ज़रा-सा भी नहीं पता होगा। दोस्तों, असलियत में तो दोनों, जिन्होंने मन्दिर तोड़ा या मस्जिद तोड़ी, एक ही थैली के चट्टे-बट्टे हैं। राज मन-ही-मन का•का•का की कड़ी भारत के हिन्दू-मुसलमान विवादों से जोड़ने लगा क्योंकि उसका पहला कारनामा, कम से कम का•का•का के रूप में किया जाने वाला पहला कारनामा बाबरी मस्जिद काण्ड के बाद हिन्दुओं-मुसलमानों के बीच होने वाली लड़ाइयों के बाद ही प्रकाश में आया था।

उसने एक ज़रूरी काम और फ़ोन करने का बहाना कर के खाने में लिप्त कोकिल से अनुमति माँगी और कहा कि वह बाद में उनसे मिलने आयेगा। कोकिल ने उसे अपनी प्लेट का खाना छोड़ते हुए देख कुछ नहीं कहा, शायद उसके दिमाग में उस प्लेट को भी चट करने की योजना बन चुकी थी। राज कमरे के दरवाज़े को खोल कर सीधा बाहर की ओर निकला

पर चूँकि रास्ता घुमावदार था वह इमारत के बीच वाले हिस्से में पहुँच गया, जहाँ वह विशाल बरगद का पेड़ था। उस पेड़ के पास ही एक अखाड़ा था जिसमें भगवा लंगोट पहने लोग वर्जिश कर रहे थे और कुछ लोग आपस में कुश्ती भी लड़ रहे थे। राज को लगा जैसे वहाँ ज़ोर-शोर से किसी ख़ास मक़सद की तैयारी की जा रही थी। पर उसने ध्यान नहीं दिया। उसने अपना मोबाइल फ़ोन निकाला और स्वाति का नम्बर मिलाया। फ़ोन बज-बज कर कट गया। वह सोच ही रहा था कि क्या किया जाए तभी उसे एक कमरे की खिड़की से कोकिल इशारे करते हुआ दिखाई दिया। कोकिल उसे ही बुला रहा था। राज उसके पास गया और उसे कहा कि वह रास्ता भूल गया था। कोकिल ने खाते-खाते ही अखाड़े में वर्जिश कर रहे एक लड़के को बुलाया। तब तक राज ने उससे पूछ ही लिया कि क्या वहाँ किसी ख़ास लक्ष्य के लिए एक्सरसाइज़ की जा रही थी? कोकिल ने कहा कि ऐसी कोई बात नहीं थी। उनकी संस्था को हमेशा मज़बूत लड़कों की ज़रूरत रहती थी, क्योंकि अब हिन्दुओ को अपनी रक्षा स्वयं ही करने का युग आ गया था। उसने बताया कि पंचरंग दल में ऐसे बहुत से लड़कों को अभ्यास करवाया जाता था ताकि समय आने पर वे हिन्दुओं की रक्षा कर सकें। तब तक वह लड़का पास आ गया था और कोकिल ने उसे राज को बाहर का रास्ता दिखाने के लिए बोल दिया। राज इसके पीछे-पीछे गलियारे में चल ही रहा था कि उसके फ़ोन की घण्टी बजी। नम्बर स्वाति का था। उसने स्वाति से शाम को मस्जिद में मिलने का समय तय

कर लिया। अन्दर ही अन्दर उसने सोचा कि भाग्य की बात थी कि स्वाति शाम को खाली थी। राज ने सोचा कि मस्जिद के बाद उसे खाने पर ले जा कर होटल छोड़ते वक़्त गेस्ट हाउस में रहने की बात बोल देगा। इमारत से बाहर निकलते ही वह सीधा अपनी जीप की ओर बढ़ा। जीप में बैठ कर विचार करने लगा कि कहाँ जाना चाहिए। कल उसने इंकलाब लालपुरी से मिलना तय किया तो था पर सुबह-सबह ही उसका फ़ोन आ गया था कि आज उसका मिलना संभव नहीं था, और यह कि वह उसे फ़ोन कर बाद में मिलने के लिए बतायेगा। राज को कोई और साफ़ सुराग नहीं मिल रहा था और कोकिल से मिलने के बाद उसने सोचा कि उसकी बातें और नज़रिया दोनों जायज़ ही थे। राज के माता-पिता पाकिस्तानी पंजाब से आए हुए रिफ्यूजी थे जो पारटिशन के समय मुश्किलें झेल-झेल कर और लुट-पिट कर आए थे और शिमला में जा कर बस गये थे। वे कट्टर हिन्दु नहीं थे पर पारटिशन के अनुभव ने मुसलमानों के प्रति उनकी अविश्वास की भावना को बहुत शक्तिशाली बना दिया था, और यह भावना उनके बच्चों में भी घर कर गयी थी। राज के दादा-दादी और नाना-नानी ने तो और भी ज़्यादा दुख झेले थे। सो कोकिल ने जो भी कहा उसे राज बख़ूबी समझता था, और किसी न किसी स्तर पर उसकी सोच भी ऐसी ही थी। का•का•का की फ़ाइल को पढ़ कर भी सबसे पहले उसका शक़ ज़ाहिर है खान परिवार के सदस्यों पर गया था, रघुवंशी परिवार पर बिल्कुल नहीं। जीप में अचानक उसे ख़्याल आया कि काका शर्मा ने

इंकलाब लालपुरी के पिता के ट्रकों के कारोबार के बारे में कुछ कहा था। उसने अपने ड्राइवर से पूछा कि क्या वह इंकलाब लालपुरी के पिता की ट्रक कम्पनी के दफ़्तर का पता जानता था? ड्राइवर को पता मालूम था और राज के कहने पर जीप इंकलाब लालपुरी के पिता की कम्पनी के दफ़्तर की ओर मोड़ ली गयी। इंकलाब के पिता सरफ़राज़ ख़ान अक़बर की माँ के चचेरे भाई थे। राज ने पता करवाया था कि उनका व्यापार पूरे भारत में फैला हुआ था। पिछली रात को सुराजपुरा वाली घटनाओं की फ़ाइल में राज ने का•का•का का सरफ़राज़ ख़ान से सम्बन्धित मामला पढ़ा था और उसे हैरानी हुई थी कि यह बात उसकी सी०बी०आई० वाली फ़ाइल में क्यों छूटी हुई थी। हुआ यूँ था कि जब सुराजपुरा में चुनाव हुए थे तो जनाधार पार्टी (जो बाद में चुनाव जीत भी गयी थी, हालाँकि उसकी सरकार अन्य तीसरे मोर्चे के दलों की सपोर्ट से ही बन पाई थी) ने चुनाव प्रचार में अपनी पूरी ताक़त लगा दी थी। मित्रों पार्टी के ताक़त लगाने का मतलब है उन व्यवसायिओं, उद्योगपतियों और पैसे वालों के माल-मत्ते का चुनाव में खर्चा होना जिनको भविष्य में पार्टी के जीतने की स्थिति में शासक दल का सहयोग प्राप्त होता है। एक सरकार अपने काम करवाने में बहुत पैसा खर्च करती है और अपना काफ़ी काम वह अन्यों से करवाती है, जिसकी एवज़ में अच्छा-ख़ासा पैसा दिया जाता है, उन्हीं शर्तों पर जो दोनों को क़ुबूल हों। दूसरे शब्दों में कहें तो चोर-चोर मौसेरे भाई। सरकार का साथी बनने का अवसर सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी हाथ लगने के

बराबर होता है। इसीलिए पैसे वाले अपना पैसा राजनैतिक दलों को चुनाव के समय देने में हिचकिचाते नहीं, बाद में यही इनवेस्टमेंट उनके बहुत काम आती है। सो सुराजपुरा में भी वही हुआ जो भारत की सारी तहसीलों में होता है, यानी राजनीति का नंगा नाच। पालिटिशयनों के एक-दूसरे पर सच्चे-झूठे प्रहार, नीचा दिखाने की कोशिशें, टीवी-रेडियो-प्रेस का भरपूर अनुपयोग, हर किस्म के मुद्दे पर बहसें, लड़ाइयाँ, नोच-खोंच, वगैरह वगैरह। सरफ़राज़ ख़ान बरसों से जनाधार पार्टी को सपोर्ट देते आ रहे थे। अगर इन सारे पिछले वर्षों का कच्चा-चिट्ठा ध्यान से देखा जाए तो यह सहयोग उन्हें लाभदायक ही हुआ था (अब उनका बिज़नेस तो पूरे भारत में फैला हुआ था न)। सो इन चुनावों में अन्य माँगों के साथ-साथ पार्टी ने उनसे एक ख़ास फ़रमाइश रखी। वह यह कि फिल्मी सितारे करन का पूरा-पूरा ख़्याल रखना। करन को जनाधार पार्टी ने सुराजपुरा में अपने कैन्डिडेट के प्रचार के लिए बुलाया था। और सरफ़राज़ ख़ान को उसके ट्रांसपोर्ट, रहन-सहन, खाने-पीने, सुख-सुविधाओं का ख़्याल रखना था, यानी कि यह सारा खर्चा उठाना था। सरफ़राज़ ख़ान ने इस ज़िम्मेदारी को सिर आँखों पर लिया। चूँकि उन्हें लगता था कि उनका बेटा कुछ ज़्यादा ही ऐशख़ोर हो गया था उन्होंने सोचा कि यह काम उसके मत्थे कर दिया जाए। इंकलाब तब अपने अब्बा के दफ़्तर तक में नहीं जाता था। उसके अम्मी-अब्बा सोचते थे कि उन्होंने उसका नाम इंकलाब रख के काफ़ी भारी गलती की थी, वह लड़का एक तरह से अच्छी ज़िन्दगी, अच्छे रहन-

सहन से बग़ावत कर रहा था, उसे सब कुछ आसानी से मिल गया था तो उसे रास नहीं आया। उन दिनों वह कालेज में नेतागिरी करता फिरता था। वह किसी दल में शामिल नहीं था पर कम्यूनिस्टों का साथ उसे बड़ा पसन्द था। उन दिनों जेएनयू में स्टूडेंट मार्क्सवादी पार्टी के मुखिया राजशेखर के क़त्ल से सारे देश के विश्वद्यालयों में कोई न कोई छात्र आन्दोलन छिड़ गया था। इंकलाब वैसे तो कोरेसपोन्डेंस से ग्रेजुएट डिग्री ले रहा था पर उसने सुराजपुरा विश्वविद्यालय में अपना अड्डा जमा लिया था और वहाँ के स्टूडेंट उसके अच्छे दोस्त बन गये थे। उसके ये दोस्त लगभग उसी की तरह थे, सच्चाई से अंजान, शायद इनोसेंट और अपने बड़े-बूढ़े के कमाए पैसों पर अपनी ज़िदंगी की गाड़ी खींचने वाले। स्टूडेंट मार्क्सवादी पार्टी के नेता राजशेखर को संसद सदस्य सिराजुद्दीन के गुण्डों द्वारा उसके निर्वाचन क्षेत्र के अन्दर ही मारा गया था क्योंकि उनकी नज़र में वह वहाँ की जनता को सरकारी तंत्र से बग़ावत करने का पाठ पढ़ा रहा था और सिराजुद्दीन को स्थिति बस से बाहर लग रही थी। राजशेखर की मौत के बाद भारत के अनेक विश्वविद्यालयों से छात्रों ने उसके क़त्ल वाले इलाके में आ कर विरोध प्रकट करने का निश्चय लिया। पूरे भारत से ट्रेनों, बसों, गाड़ियों में भर-भर कर सरकारी तंत्र और कैपिटलिस्म का विरोध करने छात्र वहाँ पहुँच रहे थे और इंकलाब लालपुरी भी वहाँ अपने साथियों के साथ गया था। वहाँ से वह बहुत इंप्रेस हो कर लौटा था और तब उसके पिता ने उसे करन की आवभगत और उसका कार्यक्रम मैनेज करने

में लगा दिया था। इंकलाब सरफ़राज़ और अमीना की पहली सन्तान था, और यह बहुत सालों बाद, बहुत दुआओं बाद उन्हें अल्लाह से सौगात में मिली थी। बहुत से पीर-फ़कीरों, दरगाहों, हजों को करने के बाद भी जब कोई आसरा न रहा तो इन्हें किसी ने लालपुर वाले बाबा के बारे में बताया। कहा जाता था कि लालपुर वाले बाबा को अल्लाह का वरदान मिला हुआ था, वह अल्लाह का ख़ास बन्दा था। बाबा के पास जाते ही चमत्कार हुआ, बाबा ने बिना कुछ पूछे ही इंकलाब के अब्बा-अम्मी की आँखों में औलाद न होने की शिकायत पढ़ ली। उसने अमीना को रात भर अपने पास रखा और उसे दुआओं से लैस क़ुरान की आयतों से जड़े गिलास में एक घुट्टी पिलाई जिसके चार घूँट भरते ही अमीना बेग़म सूफ़ी ज़िक्र में सराबोर हो गयी। और सुबह होते ही बाबा ने बेग़म को अपने शौहर के पास वापस लौटा दिया यह कहते हुए कि काम हो गया था। क़रीबन नौ महीने बाद इंकलाब का जन्म हुआ। अम्मा-अब्बा ख़ुशी से फूले नहीं समाए और अल्लाह व बाबा की इज़्ज़त करते हुए उन्होंने उसका नाम इंकलाब लालपुरी रखा, इंकलाब इसलिए क्योंकि वह उनकी ज़िन्दगियों में एक इंकलाब ले आया था और लालपुरी इसलिए क्योंकि वो लालपुर वाले बाबा की अनूठी देन थी।

साथियों अगर आप इमामों, पीरों, पंडितों, बाबाओं और पादरियों के अनुसार चलें तो आपको जन्नत की गारंटी मिलती है। वैसे हर धर्म के अमीर अनुयायियों को यहाँ पृथ्वी से ही जन्नत नसीब है, उन्हें ज़रूरत है तो उन गरीब बंधुआ

मज़दूरों की जो उन्हें जन्नत में बनाए रखने के लिए ज़िन्दगी भर मेहनत करें।

तो इंकलाब लालुपरी करन का स्वागत करने की तैयारी में जुट गया। करन को हवाई जहाज़ की फर्स्ट क्लास की टिकटें भेजी गईं, नवाबी महल होटल में उसके लिए एक सुइट का इन्तज़ाम किया गया, उसको दिल्ली के हवाई अड्डे से लाने के लिए और सुराजपुरा में घूमने-घुमाने के लिए गाड़ी ठीक की गयी, जनाधार पार्टी के जिन-जिन समारोहों पर उसे जाना था उसका कार्यक्रम बनाया गया। लेकिन इंकलाब कुछ समय पहले ही राजशेखर के क़त्ल के ख़िलाफ़ हुए आन्दोलन से लौटा था, सो एक फिल्मी सितारे के लिए इस तरह से प्रबन्ध करना उसे कुछ भा नहीं रहा था, बल्कि ठीक से कहें तो उसे अपने अन्दर और बाहर के कोंट्राडिक्शन के बीच कोई लॉजिकल कड़ी नहीं मिल रही थी। उसे अपने उस सफ़र के दौरान गाए हुए वे मार्क्सिस्ट गाने याद आते रहते–

अमीरों की लाडो कोट-पैंट-साड़ी,

ग़रीबों की बिटिया प्यार सहारी...

और जब वह भारत के गाँवों की ग़रीबी की नवाबी महल होटल के ऐशो आराम से तुलना करता तो उसे लगता किस पचड़े में फंस गया था वह... इसीलिए मैनेज करते-करते वह कुछ ज़्यादा ही चरस-गांजा लगाने लगता और आराम से सब कुछ भूल जाता। उसकी इसी हालत में करन का आगमन हुआ। मित्रों करन और अन्य फिल्मी सितारे,

जिनका वर्णन इस कथा में हुआ है, ये सारे लगभग एक ही तरह से जीवन बिताते हैं। करन के जीवन में भी ऐसे ही बहुत उतार-चढ़ाव आये थे। अब कुछ अधेड़ उमर में पहुँचने के बाद उसे राजनीति में जाने की सुध लगी थी और वो जनाधार पार्टी को ख़ुश करने के चक्कर में था ताकि उसे कहीं से भी संसद चुनावी टिकट दिया जाए। करन की प्रसिद्धि का राज़ उसके फिल्माए खटिया वाले गाने थे, जिनमें उसने अपनी हीरोइनों के साथ कमर हिला-हिला कर दर्शकों की ख़ूब सीटियाँ और तालियाँ हासिल की थीं। पर ढलती उमर के सामने उसने घुटने टेकते हुए राजनीति में अपना दाँव लगाने का कदम उठाया। सो जनाधार पार्टी पर एक एहसान करने के लिए ताकि कल को पार्टी भी उसकी माँग का ख़्याल रखे करन सुराजपुरा के लिए निकल पड़ा। जब दिल्ली हवाई अड्डे पर इंकलाब करन को लेने गया तो बाहर आते ही उसने इंकलाब को फटकारना शुरू कर दिया। उसने इंकलाब को सुना-सुना कर शिकायतों की झड़ी लगा दी। कि उड़ान में उसे उसकी मनपसन्द व्हिस्की नहीं मिली, कि उसके जूते नये होने के कारण काट रहे थे, कि उसका फ़ोन मुम्बई में रह गया था और उसे अपनी बेटी को फ़ोन करना था, कि उसका सूटकेस घण्टो बाद दिया गया... वगैरह वगैरह। अपने इंकलाब मियां तो सब कुछ ऐसे सुने जा रहे थे जैसे कि उन्हें बेहद अफ़सोस हो, जैसे वो एक नीच से नीच मुलाज़िम हो जो अपने आक़ा से रोज़ की डाँट खा रहा हो। इंकलाब को ख़ुद करन को लाने की कोई ज़रूरत नहीं थी, उसके अब्बा की कम्पनी का कोई

और कर्मचारी बिना किसी मुश्किल से आ सकता था पर इंकलाब ने ख़ुद आने फ़ैसला किया क्योंकि उसे दिल्ली में कनॉट प्लेस के हनुमान मन्दिर के पास अपने किसी दोस्त से मिल कर चरस खरीदनी थी। और करन की बकबक के सामने वह अफ़ग़ानी चरस के धीमे-धीमे नशे में झूम रहा था, बल्कि उसे करन का बिना रुके बोलते रहना अच्छा लग रहा था और वह उसे मनाने की कोशिश को भी पसन्द कर रहा था। करन जैसे-कैसे गाड़ी में बैठा और वे लोग सुराजपुरा की ओर रवाना हुए। अचानक इंकलाब को एक बात सूझी, करन के गुस्से को थामने के लिए उसने गाड़ी हरियाणा-दिल्ली बार्डर पर रुकवाई और करन के लिए बर्फ़ जितनी ठण्डी बीयर की बोतलें खरीदीं। करन ने बीयर की बोतलें गटकीं और उसे कुछ शान्ति का अहसास हुआ। गाड़ी तेज़ रफ़्तार पर चलती हुई जल्दी ही सुराजपुरा पहुँच गयी और इंकलाब ने करन को शाम होते-होते नवाबी महल होटल में उसके कमरे में छोड़ दिया।

मित्रों, उसी चुनाव के प्रचार लिए जनाधार पार्टी ने कुछ अन्य फिल्मी अभिनेताओं का भी इन्तज़ाम किया था, जिनमें अली ख़ान और मुतज़्ज़र ख़ान शामिल थे। इन लोगों के आने का इन्तज़ाम अन्य सेठ-साहूकारों ने किया था। करन, मुतज़्ज़र और अली नवाबी महल होटल में ही ठहरे थे और वहाँ तीनों को एक साथ मिलने पर काफ़ी आनन्द आया। तो झट से शिक़ार का कार्यक्रम बन गया क्योंकि सुराजपुरा के नवाबी परिवार में बरसों से शिक़ार करने की प्रथा थी और

सुराजपुरा के जंगल में ख़ास तौर पर जानवर शिक़ार के लिए ही पाले जाते थे। यह दूसरी बात है कि उन में से कुछ जानवरों का शिक़ार वर्जित हो गया था। चूँकि इंकलाब का बर्ताव करन को बहुत भाया था तो उसने उसे फ़ोन कर के कहा कि उन तीनों के लिए चुनाव प्रचार के अलावा किसी समय में शिक़ार का प्रबन्ध करे। इंकलाब को जब यह फ़ोन आया तब वह और ज़्यादा नशे में ग़ाफ़िल हो चुका था और उसके मुँह से हाँ निकल गया और करन ने यह ख़ुशख़बरी अपने साथियों को दे दी। इंकलाब को यह भी नहीं याद रहा कि जनाधार पार्टी ने पावर में आ कर शिक़ार पूरी तरह से बन्द करवाने का वायदा किया था क्योंकि सुराजपुरा जंगल के आस-पास रहने वाले जन-आदिवासियों ने हाल में ही जानवरों की घटती संख्या से परेशान हो कर बहुत विरोध जताया था और जनाधार पार्टी ने इनके वोटों के लिए शिक़ार की इजाज़त न देने का वायदा कर दिया था। उन जंगलों में हिरण का शिक़ार पहले से ही वर्जित था क्योंकि उनकी आबादी लुप्त होने के क़गार पर पहुँच चुकी थी। करन, अली और मुतज़्ज़र शिकार करने के आइडिये से बेहद ख़ुश हो गये और होटल के बार में चले गये जहाँ सारी रात उन्होंने शराब पी कर अपनी ख़ुशी का इज़हार किया। तीनों को यह भाग्य का खेल लगा कि इस तरह से वे वहाँ मिले और शिक़ार करने का सुअवसर उन्हें मिला।

उन दिनों एक अन्य संयोग भी हुआ। सत्तर-अस्सी के दशक के अभिनेता इमरोज़ ख़ान का लड़का शाहिद ख़ान जो

अपने पिता की पहुँच और पैसे के बल पर ख़ुद भी एक एक्टर बन चुका था, सुराजपुरा जंगल के पास होने वाली अपनी किसी फिल्म की शूटिंग पर आया हुआ था। वह भी नवाबी महल होटल में ठहरा था और इन चारों की मुलाक़ात सुबह-सुबह होटल के रेस्टोरेंट में हुई जहाँ ये सब नाश्ता करने उतरे थे। सभी को जल्दी-जल्दी उठना पड़ा था क्योंकि राजनैतिक समारोह और शूटिंग दोनों की शुरूआत सुबह-सुबह ही होने वाली थी। और हाल यह हुआ कि जहाँ चार यार मिल जाएँ वहीं रात हो गुलज़ार... फट से बातें हुईं, एक-दूसरे के हाल बाँटे गये और शिक़ार के कार्यक्रम का नक़्शा खींचा गया। सभी को शिक़ार के नाम पर बहुत एक्साइटमेंट हो रही थी। मित्रों, भारत की एलीट क्लास में ऐतिहासिक रूप से ही शिक़ार बहुत मायने रखता है। फिर चाहे शिक़ार जानवरों का हो, अपने से निचली क्लास वालों का हो, पैसे का या फिर अपने साथी इंसानों की फीलिंग्स का, उनके पूरे के पूरे वजूद का। इस तरीक़े की शिक़ार प्रथा काफ़ी हद तक उन इम्पीरियलिस्ट अंग्रेज़ों की देन है, जो भारत तो छोड़ गये पर अपनी बहुत-सी नाजायज़ निशानियाँ यहीं पर त्याग गये, जिनमें अंग्रेज़ी ज़ुबान, एक्सप्लॉयटेशन की आइडियोलोजी, भेद-भाव, पक्षपात की नीतियाँ और आम तौर पर तन, मन और धन से ग़रीब लोगों का शिक़ार करने, उनका फ़ायदा उठाने की विद्या सीखने को सबसे अधिक तवज्जो देने जैसी निशानियाँ शामिल हैं।

सो नाश्ता कर के सब अभिनेता दोस्त अपने-अपने धंधे पर निकल गये। इंकलाब करन को लेने आया और उसे

यह देख कर राहत हुई कि उस दिन करन शिकायत और फ़रमाइशें करने के मूड से बाहर निकल चुका था। और रात को नींद पूरी कर के इंकलाब भी नशे के चक्र से बाहर निकल ही चुका था, पर वह दोबारा उसमें प्रवेश करने की चाह से ग्रस्त हो रहा था। जब करन ने उसे होटल में बाकि अभिनेताओं की मौजूदगी के बारे में बताया तो उसे आभास हो गया कि करन आगे क्या कहने वाला था। उसे अब उन चारों के लिए शिक़ार पर जाने का प्रबन्ध करना था। इंकलाब को पहले तो यह विचार आया कि वह करन को टाल दे, फिर उसने सोचा कि क्यों न वह एक खेल खेले... सुबह होटल आते वक़्त उसे याद आया था कि जनाधार पार्टी ने जानवरों के शिक़ार को एक चुनावी मुद्दा बना लिया था, और पार्टी सुराजपुरा जंगल में शिक़ार ख़त्म करने के लिए क़ानून पास करने का वायदा भी कर चुकी थी। इंकलाब के मन में आपस में लड़ती हुई छविओं का जाल बिछा हुआ था, उसके भीतर राजशेखर के ख़ून का विरोध करने बिहार जा कर एण्टी गवर्नमेंट समारोहों में भाग लेने, और वहाँ जन-साधारण के साथ उठने-बैठने, रहने-सोने वाले पलों की यादें डेरा जमाए बैठी थीं, और उनके सामने उसकी आराम भरी ज़िन्दगी के सीन भी तेज़ हवा की तरह साय-साय करते हुए आ-जा रहे थे। शायद अफ़ग़ानी चरस का भी कोई तगड़ा असर उसके दिलो-दिमाग पर पड़ा था। इसलिए उसने सोचा कि वह उन चार अभिनेता मित्रों को एक चक्रव्यूह में फंसाए और उनसे शिक़ार करवा कर उनका शिक़ार करे। उसने करन को सुराजपुरा मैदान में चुनाव प्रचार

समारोह में छोड़ा, और गाड़ी को ड्राइवर समेत करन के लिए छोड़ कर टैक्सी से घर पहुँचा और अपने कमरे को अन्दर से बन्द किया। कमरे में उसने चरस भरा एक सूट्टा बनाया और उसके क़श गहरे खींचते हुए अपनी योजना तैयार करने लगा।

उधर बाकि दो अभिनेता, अली व मुतज़्ज़र भी अपने-अपने समारोहों में जनता को लुभाने पहुँचे। मज़े की बात यह थी कि करन और ये दोनों अलग-अलग पार्टियों का प्रचार कर रहे थे, और क़ायदे से देखा जाए तो एक-दूसरे के ख़िलाफ़ थे, पर हमारे भारत की संसद तक में सदस्य चाहे भले ही एक-दूसरे को काटने दौड़ते हों और ऐसा बर्ताव करते हों जिससे कि एक पाँच साल के बच्चे तक को शर्म आ जाए, लेकिन जहाँ अपने फ़ायदे का सवाल हो तो जानी दुश्मन भी जिगरी दोस्त बन जाते हैं, रंजिशें भुला दी जाती हैं, काँटों की जगह फूल खिल जाते हैं। और फिर एक आम भारतीय फिल्म एक्टर तो सिर्फ़ नाम और पैसे के लिए जीता है, उसे बाकि चीज़ों से क्या लेना-देना?

दूसरी तरफ़ परवेज़ ख़ान अपनी शूटिंग में बिज़ी था। वह उन दिनों काफ़ी टेन्शन में था क्योंकि उसकी पिछली कुछ पिक्चरें पिट गई थीं। वह मुम्बई से अपने लिए दस ग्राम कोकेन खरीद कर लाया हुआ था, और एक-एक घण्टे बाद गुसलख़ाने में जा कर उसे नसवार की तरह सूँघ रहा था। इससे वो आराम महसूस कर रहा था। मित्रों कोकेन अमीरों का फेवरेट ड्रग है, इसका एक-एक ग्राम पाँच-छह हज़ार रुपये तक का आता है। पर शाहिद को पैसे की कोई फ़िक्र

नहीं थी, फ़िक्र थी तो अपनी फिल्म के चलने की।

उधर इंकलाब के चरस से भरे दिमाग ने काम करना बन्द कर दिया था और उसकी जगह एक शैतानी, ख़ुराफ़ाती मानसिकता ने ले ली थी। उसने सोच लिया था कि उन एक्टरों को, जो अपने-आप को किसी शहंशाह से कम नहीं समझते थे, सबक सिखाना ज़रूरी था ताकि वे ज़मीन पर उतर जाएँ। उसने फ़ैसला किया कि यह खेल वह अकेले ही खेलेगा, क्योंकि वह नहीं चाहता था कि कुछ गलत हो और उसके अब्बा फिर से उसके पीछे पड़ जाएँ और उसका जीना हराम कर दें। सबसे पहले उसने एक बिना ड्राइवर वाली जीप का जुगाड़ किया। जीप उसे शाम को मिलने वाली थी और तब तक वह बाज़ार से छोटे स्पाई कैमरे ले आया। साथ में उसने सीक्रेट माइक्रोफ़ोन भी खरीदे। फिर वह पुराने सुराजपुरा में एक ऐसी दुकान में गया जहाँ शिक़ार का सारा सामान मिलता था। वहाँ से उसने किराये पर बन्दूकें लीं, और उन्हें असली की बजाय सिर्फ़ आवाज़ और धुआँ कर के जानवरों को डराने वाले नकली कारतूसों से भरा। इंकलाब ने चारों एक्टरों के लिए चार बन्दूकें, टेन्ट वगैरह लिए थे और साथ में शिक़ार का बाकि छोटा-मोटा सामान भी। वह किसी और नौकर को साथ ले जाकर अपनी स्कीम का भाण्डा नहीं फुटवाना चाहता था। इंकलाब के ख़ुराफ़ाती दिमाग में अब आइडिया उबलते पानी की तरह बुलबुले छोड़ रहे थे। उसने शाम को जीप उठाई और उसे घर ले जा कर उसके अन्दर व बाहर स्पाई माइक्रोफ़ोन और कैमरे लगा दिए। फिर उसने टेन्टों में भी यही किया। फिर

अपने दोस्तों के साथ वह युनिवर्सिटी के अपने अड्डे पर चला गया। दोस्तों के साथ कश खींचते-खींचते और जाम लगाते-लगाते उसने करन को फ़ोन किया और कहा कि सब इन्तज़ाम हो गया था, जब भी उनके पास एक दिन का समय होगा वे शिक़ार पर जा सकते थे। करन बहुत ख़ुश हुआ और बोला कि वह अपने दोस्तों और पार्टिवालों से बात कर के बतायेगा कि वे कब जा पाएँगे। इंकलाब की सभी गोटियाँ ठीक-ठीक पाले में पड़ रही थीं। वह चैन से अपने नशे के चक्र में घुलने लगा।

मित्रों, चार दिनों तक करन और उसके एक्टर साथिओं को राजनैतिक गलियारों में चहल-कदमी करने से मुक्ति नहीं मिली। इस दौरान इंकलाब ने भी करन की देख-रेख का ज़िम्मा अपने अब्बा के किसी नौकर के सिर पर डाल दिया, वह सिर्फ़ अपनी स्कीम पर ध्यान देना चाहता था। उन चार दिनों में एक बार उसने अपने दोस्तों के साथ नवाबी महल होटल में एक कमरा ले कर एक पूरी रात हाई क्लास काल-गर्ल्स के साथ मज़े लूटने (क़ायदे से लूटना नहीं कह सकते क्योंकि उन वेश्याओं की ऊँची पेमेंट करने के बाद वह ही लुटा) में बिताई। पाँचवे दिन करन और उसके साथियों को थोड़ी राहत मिली तो वे होटल के बार में शराब पीने बैठ गये। वहीं से करन ने इंकलाब को फ़ोन लगाया और अगला दिन शिकार पर जाने के लिए फिक्स किया। उसकी आवाज़ काफ़ी थकी-हारी लग रही थी तो इंकलाब ने सोचा कि क्यों न उन सबको भी उन मस्त वेश्याओं की सर्विस दी जाए जो उसका मन पहले लूट चुकी थीं। उसने करन को सीधे-सीधे ही यह

प्रस्ताव दे दिया। इंकलाब बकरे का सिर काटने से पहले उसे कुछ मोटा-ताज़ा करना चाहता था। करन और उसके दोस्तों ने शर्त सिर्फ़ यही रखी कि यह सेक्स पार्टी उन में से किसी के भी कमरे की बजाय कहीं और हो। इंकलाब ने एक नया कमरा बुक कराया और बाकि सारे इन्तज़ाम कर के करन को अपने साथियों के साथ कमरे में पहुँचने का समय दे दिया। उसने करन को अगली सुबह शिक़ार पर निकलने का समय भी दे दिया और अपनी करनी पर इतना ख़ुश हुआ, अपने-आप से इतना प्रभावित हुआ कि अपने बूते से ज़्यादा अफ़ग़ानी चरस के कश लगा गया और अपनी केपेबिलिटी से अधिक जाम पी गया।

उधर करन, अली, मुतज़्ज़र और शाहिद की रात बहुत सुहावनी बीती। उन्होंने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया लेकिन होटल के एक वेटर ने उनका बहुत ध्यान रखा, वह शुरू से उनके पीछे ही लगा रहा। उसने अपनी सेवा से उनका दिल जीत लिया और सेक्स मैराथॉन में उसने काफ़ी खान-पान पहुँचाया। ज़ाहिर है कि उस वेटर को एक्टरों से काफ़ी माल मिला। जब यह भोग पार्टी ख़त्म हुई तो काफ़ी रात हो चुकी थी और सारे एक्टर अपने-अपने कमरे की तरफ़ चले। करन ने सबको सुबह ग्यारह बजे उठने की ताक़ीद की और उसने उसी वेटर को कहा कि वह रिसेप्शन में जा कर उन सब को दस बजे उठाने के लिए कह दे। वेटर ने हुक्म बजाया और करन से आख़िरी बख़्शीश ले कर वह भी अपनी राह चला।

सुबह दस बजे सब अभिनेताओं के कमरों में नींद से

उठाने के अलार्म फ़ोन बजने लगे। किस्मत से सभी वक़्त पर जाग गये और ग्यारह बजते-बजते सभी होटल के रेस्टोरेंट में नाश्ता करने पहुँच गये। नीचे करन को देखते ही काला सफ़ारी सूट पहने एक काली दाढ़ी वाला आदमी जिसने अपने सिर पर ड्राइवरों जैसी टोपी पहन रखी थी उससे मिलने आगे बढ़ा। उसने करन को सलामी ठोकते हुए कहा कि उसे इंकलाब ने भेजा था, और इंकलाब को बहुत अफ़सोस था कि किसी अरजेन्ट काम की वजह से वह उनके साथ शिक़ार पर नहीं जा सकता था। उस आदमी ने कहा कि इंकलाब ने अपनी जगह उसे, यानी कलन्दर ख़ान को उनकी सेवा में भेजा था। कलन्दर शिक़ार के सारे रास्ते जानता था और वह उनको जीप में जंगल ले जाने के लिए आया था। करन और उसके दोस्तों ने इतना बढ़िया दिन बरबाद करने का कोई फ़ायदा नहीं देखा इसलिए वे नाश्ता करने के बाद कलन्दर के साथ जीप में सुराजपुरा जंगल की ओर चले। कलन्दर ने गाड़ी चलाते-चलाते एक काला चश्मा भी डाले रखा और पूछने पर बताया कि उसे लाल आँखों की बीमारी थी इसलिए वह चश्मा निकाल नहीं सकता था।

जंगल में पहुँच कर सारे एक्टर बावरे हो गये और अपनी-अपनी बन्दूकें इधर-उधर दागने लगे। बन्दूक हाथ में हो तो चूहा भी शेर हो जाता है। एक-दो घण्टे तक काफ़ी जानवरों, जिनमें वे हिरण भी शामिल थे जिनका शिक़ार करना अलाउड नहीं था, के ऊपर बन्दूक चलाने के बाद भी उनसे कोई जानवर न मरा। कुछ घण्टे और बीते, कोई शिकार हाथ

न आया और अब मायूसी उनके चेहरे से झलकने लगी। तब कलन्दर ने कहा कि शायद थोड़ा आराम करें तो बेहतर होगा। उसने प्रस्ताव दिया कि सब चल कर जीप में रखा खाना खायें और थोड़ा आराम कर के फिर से शिक़ार पर लौटें।

मित्रों, खाना खाने के बाद एक्टर लोग ऐसे सोए या सुलाए गये कि अगले दिन रात को ही नींद से जागे। चारों होटल के अपने-अपने कमरे में थे और एक-दूसरे को फ़ोन कर के वे करन के कमरे में इकट्ठे हुए। किसी को कुछ याद नहीं था। चारों के शरीर ज़बरदस्त रूप से दुख रहे थे, सारी मांसपेशियाँ टूटी-फूटी लग रही थीं, ऐसे लग रहा था कि किसी ने उन्हें सोटे से पीट-पीट कर नीला-लाल कर दिया था। डॉक्टर को बुलाया गया और जब उसकी प्रतीक्षा हो रही थी तब करन की नज़र अपने कमरे की मेज़ पर पड़े काग़ज़ पर पड़ी। उस काग़ज़ पर जो लिखा था उसे पढ़ कर और उसे अपने साथियों को सुना कर सबने यह फ़ैसला किया कि डॉक्टर को ज़रूरत से ज़्यादा पैसा दे कर उसका मुँह चुप करवा देंगे और उससे नहीं बताएँगे कि उनकी यह हालत कैसे हुई थी। पूरे एक हफ़्ते तक चारों एक्टर होटल के कमरे के बिस्तर पर पड़े रहे और इधर-उधर के बहाने मार-मार कर काम पर नहीं गये। उनका तो उठना-बैठना ही ज़बरदस्त दर्द से भरा था। उस काग़ज़ पर यह लिखा था–

प्रिय एक्टरों,

यह मत समझना कि इस जन्म के पापों की सज़ा अगले जन्म में मिलेगी, या यह कि इस

जन्म में अपने पैसों के ज़ोर से तुम कुछ भी कर पाओगे। निरीह जानवरों का शिक़ार करना जघन्य पाप है, और यहाँ सुराजपुरा में बहुत से लोगों का जीवन इन जानवरों से सैंकड़ों, हज़ारों वर्षों से जुड़ा है, तो ऐसा करना तुम्हें शोभा नहीं देता। दूसरी बात यह कि एक ही चेहरा रखो, रण्डीबाज़ी, शराबख़ोरी, नशाख़ोरी करते हो तो समाज में सच कहने की हिम्मत रखो, दोमुँहापन न करो। तुम सब की रण्डीबाज़ी और शिक़ार की तस्वीरें और वीडियो हमारे पास हैं, अगर भविष्य में हमें लगा कि तुम्हारा रास्ता ठीक नहीं है तो यह सब मैटिरियल जनता के सामने कर दिया जायेगा। जिन हिरणों को तुमने जंगल में गोली मारी थी उनका शिक़ार करना क्राइम है, और अगर वे तस्वीरें बाहर आईं तो सलाखों के पीछे तुम्हारा पहुँचना तय है। और भी बड़ी मुश्किलें तुम्हारे ऊपर गिर सकती हैं... इसलिए इस पिटाई को वरदान समझो और होश मे आओ!

ख़त के नीचे सुनहरी अक्षरों में का•का•का, क़ातिलों का क़ातिल लिखा हुआ था। चारों हीरों ने ख़त को पढ़ कर अलग-अलग रिएक्शन दिए। मुतज़्ज़र ख़ान को विश्वास नहीं हुआ और उसने कोई भी बात मानने से इंकार कर दिया। पुलिस के पास तो वह भी नहीं जाना चाहता था पर उसने का•का•का की बातों को गंभीरता से नहीं लिया। बाकि एक्टर

ज़्यादा डर गये थे और उन्होंने अपने कदम फूँक-फूँक कर रखने का फ़ैसला लिया। चारों ने इंकलाब को भी फ़ोन नहीं किया क्योंकि उन्हें कुछ समझ ही नहीं आ रहा था। एक हफ़्ते बाद चारों अपना-अपना मुँह छिपाए दिल्ली हवाई अड्डे से मुम्बई के लिए रवाना हुए, उनके बदन अभी भी काफ़ी दुख रहे थे।

उधर इंकलाब को समझ नहीं आया कि करन ने उसे फ़ोन क्यों नहीं किया। नशे में चूर शिक़ार वाले दिन उसकी नींद समय पर खुली ही नहीं और सारा दिन वह घर में ही पड़ा रहा। अगले दिन जब उसे याद आया कि उसे करन के साथ जाना था तो उसे बड़ा पछतावा हुआ, और उसने शर्मिंदा हो कर सोचा कि उससे कोन्टैक्ट ही न करे, पर हैरानी की बात यह थी कि करन का कोई भी मैसेज उस तक नहीं पहुँचा था, क्या वह उससे नाराज़ नहीं था? इंकलाब को तो यह भी ध्यान नहीं रखा कि उसकी जीप शिक़ार वाले पूरे दिन उसके घर के सामने से गायब रही थी।

मित्रों, सभी एक्टरों ने मुम्बई पहुँच कर अपनी-अपनी राह पकड़ी और अपनी नार्मल ऐश की ज़िन्दगी जीने लगे। मुतज़्ज़र ख़ान ने कुछ समय बाद नशे में धुत हो कर अपनी गाड़ी से फुटपाथ पर सोते हुए कुछ ग़रीबों की जान ली, और अपनी गर्लफ्रैन्ड की पब्लिक में पिटाई वगैरह भी की। उसके इन काण्डों के कुछ महीनों बाद सुराजपुरा जंगल में रहने वाले आदिवासियों ने मुतज़्ज़र ख़ान के ख़िलाफ़ हिरण के अवैध शिक़ार करने की शिकायत पुलिस में दर्ज करवा दी, उनके

पास इस शिक़ार के फ़ोटो चमत्कारिक रूप से पता नहीं कहाँ से पहुँच गये थे। बेचारा मुतज़्ज़र अभी तक उस केस में फंसा है और उसे इस चक्कर में कुछ समय सलाखों के पीछे भी काटना पड़ा है–उसी ने का•का•का के सन्देश को सीरियसली नहीं लिया था।

यह किस्सा सी०बी०आई० की का•का•का वाली फ़ाइल में इसलिए नहीं पहुँचा क्योंकि अभिनेताओं द्वारा चुप्पी बना कर रखने के कारण इसकी भनक किसी को नहीं लग नहीं पाई। किसी ने ध्यान से न देखा पर जीप और बन्दूकों को लौटाने वाली रसीदों पर किसी का•का•का के सिग्नेचर थे, और नवाबी महल होटल में भी सेक्स पार्टी की शराब और खाने-पीने की रसीदों में भी वेटर का नाम का•का•का ही था, जो होटल की एडमिनिस्ट्रेशन को समझ नहीं आया क्योंकि उनके यहाँ का•का•का नाम का कोई वेटर था ही नहीं, पर चूँकि अभिनेताओं ने उन रसीदों की पूरी पेमेंट कर दी थी, होटल ने इस मामले को अधिक महत्त्व नहीं दिया।

* * *

राज की जीप सरफ़राज़ ख़ान के ऑफ़िस के सामने जा कर रुकी। ख़ान ट्रान्सपोर्ट्स का बड़ा-सा बोर्ड दरवाज़े के ऊपर लगा था। अन्दर घुसते ही दस-पन्द्रह मेज़ों पर बाबू लोग बैठे हुए दिखे जो काग़ज़ों, फ़ाइलों में लिखा-पढ़ी कर रहे थे। दूर कमरे के आख़िर में एक चपरासी एक मूढ़े पर बैठा था और उसके हाथ में एक चाय का गिलास था। राज पर किसी भी

बाबू ने ध्यान नहीं दिया। राज चल कर चपरासी के पास पहुँचा और तब उसकी नज़र साथ वाले दरवाज़े पर गयी। चपरासी भी आराम से चाय ही पीता रहा और उसने राज से आँखें भी नहीं मिलाईं। राज ने अपना स्वर थोड़ा कड़क कर के पूछा कि सरफ़राज़ ख़ान का कमरा कहाँ था? अब चपरासी ने अपनी नज़र उसकी ओर पलटी और उससे काम पूछा। राज ने कहा कि वह सी०बी०आई० से आया था और उसे सरफ़राज़ ख़ान से मिलना था। चपरासी ने कहा कि सर जी अभी नहीं मिल सकते थे और अगर उसे पैसे लेने थे तो वह दायीं ओर बैठे बाबू से बात कर सकता था। राज को आभास हुआ कि चपरासी को पता नहीं था कि सी०बी०आई० क्या चीज़ थी, उसने ज़ोर देते हुए कहा कि वह पुलिस का स्पेशल इंस्पेक्टर है और एक ज़रूरी काम के सिलसिले में सरफ़राज़ ख़ान से मिलने आया है। अब चपरासी की आँखें पूरी तरह खुल गईं, वह झट से खड़ा हो गया और उसने राज को दो मिनट इन्तज़ार करने के लिए कहा और दरवाज़े के अन्दर चला गया। वह जल्दी ही बाहर आ गया और राज से बोला कि क्या उसके पास अपना कोई कार्ड था? राज ने अपनी जेब में हाथ डाल कर एक कार्ड उसे दिया। चपरासी फिर अन्दर गया और एक मिनट बाद राज को अन्दर आने के लिए बोला। अन्दर एक और कमरा था जहाँ दो बाबू मेज़ों पर काम कर रहे थे। वहाँ एक काले चमड़े का सोफ़ा भी पड़ा था जो पूरे कमरे की शान बना हुआ था। चपरासी ने राज को सोफ़े पर बैठने को कहा और बोला कि थोड़ी देर में ही सर जी उसे अन्दर बुला लेंगे।

थोड़ी देर इन्तज़ार करने के बाद राज को एक फुसफुसाहट सुनाई दी। उसे कुछ समझ नहीं आया था इसलिए वह बैठा ही रहा। दोबारा आवाज़ आने पर भी उठा नहीं तो उसकी तरफ़ बैठे बाबू ने उसकी ओर चेहरा कर के कहा कि वह अन्दर जाए, उसे बुलाया जा रहा है। राज उठा और कमरे के बीचोंबीच लगे दरवाज़े के हैंडल को खोल कर अन्दर गया। दरवाज़े के बिल्कुल सामने बड़ी-बड़ी सफ़ेद मूँछों वाला एक आदमी बैठा था जिसने उसे हाथ से आगे आ कर उसके सामने मेज़ की दूसरी ओर पड़ी कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। जैसे ही राज बैठा उसने पूछ लिया कि वह राज की क्या सेवा कर सकता था। राज ने बिना कोई बैकग्राउण्ड रखे पूछा कि उसको यानी सरफ़राज़ ख़ान को का•का•का के बारे में क्या पता था। सरफ़राज़ ख़ान थोड़ा रुक-सा गया, जैसे उसके ख़्यालों की एक कड़ी टूट गयी हो। पाँच मिनट गुम रहने के बाद वह बोला कि का•का•का कौन? तभी कमरे का दरवाज़ा एकदम से खुला और एक जवान चेहरे वाले आदमी का प्रवेश हुआ। वह बिना कुछ बोले राज की बगल वाली कुर्सी पर बैठ गया और सीधे ही सामने सरफ़राज़ ख़ान से बोला कि पुलिस कमिश्नर वाला काम हो गया था। राज के कान पुलिस कमिश्नर का नाम सुन कर खड़क गये, पर सरफ़राज़ ख़ान ने बात को संभालते हुए उस आदमी से राज मलहोत्रा को मिलवाया, पर उसे राज का नाम याद नहीं था इसलिए उसने सिर्फ़ कहा कि यह सी०बी०आई० के अफ़सर हैं। जवान चेहरे वाले आदमी ने राज की ओर देखा और थोड़ी

देर रुक कर उससे पूछा कि कहीं वह राज मलहोत्रा तो नहीं था। राज के हाँ कहने पर उसने अपनी पहचान देते हुए कहा कि वह इंकलाब लालपुरी था। राज को अचरज हुआ क्योंकि इंकलाब उसे ड्रग एडिक्ट तो बिल्कुल नहीं लगा। इंकलाब का चेहरा तो इतना जवान लग रहा था कि उसकी उमर का अन्दाज़ा लगाना मुश्किल हो रहा था। सरफ़राज़ ख़ान को इंकलाब ने बताया कि राज उससे उस दिन मिलने वाला था पर चूँकि उसे एक ख़ास काम से जाना पड़ा था तो मुलाक़ात नहीं हो पाई थी। सरफ़राज़ ने कहा कि यह तो बहुत अच्छा हुआ कि राज उसके दफ़्तर में आ गया था और क़िस्मत ने उसे सरफ़राज़ और इंकलाब दोनों से मिलवा दिया था। फिर सरफ़राज़ ने इंकलाब की ओर देखते हुए पूछा कि क्या उसे किसी का•का•का के बारे में पता था? का•का•का, का•का•का, का•का•का, ऐसे तीन बार का•का•का कह कर इंकलाब हँसने लगा। उसने भड़भड़ा कर हँसते हुए कहा कि वो टीवी सीरियल नहीं देखता था। इस पर सरफ़राज़ ख़ान भी मुस्कुरा दिया और राज को अपने दिल में हल्की-सी चुभन का अहसास हुआ। उसने सीरियस होकर कहा कि सी०बी०आई० का•का•का पर एक केस चला रही है और यह कोई मामूली बात नहीं है। राज ने बताया कि देश की सुरक्षा का सवाल था और का•का•का केस के मुजरिमों को सख़्त से सख़्त सज़ा मिलने वाली थी। कड़क आवाज़ में उसने कहा कि अगर उनमें से किसी को भी का•का•का के बारे में कोई भी जानकारी थी तो देश के ज़िम्मेदार नागरिक होने के नाते उसे बताना उनका धर्म था, उनका कर्तव्य था।

राज के अचानक अपना स्वर बदलने पर इंकलाब चुप हो गया और सरफ़राज़ ने बात बनाई कि उनका यह मतलब नहीं था, कि वे तो केवल उन टीवी सीरियलों का मज़ाक कर रहे थे जिसमें सिर्फ़ सास-बहू के किस्से होते थे और जिनके नाम अक्सर 'क' अक्षर से शुरू होते थे। सरफ़राज़ ने आगे कहा कि उसे का•का•का की कोई जानकारी नहीं थी और उसके हिसाब से इंकलाब को भी कुछ पता नहीं था। यह कहते हुए उसने इंकलाब की ओर देखा तो इंकलाब ने कहा कि उसके भाई अक़बर ने उसे का•का•का के बारे में कुछ बताया था जो उसे अब याद नहीं था। उसने कहा कि सोहनी खन्ना जब सुराजपुरा आई थी तो का•का•का से रिलेटिड कोई घटना घटी थी, पर इससे ज़्यादा वह कुछ नहीं जानता था। सरफ़राज़ ने कहा कि वह अक़बर से राज को मिलवा सकता था। राज ने कहा कि वह ख़ुद भी अक़बर से मिलना चाहता था। उसने कहा अगर सरफ़राज़ अक़बर का फ़ोन नम्बर उसे दे दे तो उसका काम जल्दी हो जायेगा। सरफ़राज़ ने अपने फ़ोन में से अक़बर का नम्बर देख कर राज को बता दिया। तब तक उस कमरे की हवा में कुछ अजीबोग़रीब रूख़ापन-सा छा गया था। सरफ़राज़ ने उस रूख़ेपन को भाँपते हुए कहा कि अगर राज चाहे तो वे उसे अपने साथ खाने पर ले जाने का इनविटेशन देना चाहेंगे। उनके साथ खाने जाने की कल्पना मात्र कर के राज एकदम से अपनी कुर्सी से उठ बैठा। उसके मन में चटकारे ले-ले कर गोमांस खाते हुए सरफ़राज़ ख़ान और इंकलाब लालपुरी की तस्वीरें उभरीं और उसने जल्दी-जल्दी कहा कि उसको काफ़ी काम था और अगर ज़रूरत

पड़ेगी तो वह उनसे दोबारा सवालात पूछने आयेगा। यह कह कर वह मुड़ा और झट से कमरे से बाहर निकल गया।

अमेलिया के साथ अपने रिश्ते में यह गोमांस भी एक ऐसा मुद्दा था जिसके कारण उसका मन बार-बार उचाट हो जाता था। अमेलिया को किसी भी किस्म का मांस खाने से कोई परहेज़ नहीं था। वह तो मज़ाक-मज़ाक में यह भी कहती थी कि हिन्दुओं के लिए तो भारत की गाय पवित्र है, तो फ्रांस की गाय खाने में उन्हें क्या परेशानी हो सकती है? राज ने उसे कुछ बोला नहीं था पर उसने सोच रखा था कि अगर वे दोनों शादी करते तो अमेलिया को गोमांस खाना छोड़ना पड़ता। हालाँकि उसे नहीं पता था कि रिश्ता इतना सीरियस होने के बावजूद भी क्या अमेलिया जैसी पाश्चात्य लड़की के दिमाग में उससे शादी करने का ख़याल आया भी था या नहीं।

उसने बाहर आ कर जीप में बैठते हुए ड्राइवर को गेस्ट हाउस चलने को कहा। उसने सोचा कि खाना गेस्ट हाउस में ही खा लेगा। पर ड्राइवर ने आधे रास्ते में उसे बताया कि गेस्ट हाउस में खाने का समय ख़त्म हो चुका होगा। उसने ड्राइवर को किसी ढाबे में चलने के लिए कहा। ड्राइवर ने उसे बताया कि उसे एक बार बलवन्त मल हलवाई के यहाँ खाना ज़रूर खाना चाहिए। सुराजपुरा में बलवन्त मल हलवाई की दुकान सौ से भी अधिक सालों से मौजूद थी। छोटी-सी दुकान से शुरूआत कर अब बलवन्त मल का काम काफ़ी फैल चुका था। वहाँ की कचौड़ियाँ, पूरी-सब्ज़ी, पूरनियाँ, मिठाई, चाट-पापड़ी वगैरह बहुत अच्छे माने जाते थे। वहाँ शुद्ध घी का

प्रयोग किया जाता था और दुकान में पूर्णतः शाकाहारी उत्पाद बनते थे। राज ने चालक से पूछा कि क्या वहाँ रोटी वगैरह भी मिलती हैं या सिर्फ़ नाश्ता इत्यादि। चालक ने कहा कि अब वहाँ थालियाँ और रोटी-सब्ज़ियाँ भी मिलती थीं, और काफ़ी लोग वहाँ रोज़ खाना खाते थे। जीप बलवन्त मल की दुकान की तरफ़ मुड़ी।

उधर स्वाति ने खाना अपने होटल के रेस्टोरेंट में ही खाया। वह खाने के बाद थोड़ा आराम कर के शाम को राज से मस्जिद में मिलने जाने वाले थी। जब वह सो रही थी उसके फ़ोन की घण्टी कई बार बजी, और बज-बज कर थक गयी पर वह नहीं उठी। आधे घण्टे बाद उसके कमरे के दरवाज़े के नीचे से एक लिफाफा इतनी तेज़ी से अन्दर फेंका गया कि वो उसके पलंग के नीचे जा कर ही रुका।

दुनिया यानी अल्लाह, भगवान और जीसस का बूचड़ख़ाना

शाम को साढ़े पाँच बजे राज ने मस्जिद पहुँच कर स्वाति को उसके होटल से लाने के लिए अपनी जीप भेज दी जबकि उसका होटल पास में ही था। वह ख़ुद मस्जिद के मेन दरवाज़े पर खड़ा रहा और काका शर्मा का इन्तज़ार करता रहा।

स्वाति जब अपने होटल से बाहर निकली उसे वही गांधी चश्मे वाला आवारा आदमी सड़क के दूसरे कोने पर बैठा दिखाई दिया। स्वाति को देखते ही पता नहीं उसे क्या हुआ कि उसने गाना शुरू कर दिया :

"चमन-चूतियों की चलती है मैडम
कमीनों का है राज
झोंको इनको आग में मैडम
कर दो पर्दाफ़ाश!"

स्वाति अचम्भित हो उसे देखने लगी तो वह क़रीब

आ गया और उसे पागलों की तरह आँखें फाड़-फाड़कर घूरने लगा। स्वाति को थोड़ा अनईज़ी लगा और वह जीप में जाकर बैठ गयी। आवारा उसकी सीट के पास आया और बोला :

"डोंट फोरगेट टु सेव युअरसेल्फ फ्रॉम हिपोक्रेसी।"

स्वाति को फिर से उसी कोलोन का हल्का-सा भभका आया जिससे वह वाक़िफ़ हो चली थी और तभी जीप चल पड़ी। जाते-जाते आवारा बोला :

"बाय-बाय स्वीटहार्ट, सी यू सून!"

स्वाति और काका शर्मा लगभग एक साथ ही मस्जिद पहुँचे। राज ने सरसरी तौर पर स्वाति का इण्ट्रोडक्शन काका शर्मा से करवाया। काका शर्मा अपनी वरदी पहने हुए था, और उसने दरवाज़े पर खड़े चौकीदार से बात की जिसके उपरान्त चौकीदार ने उन्हें अन्दर आने दिया। दरवाज़ें की ड्योढ़ी पर तीन-चार मूढ़े पड़े हुए थे, चौकीदार ने उन मूढ़ों की ओर इशारा करते हुए काका शर्मा को वहाँ बैठने को कहा। काका शर्मा ने स्वाति को वहाँ बैठने की पेशकश की और फिर राज को। वह स्वयं खड़ा ही रहा। तब तक चौकीदार ने अन्दर मस्जिद में किसी को हाथ हिला कर इशारा किया, और जब एक लड़का पास आया तो उसने उसके कान में कुछ कहा। लड़का वापस चला गया और लगभग पाँच मिनट बाद एक दुबला-पतला आदमी वहाँ पहुँचा जिसकी दाढ़ी मुल्लों जैसी थी। उसने काका शर्मा से हाथ मिलाया और शर्मा ने उसे राज से मिलवाया, वह मस्जिद के इमाम ख़ुमारी का सेक्रेटरी था

और उसका नाम फ़ज़लुद्दीन था। उसने उन लोगों को अन्दर ले जाने से पहले एक-दो नज़रें स्वाति पर डालीं और फिर काका शर्मा को एक तरफ़ ले जा कर कहा कि स्वाति अपनी बांहें ढके। काका के कहने पर स्वाति ने अपना स्कार्फ बैग से निकाला और शॉल की तरह उसी से अपनी बांहें ढक लीं। फिर चारों लोग अन्दर चले। चलते-चलते स्वाति ने फ़ज़लुद्दीन से मस्जिद के इतिहास के बारे में कुछ बताने को कहा। फ़ज़लुद्दीन ने एक बार जो बोलना शुरू किया तो वह चुप ही नहीं हुआ। इस बीच स्वाति ने राज को हल्के से कोहनी मार कर वह पत्थर दिखाया जिसपर का•का•का लिखा हुआ था। अब वे मस्जिद के एक कोने में खड़े थे और फ़ज़लुद्दीन उन्हें बता रहा था कि उस मस्जिद के अहाते में लगे बरगद के पेड़ की बहुत इज़्ज़त थी। लोग दूर-दूर से वहाँ मन्नत मानने आते थे। कहा जाता था कि इमाम के ख़ानदान में एक बहुत बड़े पीर हुए थे, जिन्होंने अपना सारा जीवन यहीं बरगद के पेड़ पर ही बिताया था। उनके हाथ में जादू था, वे छू कर बीमारियाँ दूर कर देते थे और तावीज़ दे कर सब कुछ चंगा कर देते थे। स्वाति ने उससे पूछना चाहा कि क्या इस्लाम में हिन्दुओं को मस्जिद आने की इजाज़त नहीं होती है, पर वह चुप रह गयी क्योंकि राज ने पहले ही उस दीवार के बारे में पूछ लिया जहाँ अन्य नामों के साथ-साथ का•का•का का नाम भी जड़ा हुआ था। फ़ज़लुद्दीन ने उस दीवार को देख कर एक गहरी साँस भरी और कहा कि उस दीवार के पीछे एक लम्बी कहानी थी। उसने बताया कि वह दीवार एक सिम्बल था, उसके पीछे की

कहानी दुनिया के मुसलमानों को साथ जुड़े रहने का सन्देश देती थी, वह दीवार इस्लाम की पेशेंस की निशानी थी, उन मासूमों की निशानी थी जिन्होंने अपनी बलि दे कर इस्लाम की इज़्ज़त अफ़ज़ाही की थी। अबकी बार काका शर्मा ने फ़ज़लुद्दीन से पूछा कि उस दीवार का क्या माज़ी था? फ़ज़लुद्दीन ने भारी आवाज़ में बोलना शुरू किया। उसने कहा कि वे तो जानते ही थे कि सारे विश्व में मुसलमानों पर क़हर बरपाया जा रहा था। न्यूयॉर्क के हमले में तो लगभग तीन हज़ार ही मरे पर इराक़, फ़िलिस्तीन, अफ़ग़ानिस्तान, गाज़ा, पाकिस्तान में तो तीन हज़ार से भी ज़्यादा लोग हर महीने मरते हैं... यह कोई इंसाफ़ नहीं है। अल्लाह के बन्दों को मारना बुरी बात है, और क़ाफ़िरों ने क़यामत ला रखी है। कितने मासूमों का क़त्ल हो चुका है, कितने बच्चे और औरतें हलाल की जा चुकी हैं, शैतान के शागिर्दों ने अल्लाह को मानने वालों को इतना तड़पाया है कि सब्र का बांध टूट गया है। फ़ज़लुद्दीन के चेहरे को देख कर यह लग रहा था जैसे कि उसे पर्सनली दुनिया भर में मुसलमानों पर होने वाले हमलों से बहुत गहरी चोट पहुँची थी। उसने क़ाफिर और शैतान शब्दों का इस्तेमाल किया था जिन्हें सुन कर राज के कान खड़े हो गये थे पर उसे फ़ज़लुद्दीन इनोसेंट लग रहा था इसलिए उसने उसकी बातों पर विरोध नहीं जताया। फ़ज़लुद्दीन आगे बोला कि मुसलमानों के घर उजाड़े जा रहे थे, और उनके वजूद को बहुत बड़ा ख़तरा था। अब राज से रहा नहीं गया और वह बोला कि भारत में मुसलमानों को कोई ख़तरा नहीं था, वे पूरी तरह सुरक्षित थे

क्योंकि हिन्दुओं में सब धर्मों का आदर करने की भावना थी, और भारत सरकार माइनोरिटी ग्रुपों का ख़ास ध्यान रखती थी। फ़ज़लुद्दीन ने गुस्ताख़ी माफ़ करने की ताक़ीद की और बोला कि इस सब के बावजूद भी एक आम मुसलमान को हिन्दुस्तान में बुरी नज़रों से देखा जाता है, और आजकल तो हर कोई किसी भी मुसलमान को आतंकवादी समझ लेता है। उसने राज से प्रश्न किया कि क्या अल्लाह की इबादत करना कोई गुनाह था? राज कुछ बोलने ही वाला था कि उसे स्वाति का हाथ अपनी पीठ पर महसूस हुआ और उसने उसकी आँखों में झांका तो स्वाति ने उसे कुछ न बोलने का आग्रह किया। राज चुप हो गया और फ़ज़लुद्दीन ने इसे अपनी जीत समझ कर आगे बोलना शुरू किया। उसने कहा कि उनके मस्जिद के सम्पर्क इराक़ के कुछ मस्जिदों से हैं, क्योंकि सद्दाम हुसैन एक समय में भारत का दोस्त था और उस समय भारत के राजनेताओं का एक दल इराक़ और इरान गया था, एक सद्भावना मिशन के नाम पर। उस दल में भारत की ख़ास मस्जिदों के इमाम भी साथ गये थे और सुराजपुरा मस्जिद इमाम के अब्बा, जो उस वक़्त सुराजपुरा मस्जिद के इमाम थे वे भी उस दल में थे। उन्होंने इराक़, इरान की मस्जिदों व वहाँ के स्पिरिचुअल मुसलमान काउंसिलों के साथ अपने निजी सम्बन्ध बना लिए थे। फिर जब वह वापस लौटे तो ये सम्बन्ध सालों-साल तक चले। इन रिश्तों की वजह से इमाम साहब इरान व इराक़ से इस्लाम के बड़े-बड़े जानकारों को, मुल्लाओं-मौलवियों को बुला कर सुराजपुरा मस्जिद में मुसलिमों

को इस्लाम सिखाने, उसके सही रास्ते पर रौशनी डालने के लिए बुलाते थे। सुराजपुरा के लोकल लीडर भी इन कार्यक्रमों को सहयोग देते थे (सुराजपुरा में ख़ान परिवार के काफ़ी सदस्य इन कार्यक्रमों में हिस्सा लेते थे, और वे जनाधार पार्टी के भी सदस्य थे जिसने सुराजपुरा पर काफ़ी सालों तक राज किया था)। यह सब तब तक चलता रहा जब तक कुछ समय पहले इमाम को किसी पर्सनल कारणवश दुबई (यहाँ राज और स्वाति को का•का•का का इमाम वाला काण्ड याद आया और एहसास हुआ कि फ़ज़लुद्दीन को शायद इस घटना के बारे में कुछ नहीं पता था) जाना पड़ा। तब उन्होंने सुराजपुरा मस्जिद का काम अपने बेटे को दे दिया। पहले वाले इमाम अब जनता में कभी नहीं आते थे, वह अल्लाह की इबादत में, उसके ख़याल में लीन हो गये थे और दुनियादारी छोड़ दी थी।

छोटे इमाम के मस्जिद का काम संभालने पर इरान और इराक़ से सुराजपुरा मस्जिद के रिश्ते कम हो गये थे, और फिर न्यूयॉर्क में अल-कायदा के हमले के बाद भारतीय सरकार भी कुछ शक्की हो गयी थी। यहाँ पर फ़ज़लुद्दीन ने गहरी साँस ली और कहा कि वह दीवार उसे ये सारी यादें ले आती थी। उसने वो अच्छा समय भी देखा था और यह समय भी, और उसे लगता था कि बहुत बुरा समय आ चुका था... इस्लाम बहुत ख़तरे में था। राज को अब थोड़ी खुन्दक हो रही थी क्योंकि उसे लग रहा था कि फ़ज़लुद्दीन दिमाग से थोड़ा पूरा-सूरा था। उसने अपनी आवाज़ में थोड़ी तल्ख़ी लाते हुए कहा कि इन सब बातों का उस दीवार पर जड़े पत्थरों से क्या

मेल था? उसने काका शर्मा से आँखों ही आँखों में पूछा कि क्या फ़ज़लुद्दीन ठीक आदमी था या नहीं, और उससे धीमे से पूछा कि क्या वह जानता था कि वे पुलिस के आदमी थे? काका शर्मा ने सिर हिला के हाँ कहा। तभी फ़ज़लुद्दीन ने दोबारा बोलना शुरू कर दिया। उसने कहा कि अगर थोड़ा सहन करें तो उन्हें सारा चक्कर समझ आ जायेगा, उसने तो पहले ही कहा था कि कहानी लम्बी थी। बात जारी रखते हुए उसने कहा कि किस्मत की बात थी कि वह पुराने इमाम के लिए भी काम करता था, हालाँकि सेक्रेटरी के रूप में नहीं, और नये इमाम का सेक्रेटरी था, जिसके कारण उसे ये सब बातें पता थीं। आगे बढ़ते हुए वह बोला कि जब अमरीका ने इराक़ में सद्दाम हुसैन के रसायनिक हथियारों का अन्त करने के लिए फौज भिजवाई तो उन्होंने अल्लाह के बहुत से मासूम बन्दों को भी मौत के घाट उतार दिया और अब पता चला है कि वहाँ कोई हथियार नहीं सिर्फ़ तेल की खदानें है, जिनपर कंट्रोल करना ही अमरीका का मुख्य मकसद था। राज का मन अब चीख-चीख कर कह रहा था कि वह फ़ज़लुद्दीन का मुँह चुप करवाये, क्योंकि उसे यह तक नहीं पता था कि सद्दाम हुसैन कितना बड़ा शैतान था और क्यों उसका अन्त ज़रूरी था, कि किस तरह से इरान और इराक़ के मुल्लों-मौलवियों ने मुसलमानों को बहका-बहका कर रूढ़िवादी और पिछड़ा बनाए रखा है। दूसरी तरफ़ स्वाति का मन कुछ और ही कह रहा था, वह सोच रही थी कि फ़ज़लुद्दीन की बातों में सचाई थी पर उसे शायद यह नहीं पता था कि सद्दाम हुसैन को

अमरीका ने ही पाल-पोस कर बड़ा किया था, और यह कि मुसलमान कट्टरपंथी विचारों के कारण ही इराक़ और इरान में औरतों को कोई आज़ादी नहीं थी, वहाँ औरत को इस्तेमाल की वस्तु समझा जाता था। स्वाति ने सोचा कि फ़ज़लुद्दीन क्या जानेगा कि आज की दुनिया को सलमान रुश्दी जैसे लेखक चाहिए न कि उस पर जारी किए गये फ़तवे। अगर सलमान रुश्दी अल्लाह को नहीं मानता हो या फिर किसी तरह से अल्लाह की या क़ुरान की बेइज़्ज़ती भी करता है तो हमें कोई हक़ नहीं कि उसे कुछ करें, आख़िर रुश्दी किसी को मार तो नहीं रहा! अल्लाह, भगवान, सिख गुरू, ईसा, बुद्ध... असली पापी, अपराधी तो ये सब हैं, और उनके दल्ले यानी पण्डित-मौलवी-पादरी-गुरू इत्यादि जिन्होंने दुनिया को कसाईघर बना रखा है। भाड़ में जाएँ सारे अल्लाह, भगवान और उनके संगी-साथी जो इंसान को ग्रो करने से रोकते हैं, इन कमीनों को तो ज़मीन में सौ फुट अन्दर गाड़ देना चाहिए! तभी अचानक स्वाति को अपने विचारों के ख़तरे का भान हुआ और वह धरती पर लौट आई, उसने अपना गला खंखारा जैसे कि अगर किसी ने उसके मन की बातों को सुना हो तो वह खंखारने के शोर में सुनाई न दे। और उसी पल उसके फ़ोन ने जेब में वाइब्रेट करना शुरू किया। उसने फ़ोन निकाला तो नम्बर की बजाय प्राइवेट कॉल लिखा नज़र आया, और जब वह हेलो बोली तो एक रिकॉर्डिंग-सी लगने वाली मशीनी आवाज़ ने उससे पूछा–

"ख़त पढ़ा?"

स्वाति पूछने ही वाली थी कौन-सा ख़त लेकिन उसे बाकि लोगों की नज़रें अपनी तरफ़ फोकस देख कर फ़ोन काटना ही बेहतर समझा।

फ़ज़ुलद्दीन ने अपना लेक्चर बढ़ाया और बोला कि जब इराक़ में अमरीकी फौज ने क़हर बरपाना शुरू किया तो हमलों में लाखों, हज़ारों लोग मरने लगे। भर्रायी हुई आवाज़ में फ़ज़लुद्दीन लगभग रिरियाता हुआ बोला कि आज तक छोटे-छोटे बच्चे, गर्भवती औरतें, जवान, बूढ़े... सब मासूमों को मारा जा रहा है, बदला लिया जा रहा है उन तीन हज़ार का जो मरे थे न्यूयॉर्क में... बेइंसाफ़ी... और ओबामा ने भी कुछ नहीं किया, कुछ नहीं कर सकता है वो... है तो काला हब्शी और मुसलमान की औलाद भी है, पर ज़ुबान गोरे ईसाईयों की बोलता है...

आवाज़ को नार्मल करते हुए फ़ज़लुद्दीन बोला कि कुछ समय पहले बसरा में एक बच्चों के स्कूल पर अमरीकी सेना ने हमला किया, इस शक़ में कि वहाँ आतंकवादी छिपे बैठे थे। सारे स्कूल को उड़ा दिया गया, उसका कोई नामों-निशान नहीं बचा। तो वहाँ की सबसे बड़ी मस्जिद ने वहाँ से राख उठा कर क़फ़नों में भरी और राख से भरे उन सौ मरे हुए बच्चों के क़फ़नों को सारी दुनिया में भेजने का फ़ैसला किया, सारे संसार को अपने ऊपर होने वाले ज़ुल्मों के बारे में बताने के लिए, मदद की फ़रियाद करने के लिए। ज़्यादातर देशों ने ये कफ़न स्वीकार नहीं किए पर भारत के सुराजपुरा मस्जिद ने ये कफ़न स्वीकार किए, और वहाँ उस दीवार के

नीचे वे मिट्टी मे दबाए गये थे। यह कह कर फ़ज़लुद्दीन ने क़ुरान की कोई आयत पढ़नी शुरू कर दी। पूरी आयत पढ़ने के बाद वह बोला कि उस दीवार पर उन फ़ौत हो चुके भारतीय मुसलिमों के नाम थे जिनके परिवार वालों ने उनकी याद में इन इराक़ी बच्चों के कफ़नों के दफ़न का सारा खर्चा दिया था, यहाँ तक कि उन्हें इराक़ से यहाँ तक लाने में भी यही पैसा लगा था। राज और स्वाति को यह बात सुन कर थोड़ी हैरानी हुई, उन्हें लगा शायद वे का•का•का को इस किस्से से गलत जोड़ रहे हैं। राज उस का•का•का वाले पत्थर के क़रीब गया और उसने ध्यान दिया कि सिवाय का•का•का के बाकि सारे अक्षर छोटे-छोटे थे, और किसी अन्य भाषा में थे। का•का•का के अक्षर इतने बड़े थे कि दूर-दूर से दिखाई पड़ते थे, जैसे ख़ास तौर पर दिखने के लिए ही बड़े-बड़े बनाए गये हों, लोगों का ध्यान खींचने के लिए। उसे वहाँ नज़रें गढ़ाए देख स्वाति भी आगे बढ़ कर वहाँ पहुँची और पढ़ने लगी। उन दोनों को वह पत्थर पढ़ता देख फ़ज़लुद्दीन उनके पास गया और बोला कि वह पत्थर काफ़ी रहस्यमय था क्योंकि उसे या मस्जिद के किसी भी आदमी को उस पर लिखी भाषाओं के बारे में कुछ नहीं पता था। और तब अचानक स्वाति के दिमाग के कलपुरज़ों ने तेज़ी से काम करना शुरू कर दिया। उसने उस मस्जिद की इराक़ी कड़ी को का•का•का फ़ाइल में महेन्दर सिंह वाले मामले से जोड़ना शुरू कर दिया था।

हुआ यूँ था, मित्रों, कि एक-डेढ़ साल पहले जनाधार

पार्टी की सरकार में विदेश मंत्री राजा महेन्दर सिंह थे, जो बहुत पुराने कांग्रेसी थे। उनकी पर्सनैलिटी में राजाओं वाली गरिमा थी, और हो भी क्यूँ नहीं, वे भारत की आज़ादी से पहले किसी रियासत के राजकुमार ही थे। बहुत सालों से वह संसद में चुन कर आ रहे थे, और लोगों को, पार्टी को, उनके साथी राजनेताओं को उनपर एक पक्का विश्वास-सा था। बहुत-सी जनाधार सरकारों में वह मंत्री पद संभाल चुके थे। इस बार प्रेस वालों ने उनके विदेश मंत्री काल में हुए एक घोटाले का भाण्डा फोड़ा था। इस काण्ड से उनकी बरसों में कमाई सारी इज़्ज़त मिट्टी में मिल गयी थी। वैसे तो राजनेताओं को भारत में सिर्फ़ मूर्ख ही मन से पूजते हैं पर कुछ लोग इस क्षेत्र में ऐसे हैं जिनके आव-भाव देख कर ऐसा लगता है कि कम से कम यह व्यक्ति झूठा तो नहीं होगा, कि उसमें थोड़ी-सी इंसानियत तो होगी ही। महेन्दर सिंह इस घोटाले के ख़ुलासे के पूर्व ऐसे ही एक नेता माने जाते थे, पर ख़ुलासे के बाद उनको सिर छुपाने तक की कोई जगह नहीं मिली। इराक़ की सद्दाम हुसैन सरकार से दोस्ती के दिनों में भारत-इराक़ के बीच तेल और गेहूँ के एक्सचेंज का सिलसिला चला था। जो कम्पनियाँ इराक़ को गेहूँ बेचती थीं उन्हें तेल बाज़ार से सस्ते भाव पर मिलता था, और भारत में यह तेल आयात करने की पूरी इजाज़त थी, अपने ही दामों पर। घोटाले में यह हुआ कि महेन्दर सिंह के बेटे ने अपने दोस्त के साथ ऐसी ही एक कम्पनी बनाई और चमत्कारिक ढंग से उसी कम्पनी को इराक़ के साथ यह सस्ते दामों वाली ख़रीद-फ़रोख्त का लाइसेंस

मिला। महेन्दर के बेटे ने लाखों-करोड़ों रुपये कमाए, और जब भांडा फूटा तो यह सब सामने आया। इसमें महेन्दर सिंह के बेदाग़ होने का कोई सवाल ही नहीं था क्योंकि उस समय यह सब मामले विदेश मंत्री की हैसियत से वही देखता था। मारिया गंभीर ने अपनी नाक बचाने के लिए महेन्दर से संसद, जनाधार पार्टी और मंत्री पद से इस्तीफ़ा दिलवाया। चाहे भले ही सब कुछ गंभीर की नाक के नीचे हुआ हो, असली ज़िम्मेदारी (घोटाले को छिपाने की, और किस की?) तो महेन्दर की ही थी, न कि पार्टी हाई कमान गंभीर की। जो अपनी चोरी न छिपा पाया वही तो चोर कहलाता है! महेन्दर थक-हार गया, पर किसी ने उसकी एक न सुनी। विरोधी पार्टी वाले उसके आस-पास मण्डराने लगे, ताकि जनाधार के ख़िलाफ़ उसका नाम भुनाया जा सके।

ऐसे ही माहौल में महेन्दर और उसका बेटा कॉफी पीने दिल्ली शहर के ताज महल होटल के सबसे महँगे रेस्टोरेंट मे पहुँचे जहाँ एक अदद कॉफी का दाम एक साधारण भारतीय मज़दूर की दिहाड़ी से दोगुना या तिगुना होता है। ऐसी शान्त जगह में बैठ कर वे कुछ सोच-विचार करना चाहते थे, अपने ऊपर पड़ी मुसीबत का कोई हल निकालना चाहते थे।वहाँ उन दोनों को एक सूटिड-बूटिड आदमी ने रेस्टोरेंट के बाथरूम में बुलाया, किसी ज़रूरी व सीक्रेट बात करने के बहाने। वे दोनों आपस में मुँह ताकते उसके पीछे चले और बढ़िया ख़ुश्बू बिखेरते हुए पाखाने के अन्दर पहुँचते ही उस आदमी ने उन दोनों को मुँह पर कुछ लगा कर बेहोश कर दिया। उनकी नींद

बीस मिनट में खुली और उन दोनों ने अपने-आप को उसी अवस्था में पाया जिसमें वे पैदा हुए थे, नग्न। उनके कपड़े वहाँ नहीं थे और न ही उनके मोबाइल फ़ोन उनके पास थे। बाथरूम रिसेप्शन से दूर तो नहीं था, पर रास्ता होटल के मेन गलियारे से हो कर जाता था। करता क्या न मरता दोनों आधे घण्टे इन्तज़ार करने के बाद वहाँ से नंगे ही निकले और रिसेप्शन तक पहुँचे। जब तक उन्होंने अपना परिचय दिया और सब कुछ बताया, और जितना वक़्त उनके लिए कुछ तौलिये वगैरह लाने में लगा उतने समय में उनको देखने वाले लोगों को पता चल गया कि वे कौन थे और सब उनकी पीठ पर गाढ़ी काली स्याही से बड़े अक्षरों में लिखे वाक्यों को पढ़ कर काफ़ी हँस रहे थे। उन पर लिखा था–

महेन्दर सिंह चोर उसका बेटा भी चोर, हम दोनों बाप-बेटा चोर।

द्वारा

का•का•का, कातिलों का कातिल।

इस घटना को याद करने के बावजूद भी स्वाति उसका मस्जिद में का•का•का लिखे पत्थर से कोई क्लियर रिश्ता नहीं बना पाई। उसे कुछ हल्का-हल्का याद आ रहा था कि कफ़नों और राजनेताओं से सम्बन्धित एक घोटाला भी भारतवर्ष की पुण्य भूमि पर कुछ अरसे पहले हुआ था, उसने सोचा कि इस पर खोजबीन करेगी। चूँकि पत्थर पर हिन्दी के अलावा एक अन्य भाषा भी थी जिसके बारे में पता नहीं था

क्या थी, उसने सोचा कि उसकी फ़ोटो उतारी जाए और बाद में उसे किसी भाषा स्पेशलिस्ट को दिखा कर पता करे कि वहाँ क्या लिखा था। उसने अपना कैमरा निकाला ही था कि फ़ज़लुद्दीन ने उसे देख कर सिर हिलाना शुरू कर दिया। तभी काका शर्मा ने फ़ज़लुद्दीन से कहा कि यह पुलिस का एक कॉन्फ़िडेन्शियल केस था और वह मना नहीं कर सकता था। राज को लगा कि काका शर्मा स्वाति को भी पुलिस का नाम दे रहा था, और वह इसलिए क्योंकि वह स्वाति को राज की ख़ास समझ रहा था, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा और यह सोचा कि बाद में स्वाति से उस फ़ोटो की एक कॉपी माँगेगा क्योंकि वह भी पता लगाना चाहता था कि वहाँ का•का•का लिखे होने के पीछे क्या राज़ छिपा था।

स्वाति के मोबाइल ने फिर से घर्र-घर्र की पर उसने उसे वाइब्रेट करते रहने दिया। उसने का•का•का वाले पत्थर के साथ-साथ पूरी दीवार के फ़ोटो भी लिए। इसके बाद फ़ज़लुद्दीन ने उन्हें मस्जिद के इतिहास और उसके बनावट, वास्तु-शैली, जालियों, खम्बों के बारे में ख़ास-ख़ास बातें बताईं। स्वाति ने उसकी बातों को ध्यान से सुना और कई जगहों पर फ़ोटो खींचे। वह राज और काका शर्मा की कृतज्ञ थी कि उन्होंने उसे मस्जिद में आने की मंजूरी दिलवाई। आखिर में फ़ज़लुद्दीन उन्हें मस्जिद के दक्षिण भाग में भी ले गया जहाँ मन्दिर से सटी हुई दीवार थी। स्वाति को दूसरी तरफ़ मन्दिर के होने का भान होते ही अवधूत विभूति स्वामी का ध्यान आया और उसके शरीर में एक सिहरन-सी हुई। राज ने उसकी इस

सिहरन को भाँप लिया और उसने उसकी आँखों में आँखें डाल कर पूछा कि क्या वह ठीक थी? स्वाति ने संभलते हुए दबे-दबे शब्दों में कहा कि हाँ और यह कि उसे सब कुछ बाद में बतायेगी। अगर बाहर का कोई आदमी उन दोनों को इस तरह से दबी-दबी बातें करते देखता तो निश्चय ही सोचता कि दोनों के बीच कुछ चक्कर था... पाठकों भारत में काफ़ी लोग इसी चक्कर की तलाश में आँखें घुमाते रहते हैं कि कहीं कोई कुछ ऐसा देखने को मिल जाए जिससे आँख व मन तृप्त हो जाए। आम लाइफ़ में ये लोग अपने-आप को इतना दबाते हैं, अपनी जंगली इच्छाओं का इतना दमन करते हैं कि किसी को प्यार करते देख आँखें चौंधिया जाती हैं। गोरे-गोरे फिरंगी जब यहाँ आते हैं तो देखिए कितना बवाल मच जाता है, लोग उनके पीछे लग जाते हैं, उनके साथ फ़ोटो खिंचवाते हैं, और अगर वे आपस में कुछ प्रेमालाप कर रहे हों या आपस में मस्त हो कर बातें भी कर रहे हों तो जनता अपने चक्षु फाड़-फाड़ कर देखने लगती है। अंग्रेज़ों ने अपने राज के दौरान पब्लिक में प्यार दिखाने को क्राइम माना था, पर आज़ाद हिन्दुस्तान ने भी इस क़ानून को अभी तक नहीं पलटा है। इसीलिए आज आपको इसी पावन भूमि भारत में ऐसी राजनैतिक पार्टियाँ और लोग भी मिलते हैं जिनके अन्दर प्यार का, दबाए गए सेक्स का सोता हुआ ज्वालामुखी भड़क रहा होता है, जो किसी और को सब के सामने ज़रा-सा प्यार करते देख ही फूट पड़ता है और सही निकास मार्ग न मिलने पर मार-कुटाई में तब्दील हो जाता है। मुम्बई का तलपड़े परिवार इसी तरह से सुर्ख़ियों में

आया और अब यही उनकी कमाई का ज़रिया बन गया है। इनकी पार्टी के लोग यही करते हैं, अगर कोई सबके सामने अपने प्रेमी या प्रेमिका को स्नेह दिखा रहा हो तो इनके तन-बदन में आग लग जाती है, अगर भारत में कोई सेंट वैलेंटाइन डे मनाता हो, तो इनके मन में हाहाकार मच जाता है, अगर इनके प्रान्त महाराष्ट्र में कोई हिन्दी में बात करता हो तो इनका मराठी-मानुस, यानी कि मराठी राक्षस अपनी तन्द्रा से जाग जाता है। अगर कोई बाहर से आ कर इनके राज्य में काम करके राज्य को आगे ले जाता है तो इनके मन-मन्दिर में शोले फ़ड़क उठते हैं। इनके इन बुराईयों को दूर करने के तरीकों में एक नयापन है, वह है हिंसा का प्रयोग। इनके चाहने वाले भी, ज़ाहिर बात है इनके जैसे ही हैं यानी परले दरजे के मसखरे और जोकर! का•का•का का अजीबोग़रीब हथौड़ा यहाँ भी पड़ा। हुआ यूँ कि तलपड़े परिवार के सर्वेसर्वा भाऊ तलपड़े ने महाराष्ट्रवासियों को हिन्दी का उपयोग न करने की हिदायत दी, क्योंकि उसके अनुसार महाराष्ट्र में वहीं की भाषा बोली जानी चाहिए थी। भाऊ तलपड़े ने यह हिटलर-वादी फ़रमान जारी कर दिया और अपनी पार्टी महादेव सेना के कार्यकर्ताओं को यह ज़िम्मेदारी दी कि वे इस बात का ध्यान रखें कि महाराष्ट्र में मराठी का अपमान न होने पाए। उन दिनों विरेन्द्र कुमार की बीवी, डिम्पल कुमार ने एक फ़िल्म के उद्घाटन समारोह में बोला कि हिदीं फ़िल्मों की पब्लिसिटी तो हिन्दी में ही करनी चाहिए, हिन्दी नैशनल भाषा जो ठहरी। सो मीडिया में क़हर मच गया। महादेव सैनिकों ने वह फ़िल्म

महाराष्ट्र के सिनेमाओं में चलने से रोक दी, और बहुत-सी तोड़-फोड़ की, मराठी के नाम पर काफ़ी नुक्सान हुआ, अफ़रा-तफ़री मची, बहुत लोग घायल हुए, सामान्य जीवन अस्त-व्यस्त हुआ, स्कूल-कॉलेजो में छुट्टी मनाई गयी। आख़िरकार डिम्पल के पति विरेन्द्र को जनता में भाऊ तलपड़े से माफ़ी माँगनी पड़ी, चूँकि फ़िल्म के व्यापार का सवाल था, भाषा की फ़िकर किसे थी? भाऊ तलपड़े ने बड़प्पन दिखाते हुए माफ़ी स्वीकारी और स्थिति सामान्य हुई, उसे मराठी से कोई मतलब नहीं था, मतलब था सिर्फ़ अपनी शक्ति और पहुँच दिखाने से। घटना के एक सप्ताह बाद भाऊ तलपड़े मुम्बई के अपने बंगले में नाश्ता कर रहा था कि अचानक उसपर बेहोशी छाने लगी। उस वक़्त उसके बंगले में और कोई नहीं सिर्फ़ रसोइया ही था, सिक्योरिटी के सारे कर्मचारी बाहर तैनात थे। अर्ध बेहोशी की हालत में उसने देखा कि रेशम का काला कुर्ता-पायजामा पहने, लाल लबादे वाला एक आदमी जिसके मुख पर मुखौटा जड़ा था उसके सामने आया और दबा कर उसने दो चांटे उसके गालों पर रसीद किए। भाऊ तलपड़े पूरा बेहोश नहीं हुआ, शायद उसे आधा बेहोश करना ही उस मुखौटे वाले आदमी का मक़सद था। उस आदमी ने तलपड़े से यह कहा–

''अबे मसखरे सारी भाषाओं का सम्मान करना सीख... कोई भी भाषा किसी की बपौती नहीं होती, सारी भाषायें सारे संसार की धरोहर हैं। भाषाओं के नाम पर राजनीति करेगा तो नरक में ज़रूर जायेगा, अपने

जीवन में कुछ अच्छा काम कर, कुछ सीखने की कोशिश कर। अपना विरोध जताने के हज़ार पीसफुल तरीके भी हैं, दूसरों को नुक्सान पहुँचायेगा तो ख़ुद भी कहीं न कहीं नुक्सान पायेगा, इस लाइफ का हिसाब इसी लाइफ में होगा! अपने बेटे और अपने भतीजे से भी कह कि अपनी सीमा में रहें, आज तेरे साथ यह हल्का मज़ाक किया है और आगे जा कर हम सीरियस सज़ा भी देना जानते हैं। अपना यह जोकरों-सा रूप भी बदल। इतनी उमर हो गयी है, बेवक़ूफ़ियाँ छोड़ दे भइया!''

और यह कह कर उस आदमी ने, जो पाठकों आपको पता चल चुका होगा कि का•का•का ही था, तलपड़े की गरदन पर जलते हुए गरम ठप्पे से एक छोटा निशान दाग दिया, जिसमें का•का•का लिखा था। कमरे की अलमारी में पड़े उसके सारे कपड़ों को भी कैंची लगा कर इधर-उधर से काट दिया गया था, और तो और जो कपड़े उसने पहन रखे थे उन्हें भी तार-तार कर दिया गया था। बाद में पूरा होश आने पर तलपड़े ने किसी को कुछ नहीं कहा और तब से सबके सामने अपनी गरदन के उस भाग को छिपा कर ही वह बाहर निकलता है। अपने सी०बी०आई० के दोस्तों से उसने इस घटना का ज़िक्र अवश्य किया जिसकी वजह से यह बात राज और स्वाति की फ़ाइलों में आई।

* * *

दोस्तों मस्जिद की सैर करते-करते रात हो गयी। राज ने

फ़ज़लुद्दीन से पूछा कि क्या इमाम उस समय मस्जिद में थे या नहीं। जवाब नहीं में मिलने पर उसने कहा कि वह इमाम से किसी दिन मिलना चाहेगा, इसलिए फ़ज़लुद्दीन फ़ोन कर के काका शर्मा को बता दे कि किस दिन यह हो पायेगा। फ़ज़लुद्दीन ने हामी भरी और ये तीन सैलानी, यानी राज, स्वाति और काका शर्मा मस्जिद से बाहर निकले। बाहर निकलते ही स्वाति का फ़ोन फिर से वाइब्रेट करने लगा। वह राज और काका से थोड़ा आगे चली गयी और फ़ोन में धीरे से हेलो कहा। वही मशीनी आवाज़ थी और सवाल भी वही था–

"लेटर मिला?"

"कौन-सा लेटर?"

"वही जो तुम्हारे कमरे में आज दोपहर छोड़ा था?"

"नहीं, पर आप हैं कौन?"

"का•का•का से मिलना है तो लेटर पढ़ो।"

यह कह कर फ़ोन काट दिया गया।

उधर जीप की ओर चलते हुए राज ने काका शर्मा को कहा कि वह मस्जिद में काम करने वालों पर नज़र रखे, क्योंकि उसे फ़ज़लुद्दीन का व्यवहार बहुत डाउटफुल लगा था, जैसे कोई गहरा राज़ उससे छिपाया जो रहा हो। काका ने हामी भरी और मामले को हल्का करते हुए पूछा कि क्या वे दोनों सुराजपुरा के एक स्पेशल से मस्त रेस्टोरेंट में रात का खाना खाना चाहेंगे? राज ने इस प्रश्न में थोड़ी रुचि दिखाते हुए स्वाति की तरफ़ अपनी आँखें फेरीं, पर स्वाति ने झट से कहा

कि आज रात को वह कहीं और जा रही थी इसलिए वह नहीं आ सकती थी। काका शर्मा ने मुस्कुराते हुए कहा कि कोई बात नहीं, किसी और दिन सही। यह कह कर उसने राज की ओर देखा जो स्वाति के कथन से कुछ पशोपेश में पड़ गया था। उसने राज से इजाज़त माँगी और अपनी राह पकड़ी। राज ने स्वाति से पूछा कि उसका रात का प्रोग्रैम क्या था? स्वाति कुछ झिझकी, क्योंकि वह राज को बताना नहीं चाहती थी कि वह अक़बर और उसकी प्रेमिका के साथ कबाब खाने जाने वाली थी। उसे लगा कि राज को यह प्रोफेशनल और पर्सनल ज़िन्दगी के बीच का यह संगम पसन्द नहीं आयेगा। और फिर यह तो स्वाति को पता चल ही चुका था कि राज मुसलिमों और ख़ास कर सुराजपुरा के ख़ान परिवार के बारे में क्या सोचता था, विशेष कर का•का•का के रेफरेंस में। अतः स्वाति ने राज को बोला कि उसे किसी से पर्सनली मिलना था। यह कह कर उसने बात ख़त्म की। राज को कुछ समझ नहीं आया। उसने स्वाति को देखते हुए कहा कि उसे स्वाति से आज कोई ज़रूरी बात करनी थी इसलिए वह चाहता था कि वे दोनों आज रात का खाना साथ-साथ खाएँ। स्वाति ने कहा कि उस रात तो यह नहीं हो सकता था, अगले दिन शायद मुमक़िन हो पाए। राज कुछ देर चुप रहा, फिर उसने सोचा कि स्वाति को गेस्ट हाउस में रहने का निमंत्रण तो दे ही दे। उसने स्वाति को कहा कि उसे लगता था कि जिस होटल में वह रहती ती वह उसके लिए ठीक नहीं था, और चूँकि उसे अपने सरकारी गेस्ट हाउस में जितने चाहे उतने कमरे बुक कराने की

आज़ादी थी वह चाहता था कि स्वाति वहाँ रहने आ जाए। स्वाति के मुख पर एक मुस्कान ने जगह ले ली, उसे राज के इनविटेशन देने के स्टाइल में राज की उसके प्रति भावना दिखाई दी। उसने अलविदा देने के अन्दाज़ में कहा कि वह सोचेगी और कल बता देगी। यह कह कर वह दूसरी ओर चल दी पर राज ने उसकी बांह थामी और पूछा कि क्या वह उसे कहीं छोड़ सकता था? स्वाति ने कोमलता से पकड़ी गयी बांह को छुड़वाया और कहा कि नहीं, उसे पुराने सुराजपुरा में ही कहीं पास में जाना था। तभी स्वाति को एक बात याद आ गयी, उसने अपनी घड़ी देखी और पाया कि कबाब खाने पर जाने के लिए अभी समय था, उसने राज को कहा कि अगर वह चाहे तो वे दोनों अभी कहीं चाय-कॉफी पीने जा सकते हैं क्योंकि उसे राज को एक ज़रूरी बात बतानी थी। राज मान गया और वे दोनों किसी चाय-कॉफी की दुकान को ढूँढते हुए आगे बढ़ने लगे। राज को ख़्याल आया कि क्यों न स्वाति को बलवन्त मल हलवाई के यहाँ ले जाया जाए? वह दुकान पास ही में थी। दोनों वहाँ पहुँचे और अन्दर करीने से लगीं मेज़-कुर्सियों पर बैठे। वेटर के पास पहुँचने पर स्वाति ने चाय की माँग और राज ने केसर वाला दूध मँगवाया, और साथ ही साथ स्वाति को उस पुरानी दुकान के बारे में बताया। स्वाति को दुकान का माहौल बहुत पसन्द आया, वहाँ पुराने ब्लैक एण्ड व्हाइट भारत की काफ़ी निशानियाँ मौजूद थीं, लगता था जैसे समय रुक गया हो। एक दीवार पर बलवन्त मल और उनकी पत्नी लाजवन्ती बाई की हार सहित ब्लैक एण्ड व्हाइट

तस्वीरें जड़ी थीं। तस्वीरों में दोनों बहुत सन्तुष्ट लग रहे थे, उनके चेहरों पर जल्दबाज़ी, आपा-धापी, टेंशन के वो चिन्ह नहीं थे जो आधुनिक भारत में किसी भी आम, कामकाजी शादी-शुदा जोड़ी के मुख पर दिखते हैं। स्वाति ने अपना कैमरा निकाल कर दूध काढ़ते हुए हलवाई और बलवन्त मल व लाजवन्ती बाई की फ़ोटो की तस्वीरें खींच लीं।

स्वाति को इस तरह अपनी बगल में खुश देख राज को भी बेहद ख़ुशी महसूस हुई। उसे लगा कि वह स्वाति के साथ हमेशा ख़ुश रहेगा। स्वाति के मन में भी गुदगुदी हो रही थी, पर वह गुदगुदी राज जैसे व्यक्ति के ऊपर अपने कंट्रोल को देख कर हो रही थी। उसे लग रहा था जैसे राज उसकी हथेली में आ चुका था, और एक जवान लड़की को यह सफलता अच्छी लगती है। स्वाति को साथ में शर्म भी आ रही थी क्योंकि अब तक उसके रिश्ते स्टूडेंट टाइप अमैच्योर लड़कों से ही हुए थे। राज जैसे इम्पोरटेन्ट पोस्ट वाले व्यक्ति से पहली बार वह इस तरह से जुड़ रही थी।

जब वेटर उनके ड्रिंक ले कर आया तब तक स्वाति अपना कैमरा बैग में रख कर एक सीरियस-सा पोज़ अपना चुकी थी। उसने राज को अपने शिव मन्दिर वाले अनुभव के बारे में बताया और ज़ोर देते हुए कहा कि उसने विभूति स्वामी और सीतामढ़ी रघुवंशी के बीच का•का•का की बातें होती हुई सुनीं थीं। राज ने उसे कहा कि उसे यह सच नहीं लगता था क्योंकि सीतामढ़ी रघुवंशी और विभूति स्वामी जी भारतीय हिन्दु समाज के प्रतिष्ठित नेता थे और उसकी नज़र में क्लियरली

निर्दोष और एकदम साफ़। जब स्वाति ने उसे उस शरबत के बारे में बताया जो उसे पेश किया गया था तो राज ने उसकी बात ख़ारिज करते हुए कहा कि आयुर्वेद में बढ़िया से बढ़िया हैल्थी ड्रिंक बनाने के फोरमूले बताए गये हैं जो शरीर को हर प्रकार से लाभ पहुँचाते हैं। स्वाति चुप हो गयी। थोड़ी देर बाद राज ने उससे पूछा कि उसे रात के खाने पर किस से मिलना था। उसके इस बात को कहने के अन्दाज़ से स्वाति अन्दर ही अन्दर मुस्कुरा दी। राज को अहसास नहीं हुआ पर यह सवाल करते समय उसकी बांह मेज़ पर स्वाति की बांह को छू गयी थी और स्वाति ने अपनी बांह नहीं हटाई। उसने कुछ न कह कर थोड़ी देर बाद अपनी घड़ी देखी और अपनी चाय के दो-तीन घूँट जल्दी-जल्दी भरे। फिर वह राज के सम्मुख हो कर बोली कि आज रात का खाना उसके काम से ही सम्बन्धित था, और अगर कोई बात राज के मतलब की होगी तो वह उससे नहीं छिपायेगी।

स्वाति राज को वहीं हलवाई की दुकान में छोड़ कर चली गयी। राज अपना केसर-इलायची वाला दूध धीरे-धीरे पीता रहा और स्वाति व का•का•का के बारे में सोचता रहा।

लव, सेक्स और का•का•का

जब स्वाति भागती-भागती अपने होटल के मुख्य दरवाज़े के पास पहुँची तो उसे वहाँ बाहर कोई दिखाई नहीं दिया। जब वह होटल के अन्दर दाखिल हुई तब रिसेप्शन के पास उसे एक सुन्दर लड़की खड़ी हुई दिखी, पर सामने सोफ़े पर कोई नहीं बैठा था। स्वाति ने रिसेप्शनिस्ट से पूछा कि क्या किसी ने उसके बारे में पूछा था? रिसेप्शनिस्ट वहाँ खड़ी लड़की के चेहरे की ओर देखने लगा और उस लड़की ने स्वाति से पूछा कि क्या वही स्वाति थी? स्वाति ने हामी भरी और उस लड़की ने हाथ बढ़ाते हुए बताया कि वह सुनयना थी, सुनयना रघुवंशी, अक़बर हैरीसन की गर्लफ्रेंड। रघुवंशी शब्द सुन कर स्वाति चौंकी पर उसने अपने चेहरे पर यह भाव नहीं आने दिया। उसने सुनयना से हाथ मिलाया और फिर मुड़ कर रिसेप्शनिस्ट से पूछा कि क्या उसके लिए कोई लेटर छोड़ गया था। रिसेप्शनिस्ट ने कहा कि वहाँ रिसेप्शन पर तो उसके लिए कोई लेटर नहीं था। तब तक सुनयना के पास अक़बर आ कर खड़ा हो चुका था। अक़बर ने स्वाति से हाथ मिलाया और कहा कि वह ज़रा बाथरूम चला गया था। तीनों होटल से

बाहर निकले और अक़बर उन्हें पैदल रेस्टोरेंट की ओर ले चला। अक़बर ने कहा कि बड़े मियाँ के कबाब पूरे सुराजपुरा में मशहूर थे और दिल्ली-मुम्बई से भी लोग इन्हें चखने आते थे। उसने कहा कि बड़े मियाँ वाले नवाब साहब के ज़माने से कबाब बना रहे थे और सुराजपुरा की हिस्ट्री का एक हिस्सा थे। स्वाति सोच रही थी कि अगर सुनयना रघुवंशी परिवार से थी और अक़बर ख़ान ख़ानदान से तो उन दोनों के बीच प्रेम सम्बन्ध कैसे बने? मित्रों, भारत में हिन्दू-मुसलमान प्रेम सम्बन्ध बहुत कम देखे जाते हैं, और जितनी भी ऐसी जोड़ियाँ देखी जाती हैं उनके रिश्ते में कभी न कभी कहीं न कहीं समाज की ओर से टेंशन के झोंके आते देखे गये हैं। स्वाति अपनी बुद्धि के घोड़े दौड़ाते हुए इस बात पर तहक़ीक़ात करती रही। उसके मन में एक ख्याली पुलाव पकने लगा कि शायद ख़ान और रघुवंशी परिवार दोनों के बीच दोस्ती के सम्बन्ध थे और का•का•का का निर्माण दोनों परिवारों के माडर्न, एण्टी-एस्टेब्लिशमेंट सदस्यों ने मिल कर किया हो... जैसे अक़बर और सुनयना? दोनों ख़ानदानों के मिले-जुले साधनों से का•का•का के कारनामे आसानी से सिद्ध हो सकते थे और इससे का•का•का का हिन्दू-मुसलिमों दोनों समुदायों पर हमले करने के तथ्य की भी पुष्टि होती थी।

स्वाति ने रास्ते मे चलते-चलते सुनयना से पूछा कि क्या वह सुराजपुरा में ही रहती थी। तब वे एक भीड़ भरी गली में थे, सुनयना ने उसे कुछ बताने की कोशिश की पर काफ़ी शोर के कारण उसने हाथ से इशारा किया कि वह बाद में

बतायेगी। वे सुराजपुरा के पुराने मेन बाज़ार में से गुज़र रहे थे और किसी त्यौहार की वजह से सारी दुकानें खुली थीं और बड़ी संख्या में लोग ख़रीदारी कर रहे थे। स्वाति को इस तरह से भीड़ में चलना अच्छा लग रहा था। उसे दुकानदारों का आवाज़ें लगाना और खरीदारों का भाव-तोल करना बहुत आकर्षक लगा। बड़े मियाँ के रेस्टोरेंट पहुँच कर स्वाति को वही पुराने ज़माने का माहौल महसूस हुआ जो उसे बलवन्त मल हलवाई की दुकान पर लगा था। वेटरों ने ख़ानसामों जैसी ख़ास वरदी पहन रखी थी जो उनके खाना पेश करने के अन्दाज़ से ज़बरदस्त मेल खा रही थी। तीनों एक मेज़ के क़रीब पहुँचे और अक़बर और सुनयना साथ-साथ एक ओर बैठे व स्वाति मेज़ की दूसरी तरफ़। अक़बर काफ़ी जोश से भरा लग रहा था और वह बैठते ही स्वाति से उसके भाई सिद्धार्थ के म्यूज़िक बैण्ड के बारे में पूछने लगा। स्वाति ने सोचा कि बातों-बातों में ही उसे उनकी सारी बातें निकलवानी होंगी। दोस्तों, तीनों के बीच बातों का दौर चलता रहा, बड़े मियाँ के वेटरों ने उनके आगे बेहतरीन से बेहतरीन कबाब पेश किए, और साथ में हद से ज़्यादा टेस्टी बिरयानियाँ और हलीम और पाया और मुर्ग और मुग़लई ज़ायक़े... स्वाति को खाने में बेहद आनन्द आया। उसे पता चला कि सुनयना एक वकील थी, और अक़बर से उसके रिश्ते पिछले दो सालों में बने थे, कि उसके पिता सीतामढ़ी रघुवंशी थे जो इस रिश्ते को क़तई स्वीकार नहीं करने वाले थे, कि अक़बर भले ही अंग्रेज़-भारतीय मुसलमान की औलाद था फिर भी वह बेसिक इस्लाम

को मानता था, और उसे पैसे की कोई कमी नहीं थी लिहाज़ा ख़ूब पैसे कमाने की भी कोई इच्छा नहीं थी, इसलिए वह एक ग़ैर-सरकारी संस्था चला रहा था जिसमें उसका काफ़ी मन लगता था, यह उसका एक सपना था। सुनयना वैसे तो दिल्ली में काम करती थी पर अपनी कम्पनी के एक प्रोजेक्ट के सिलसिले में आजकल सुराजपुरा में रह रही थी। उनकी बातों को सुन कर स्वाति को लगा या तो वे उसे बहुत सफ़ाई से उल्लू बना रहे थे या वे बिलकुल ही मासूम थे। उसने सुनयना से पूछा कि क्या उसे का•का•का के बारे में कुछ ज्ञान था? तो वह अक़बर की ओर देखती हुई बोली कि उसने का•का•का के क़ारनामों के बारे में छिट-पुट बातें इधर-उधर से सुनी थीं, लेकिन उसे कोई ख़ास बात नहीं पता थी। यह कह कर उसने अक़बर की बांह को अपने हाथ से सहलाया और उसकी गरदन पर अपना चेहरा टिकाया। अक़बर ने प्यार भरे स्वर में उससे पूछा कि क्या वह थकी हुई थी और उसने एक बच्ची की तरह हाँ में सिर हिला कर जवाब दिया। स्वाति को यह सब थोड़ा नाटकीय लग रहा था और उसका डाउट पूरी तरह नहीं मिटा था। उसने अक़बर की तरफ़ देखते हुए कहा कि अगर उन्हें का•का•का के बारे में कोई जानकारी मिले तो क्या वे उसे बताएँगे? अक़बर ने कहा कि ज़रूर ही वे बताएँगे, और यह कह कर उसने अपने आस-पास नज़रें दौड़ाईं किसी को उनकी ओर न देखते हुए पा कर झट से सुनयना के सॉफ्ट होंठों पर अपने होंठ रख कर एक छोटा-सा चुम्बन किया। अब स्वाति को थोड़ा अजीब लगा और साथ में उन्हें प्यार में

इतना डूबा देख कर उसे थोड़ी-सी ईर्ष्या भी हुई, उसका कोई प्रेमी जो न था! वे लोग अब अपनी चाय-कॉफी का इन्तज़ार कर रहे थे। चाय पीने के दौरान उनके बीच कोई और बात नहीं हुई और अक़बर द्वारा बिल पे करने के बाद वे रेस्टोरेंट से निकल कर स्वाति के होटल की तरफ़ बढ़े, क्योंकि अक़बर ने उसे कहा था कि रात को अकेले लौटना ठीक नहीं था। स्वाति को होटल में छोड़ कर और कोन्टैक्ट में रहने का वायदा कर के उन्होंने अपनी राह पकड़ी और स्वाति ने अपने कमरे में पहुँच कर धड़ाम से अपने-आप को बिस्तर पर गिराया और नींद की देवी की गोदी में लीन हो गयी।

सुबह उसकी नींद जल्दी ही खुल गयी। कमरे में सफ़ाई करवाने का रिक्वेस्ट कर के वह होटल के रेस्टोरेंट में नाश्ता करने चली गयी। वहाँ उसने राज को फ़ोन लगाया और कहा कि वह उससे मिलना चाहती थी। राज ने उसे अपने गेस्ट हाउस बुला लिया ताकि वह देख भी ले कि गेस्ट हाउस रहने के लिए कैसा था। नाश्ता कर के जब वह अपने रूम गयी तो बाहर ही उसे सफ़ाई करने वाली ने एक लिफ़ाफ़ा थमा दिया और कहा कि वह उसके पलंग के नीचे से मिला था। लिफ़ाफ़े पर स्वाति देशमुख लिखा था और वह गोंद से बन्द किया हुआ था। स्वाति ने लिफ़ाफ़े को खोला और लेटर पढ़ा–

मैं वही हूँ जिसकी तुम्हें तलाश है। मुझे लगता है कि तुम मुझे समझ पाओगी, तो तुम्हें एक चांस दे कर देखना चाहता हूँ। यहाँ एक सिम कार्ड रखा है, अगर

मुझसे कोन्टैक्ट करना चाहती हो तो यह अपने मोबाइल फ़ोन में डालना और इसमें फीड किया हुआ नम्बर डायल करना। तुमसे मिलना चाहता हूँ। तुम्हारी ख़ूबसूरती और दिमाग की क़द्र करता हूँ। इसे अग्नि परीक्षा समझो।

स्वाति को अचानक से कूद-कूद कर नाचने का मन हुआ। उसने सिम कार्ड संभाल कर रखा और अच्छी तरह से सज-सँवर कर राज के गेस्ट हाउस के लिए चल पड़ी। राज के साथ गेस्ट हाउस के गुलदाउदी, गुलनार, डालिया, ऑर्किड, चमेली, गुलाब और गेंदा जैसे रंग-बिरंगे ख़ुश्बू बिखेरते हुए फूलों से भरे बाग में चक्कर लगाते-लगाते उसने राज का कमरा देखने की माँग रखी। कमरे में स्वाति सीधे जा कर पलंग पर बैठ गयी। राज टेबल का सहारा लिए खड़ा रहा। स्वाति ने उससे पानी माँगा, और उसने टेबल पर पड़े जग में से गिलास में पानी डाला। गिलास ले कर वह स्वाति की ओर बढ़ा, थोड़ा हिचकिचाया और स्वाति के हाथ में गिलास थमाया। स्वाति मुस्कुरा रही थी। उसने राज को अपने साथ बैठने को कहा। राज नहीं बैठा तो स्वाति ने उसका हाथ थाम लिया और उसे अपनी तरफ़ खींचा। इस तरह से खींचने पर राज और स्वाति के चेहरे एकदम से बहुत क़रीब आ गये और स्वाति ने कुछ पल राज की आँखों में आँखें डालते हुए बहुत प्यार से उसके गाल पर एक किस किया। राज ने स्वाति की किस का जवाब देते हुए उसे भींचते हुए गले लगा लिया, और उसकी सांसों और होंठों की हरारत स्वाति को अपनी गरदन पर महसूस हुई। कुछ मिनटों तक वे एक-दूसरे की बाँहों में

सिमटे रहे। फिर राज अपना चेहरा स्वाति के चेहरे के सामने लाया और उसे कहा कि वह स्वाति के बारे में काफ़ी सीरियस था। स्वाति मुस्कुराती ही रही और धीरे-धीरे उसके हाथों को अपनी मुलायम उँगलियों से सहलाती रही। राज ने स्वाति के गालों को अपने हाथों से सहलाया और उसके होंठ स्वाति के होठों से थोड़ा झिझकते-झिझकते जुड़ गये। स्वाति ने अपनी आँखें बन्द कर लीं और दोनों के होंठ और भी गहरी किस में एक हो गये।

अब स्वाति के हाथ राज की कमीज़ के बटन खोल रहे थे। राज के हाथ स्वाति की पीठ को ऊपर से नीचे तक प्यार कर रहे थे। दोनों के बदन में एक आग जैसी एक्साइटमेंट हो रही थी। स्वाति ने राज की शर्ट को पैंट से बाहर निकाला और पूरे बटन खोल कर उतार दिया। फिर उसने धीरे-धीरे राज की छाती पर छोटे-छोटे चुम्बनों की झड़ी लगा दी। राज ने उसका चेहरा अपने हाथों में लिया और उसकी बन्द आँखों को अपने होठों से छुआ। स्वाति अपना मुँह राज के कान के पास ले गयी और उसने बहुत हल्के से अपने दाँतों से राज के कान का निचला हिस्सा काटा। दोनों की साँसें बहुत गहरी और लम्बी हो चलीं थीं। राज की गरदन पर अपने होठों और दाँतों के छोटे-छोटे प्यार भरे प्रहार करते हुए स्वाति ने राज का हाथ पकड़ा और उसे अपनी जांघों के बीच तक ले गयी। राज की बॉडी थोड़ी थम-सी गयी। तब तक स्वाति का दूसरा हाथ राज की पैंट के अगले हिस्से तक पहुँच चुका था और हल्के-हल्के सहलाने लगा था।

राज अचानक से स्वाति को अपने से अलग करते हुए उठ खड़ा हुआ। उसने स्वाति को सॉरी कहा और बोला कि वह उसके साथ बहुत सीरियस था, वह उससे शादी करना चाहता था। स्वाति हँस पड़ी। उसने कहा वह रिलैक्स करे, क्योंकि स्वाति को शादी में अभी कोई दिलचस्पी नहीं थी, स्वाति को तो यह भी नहीं मालूम था कि क्या वह कभी शादी करेगी भी या नहीं। यह सुन कर राज ने कुछ नहीं कहा, उसने एक झटके में अपने कपड़े ठीक किए और स्वाति की ओर बिना देखे बोला कि वह भी तैयार हो जाए, वह नीचे रिसेप्शन पर उसका इन्तज़ार करेगा। यह कह कर वह तीर की तरह कमरे से निकल गया। राज के दिल में अमेलिया की दुखती रग फिर से हावी हो चुकी थी। अमेलिया को वह बहुत चाहने लगा था, हालाँकि उसे कभी कुछ बोल न पाया था फिर भी सोचता था कि वह सब कुछ समझती होगी क्योंकि दोनों के बीच बहुत क़रीबी रिश्ते बन गये थे, दोनों ज़िन्दगी साथ-साथ बिताने की बातें किया करते थे। लेकिन शादी की बात आने पर अमेलिया के इंकार ने उसे एक ऐसा तगड़ा इमोशनल झटका दिया जिससे वह उबर न पाया।

स्वाति तैयार हो कर नीचे आई, राज को अनदेखा करते हुए गेस्ट हाउस से निकली और एक ऑटो रिक्शा पकड़ कर सीधा अपने होटल पहुँची। राज ने उसे जाते देखा और रोकने की कोशिश भी नहीं की। दोनों ने एक-दूसरे से कभी न मिलने का निश्चय किया।

मित्रों, राज ने उस दोपहर खाना नहीं खाया और वह

बाहर जा कर शराब के ठेके से तीन ओल्ड मंक की बोतलें खरीद लाया। गेस्ट हाउस वालों को डिस्टर्ब न करने की हिदायत देते हुए उसने अपने-आप को कमरे में बन्द कर लिया। उधर स्वाति का मन दोपहर का खाना होटल के रेस्टोरेंट में खाते-खाते चंगा हो गया। उसने राज के साथ हुए कोइटस इण्टरप्टस[1] को कॉमेडी समझ कर भुला भी दिया, और रिसेप्शन में डिस्टर्ब न करने की हिदायत दे कर उसने भी अपने-आप को कमरे में बन्द कर लिया। फिर उसने अपने मोबाइल फ़ोन में लिफ़ाफ़े वाला सिम कार्ड डाला और उसकी फ़ोनबुक में लिखा नम्बर मिलाया।

घण्टी काफ़ी देर तक बजी पर किसी ने फ़ोन नहीं उठाया। जैसे ही स्वाति फ़ोन काटने वाली थी एक मशीनी आवाज़ ने हेलो बोला और कहा कि वह उसे थोड़ी देर में फ़ोन करेगा। स्वाति अपने पलंग पर लेट गयी और थोड़ी ही देर में उसे झपकी लग गयी। आधे घण्टे बाद उसका मोबाइल बजने लगा और रिंग सुन कर वह एकदम से उठ गयी।

"हेलो?" स्वाति ने कहा।

मशीनी आवाज़ बोली–

"हाँ, कॉल करने के लिए शुक्रिया। डील यह है कि तुम्हें का•का•का के बारे में सब कुछ बताऊँगा लेकिन तुम अपने चैनल को कुछ नहीं बता सकती। या फिर वही बताओगी जो हम कहेंगे। तुम्हें मंज़ूर है?"

---

1. लैटिन ज़ुबान में, मतलब अधूरा सेक्स

स्वाति यह सुन कर काफ़ी उत्तेजित हो गयी।

"हाँ, हाँ। मैं वैसे ही इन कारनामों से बहुत इम्प्रेस्ड हूँ, मैं वही करूँगी जो का•का•का चाहे। ट्रस्ट मी।"

"ठीक है। अभी शाम को राज मलहोत्रा को फ़ोन करो और बताओ कि तुम यह प्रोजेक्ट छोड़ कर जा रही हो, तुम्हारे चैनल वालों ने यह तफ़्तीश बन्द करने का फैसला किया है। फिर मुम्बई लौटो और अपने घर में इन्तज़ार करना। हम तुमसे कोन्टैक्ट करेंगे।"

यह कह कर फ़ोन कट गया।

स्वाति ने चैन की साँस ली, सब कुछ सही हो रहा था। उसने अपना लैपटॉप खोला और अपने बॉस को ईमेल में लिखा कि कुछ दिनों के लिए उसे घर जाना पड़ेगा, किसी पर्सनल काम की वजह से। फिर उसने अपनी डायरी पर सारी घटनाएँ दर्ज की, सिद्धार्थ को भी एस-एम-एस भेजा, मुम्बई की फ्लाइट का टिकट भी खरीदा और इण्टरनेट में इधर-उधर चेक किया कि कहीं का•का•का से रिलेटिड कोई काण्ड तो नहीं हुआ। किस्मत से उसे अगले दिन की ही फ्लाइट मिल गयी।

उधर राज नशे और डिप्रैशन में डूबा हुआ था। इसी हालत में वह अपने बॉस के लिए रिपोर्ट तैयार कर रहा था जिसमें वह का•का•का को पकड़ने की नाकामियों के बारे में लिख रहा था। वह अपने बॉस से कुछ महीनों की पर्सनल छुट्टी भी चाहता था, और उसे आशा थी कि उसे छुट्टी मिल

जायेगी क्योंकि पिछले चार महीनों से पूरे इण्डिया में का•का•का का कोई भी काण्ड नहीं हुआ था और उसे यह तफ़्तीश बेकार-सी लगने लगी थी, उसे लगने लगा था कि का•का•का ने किसी ईमानदार, अच्छे आदमी का नुक्सान न तो कभी किया था न कभी करेगा। जब वह रिपोर्ट तैयार कर चुका था उसके कमरे के फ़ोन की घण्टी बजी। उसने रिसेप्शनिस्ट को फ़ोन देने से मना कर रखा था, इसलिए उसने फ़ोन नहीं उठाया।

सुबह उठ कर जब राज नाश्ते के लिए गेस्ट हाउस के रेस्टोरेंट में आया तो एक कर्मचारी ने उसे एक लिफ़ाफ़ा दिया जिसपर उसका नाम लिखा था। गर्म कॉफ़ी पीते-पीते राज ने लिफ़ाफ़े में पड़ा छोटा-सा ख़त पढ़ा–

हमारे बीच जो कुछ भी हुआ उसके लिए सॉरी, बट आइ थिंक वी आर नॉट मेड फॉर ईच अदर। तुम बहुत अच्छे हो, शायद मैं इतनी अच्छी नहीं हूँ। ख़ैर, मेरा काम यहाँ ख़त्म हो गया है, चैनल ने यह प्रोजेक्ट फ़िलहाल बन्द कर दिया है, और मैं मुम्बई जा रही हूँ। आइ विश यू आल द बेस्ट इन लाइफ़, टेक केयर!

स्वाति।

इस्ताम्बूल में प्यार और गुत्थी का सुलझना

तुर्की की आबो-हवा अतातुर्क एयरपोर्ट पर पाँव रखते ही स्वाति को भा गयी। वहाँ लोगों में उसे गर्मजोशी दिखी, और तुर्की औरतें उसे बला की ख़ूबसूरत लगीं। उनकी ज़ुबान तो वह बिल्कुल नहीं समझती थी, पर इसी वजह से उसे तुर्की लोग और भी भले लगे।

अतातुर्क एयरपोर्ट से टैक्सी पकड़ कर वह सुल्ताएहमत इलाके में पहुँची, जहाँ उसका होटल सोफ़िया में पहले से ही रिज़र्वेशन था। यह होटल एक परिवार सौ से भी ज़्यादा सालों से चला रहा था और इमारत का आर्किटेक्चर बहुत ही नफ़ीस था। स्वाति के कमरे से बोसफ़ोरस नदी का बेशक़ीमती नज़ारा दिखता था। उसका तन-मन ख़ूब खिल गया और फ्लाइट की मीठी थकान को उतारने के लिए वह किंग बेड पर रजाई तान के सो गयी।

मित्रों, जब स्वाति मुम्बई लौटी तो उसे ज़्यादा दिन

इन्तज़ार नहीं करना पड़ा, एक हफ़्ते में ही उसके नाम से एक कूरियर आया जिसमें इस्ताम्बूल का रिटर्न एयर टिकट और होटल सोफ़िया की रिज़र्वेशन रसीद थी, और साथ में का•का•का का विज़िटिंग कार्ड। उसने अपने बॉस को बताया कि वह कुछ दिनों की छुट्टी चाहती थी, और अपने परिवार को बताया कि उसे ज़रूरी काम से तुर्की जाना था, व तैयारियों में लग गयी। फ़्लाइट से एक दिन पहले मशीनी आवाज़ वाला फ़ोन आया और उसने सिर्फ़ यही कहा–

"बहुत ख़ुशी होगी तुमसे इस्ताम्बूल मे मिलकर। मुझपर विश्वास करने का शुक्रिया!"

* * *

पहले दो दिन स्वाति के पास का•का•का का कोई संदेश नहीं पहुँचा और वह इस्ताम्बूल की सैर करती रही। पहले दिन वह होटल के आस-पास ही घूमती रही पर दूसरे दिन उसने एक गाइड बुक खरीदा और सारा दिन होटल से दूर घूमती रही। रात को आठ बजे जब वह होटल लौटी तो थक कर चूर हो गयी थी। रेस्टोरेंट में कुछ हल्का-फुल्का खा कर वह अपने कमरे में सोने चली गयी।

रात के तीन बजे अचानक उसकी नींद किसी आहट से टूटी। उसने हाथ बढ़ा कर बेड का लैंप जलाना चाहा तो किसी ने उसके हाथ को थाम लिया, और जैसे ही उसने हड़बड़ा कर उठना चाहा तो उसे बहुत धीमे स्वर में सुनाई दिया–

"शऽऽऽ.. शऽऽऽ.. मैं हूँ, का•का•का। लाइट मत जलाओ!"

स्वाति ने अपना हाथ छुड़ाया और शान्त हो गयी। कुछ पलों तक दोनों चुप रहे। फिर स्वाति ने अपने हाथ से का•का•का को छुआ, और गरदन से होते हुए वह उसके चेहरे की ओर बढ़ी। स्वाति के हाथ ने का•का•का के चेहरे पर एक मुखौटा पाया और वह उसे उतारने लगी। लेकिन तभी का•का•का के हाथों ने उसके हाथ को रोक दिया। स्वाति का हाथ का•का•का के बालों को सहलाने लगा।

"तुम कौन हो? स्वाति ने पूछा।"

"बताऊँगा, सब कुछ बताऊँगा।"

यह कह कर का•का•का स्वाति की बगल में लेट गया। उसका चेहरा स्वाति के चेहरे के बहुत क़रीब आ गया था। स्वाति की नाक में महँगे कोलोन की सुगंध आई। इस सुगंध को वह पहचानती थी। धीरे-धीरे उसके मन-मस्तिष्क में उस कोलोन से जुड़े साथ गुज़रे सारे वाक़ये तरो-ताज़ा हो गए।

"लेकिन तुम्हारी उमर क्या है?"

"मैं पैंतीस बरस का हूँ।"

यह कह कर का•का•का ने अपना मुखौटा हटाया और होठों से स्वाति के हाथों को सहलाया। स्वाति के बदन में आनन्द की एक लहर दौड़ गयी। उसे का•का•का का चेहरा

और आँखें दिखाई दीं तो एक ज़बरदस्त आकर्षण का अहसास हुआ।

"तुम चाहते क्या हो?"

"जो सभी चाहते हैं।"

का•का•का के होंठ अब स्वाति के हाथों को चूम रहे थे। धीरे-धीरे का•का•का के हाथ स्वाति के बदन के घुमावों की तरफ़ बढ़े और उन्हें प्यार करने लगे। स्वाति को उनकी सहलाहटों और दबाव से एक बेजोड़ सुख का अहसास हुआ। उसने आँखें बन्द कर लीं और कहा,

"मुझे सब बताओ, सब कुछ बताओ।"

जवाब में का•का•का के होठों ने स्वाति के होठों को तलाशा और एक हल्का-सा चुम्बन जड़ दिया। स्वाति ने का•का•का को अपनी बांहों में ले लिया था, और उसकी जीभ का•का•का के सूखे होठों पर फिर रही थी।

स्वाति ने सपने में भी नहीं सोचा था कि वह ऐसे का•का•का से मिलेगी। पिछले महीनों की सारी उत्तेजना अपनी मैक्सिमम लिमिट तक पहुँच चुकी थी। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था। का•का•का का बदन भी सुख की लहरों में झूल रहा था। स्वाति के मन में यह भाव उभरा कि जिस का•का•का को सी०बी०आई० और मीडिया इतने महीनों से खोज रही थी और जिसे ख़ुद वह सुराजपुरा और न जाने कहाँ-कहाँ खोज रही थी, वह इस वक़्त उसकी बाँहों में था और शुरू से ही साया बनकर उसके पीछे था! स्वाति का तन

और मन सन्तुष्ट हो गये और उसने का•का•को और भी ज़ोर से भींच लिया।

दोनों के जिस्म उस आदिम सुख को पाने के लिए ऐसे जुटे हुए थे कि लगता था कि गुत्थम-गुत्था हो कर लड़ाई कर रहे हों। दोनों बदन एक-दूसरे के छिपे हुए अंगों को पाने की कोशिश में ऐसे जुड़े कि लगा जैसे एक ही शरीर हों। स्वाति के दाँत आनन्द की सीमा पार करने पर अपनी वायलेंस के निशान का•का•का की देह पर छोड़ गये। का•का•का के होंठ भी स्वाति की मुलायम स्किन पर लव-बाइट बनाते गये।

यह लव-मेकिंग सुबह होने तक चलती रहा। बीच-बीच में ये झपकी लेते रहे पर अचानक से किसी का हाथ किसी इरोटिक जगह पर पड़ने से फिर से इनके शरीर आनन्द से लचीले, रसीले हो जाते और उनके बीच चरम सुख पाने के लिए प्यार भरा संवाद शुरू हो जाता था।

अगले दिन खाने के समय दोनों तैयार होटल से निकले। का•का•का ने एक टैक्सी ली और स्वाति को वहाँ से एक घण्टा दूर एक छोटे से इलाके के रेस्टोरेंट में ले गया। वहाँ खाने का आर्डर कर का•का•का ने बोलना शुरू किया।

"मैं जानता हूँ कि तुम सब कुछ जानना चाहती हो। मैं भी तुम्हें सब कुछ बताना चाहता हूँ। मेरी बात ध्यान से सुनना। मेरा इस दुनिया में अब कोई नहीं है। जब से होश संभाला अपने दादा को ही देखा। मेरे दादा, पण्डित विशेश्वर नाथ चौबे, चाँदनी चौक के कूचा महाजनी में एक बड़ी-सी हवेली में रहते थे। मुझे उन्होंने ही पाला-पोसा। हमारे परिवार

में और कोई नहीं था। मेरी सारी शिक्षा घर में ही दादा की देख-रेख में हुई, और उन्हीं की बदौलत मैं आज जो हूँ सो हूँ। उन्होंने मुझे समझाया कि दुनिया क्यों ख़राब है, कि इस संसार में क्या बुरा है, क्या अच्छा है। जब मैं थोड़ा बड़ा हुआ उन्होंने मुझे बताया कि मेरे माँ-बाप का कुछ पता नहीं था, और वे मेरे असली दादा नहीं थे। उन्होंने मुझे पुरानी दिल्ली की एक गली में पाया था, जब मैं कुछ महीनों का था। जब मैं कुछ और बड़ा हुआ तो मैं उनसे पूछता कि वे मुझे बाहर क्यों नहीं भेजते, और लोगों से क्यों नहीं मिलवाते? हाँ, मेरा वजूद उस बड़ी-सी हवेली तक ही सीमित था। वहीं मुझे पढ़ाने टीचर आते थे, वहीं मुझे संसार के बारे में सारी नालेज मिली, और वहीं, कुछ और बड़ा होने पर, दादा ने मुझे बताया कि वो मुझे का•का•का बनाना चाहते थे। मैंने उनसे पूछा क्यों तो उन्होंने मुझे सब कुछ तफ़सील से बताया। उन्होंने मुझे कहा कि दुनिया की हालत इसलिए बुरी है क्योंकि लोग अपने असली स्वभाव को भूल गये हैं, वे स्वतंत्र रहना भूल गये हैं और दूसरों के गुलाम हो गये हैं। यह हमारा फ़र्ज़ है, हम सबका, कि अगर हम दूसरों को गलत राह पर चलते देख कुछ न करें तो कम से कम अपनी राह तो सही चलें। दादा के अनुसार सही राह पर चलने के लिए भी आजकल बहुत स्मार्ट होना पड़ता है, सरकारों, पॉलिटिशियनों, बड़ी-बड़ी कम्पनियों के झांसों, सोसायटी के अमीर क्लास के लोगों के दबावों से बच कर जीने के लिए भी चालाकी की ज़रूरत है। वे मुझे इसीलिए का•का•का बनाना चाहते थे ताकि कोई तो

ऐसा हो जो चीज़ों को वैसे देखे जैसे वे हैं, कोई तो समाज के ठेकेदारों को जवाब दे पाए, उन्हीं की ज़ुबान में और बिना कुछ खोए, कोई तो उन मासूम बच्चों और औरतों पर ज़ुल्म करने वालों को करारा जवाब दे पाए जिनपर यह मेल-डॉमिनेटिड समाज कदम-कदम पर अत्याचार करता है। उन्होंने मुझे अपना पूरा प्लैन बताया, और कहा कि का•का•का को किसी को मारना नहीं है, वायलेंस का सहारा नहीं लेना है, उसे तो बस सबक सिखाने वाले मज़ाक, हल्की सज़ा और होशियारी, हाई टेक्नोलोजी का इस्तेमाल कर के आम इंसानों के मन में छुपा लिबरल, बेख़ौफ़ और मर्सीफुल आदमी जगाना है, जो समाज को कंट्रोल करने वालों का भाण्डा फोड़ सके, ख़ुद जिए औरों को भी जीने दे। दादा ने मुझे बहुत से एक्ज़ाम्पल दिए, बहुत-सी किताबें पढ़वाईं, जानकारी दी, भाषायें सिखवाईं, मेरे साथ बहुत-सी बाते डिसकस कीं। और चौबीस साल की उमर में उन्होंने मुझे दुनिया का चक्कर लगाने भेज दिया। उन्होंने कहा कि का•का•का बनना या न बनना मेरा निर्णय था, पर शर्त यह थी कि मैं पूरी दुनिया को देख-भाल कर ही यह फ़ैसला करूँ। दादा को मेरा कोई भी फ़ैसला मंज़ूर था। वे बहुत ही अनूठे आदमी थे। पैसा उन्हें विरासत में मिला था, और शादी उन्होंने कभी करनी नहीं चाही। कूचा महाजन की उस हवेली में बैठे-बैठे उन्हें सारे संसार की जानकारी थी। वे तो इण्टरनेट, चौटिंग वगैरह भी ख़ूब करना जानते थे, लेटेस्ट टेक्नोलोजी जानते थे। सारी दुनिया में उनके दोस्त भी थे।

"मैं संसार के टूर पर निकला। कभी फ्रांस, कभी

पनामा, कभी न्यूज़ीलैंड, दूर-दूर तक घूमा। दादा से जितना भी पैसा माँगता मिल जाता। चीन में तो दो साल तक रहा। इतना कुछ जाना, अनुभव किया। कितने ही लोगों से मिला, सबकी बातें सुनी, सब कुछ परखा। और आखिरकार सोचा कि इस संसार का कुछ नहीं हो सकता। यह हमेशा से ही ऐसा है और रहेगा। इंसान अभी भी आदिवासी है, उसमें बहुत डर है। बाहर से सब कुछ शान्त है पर हथियारों का जखीरा बढ़ता जा रहा है, ग़रीबी, भुखमरी भी कभी कम नहीं होती, हैवानियत भी वैसी की वैसी ही है। दादा को मैं सब कुछ बताता गया और घूमने-फिरने में ही मस्त हो गया।

"बीच-बीच में मैं दिल्ली भी आता रहता। दादा ने मेरा फ़ैसला तो मान लिया था पर वे मुझे फिर भी समझाते रहते, वे कहते कि का•का•का बन कर भी मैं जो कुछ चाहूँ कर सकता था। कितने एक्स्ट्राओर्डिनरी थे वे! कोई धर्म, कोई फ़लसफ़ा, कोई भी आइडिलोजी नहीं मानते थे। सिर्फ़ ख़ुद पर और शब्द पर, ज़ुबान पर विश्वास करते थे। मेरे हीरो है वो, चाहे भले ही वो हीरोपन्ती में विश्वास नहीं रखते थे। उनका मन तो काम में, रिज़ल्ट में, हर चीज़ के प्रैक्टिकल आसपेक्ट में ही रमा हुआ था। उन्होंने पूरी ज़िन्दगी लगातार हर दिन अपनी डायरी लिखी। तुम पढ़ोगी तो पता चलेगा कि वे किस प्रकार के आदमी थे। मैं तो प्रेरणा के लिए उसे पढ़ता रहता हूँ, और उन्हें हमेशा अपने क़रीब पाता हूँ।

सन् दो हज़ार में मैं अफ्रीका में था, सोमालिया के एड्स से पीड़ित लोगों की सहायता करने वाली एक संस्था में

काम कर रहा था। तब हमारे पड़ोसी का फ़ोन आया, दादा एक एक्सीडेंट में चल बसे थे। कोई ट्रक उनको दिनदहाड़े टक्कर मार कर चला गया था।

मैं तुरन्त ही दिल्ली पहुँचा। हवेली पहुँचा तो पाया कि वहाँ किसी कंस्ट्रक्शन कम्पनी का कब्ज़ा हुआ पड़ा था। दादा की लाश मुनिसिपैलिटी के मोर्ग में मिली। उनका अन्तिम संस्कार कर मुझे पता लगा कि दादा ने अपनी हवेली उस कंस्ट्रक्शन कम्पनी को औने-पौने भाव में बेच दी थी। मेरा माथा ठनका, और मैंने असली कहानी खोज निकाली। हवेली बेचने के लिए दादा को कम्पनी बहुत दिनों से परेशान कर रही थी, वहाँ फ्लैट बना कर बेचना चाहती थी। दादा के ना करने पर यह षड्यंत्र रचा गया, उनके फ़र्ज़ी सिगनेचर सेल डीड पर कर उनको ट्रक से कुचलवा कर मरवा दिया गया। कम्पनी वालों को पता था की मेरे अलावा दादा का कोई नहीं था, और मैं भी बाहर था, सो अपने काम को अंजाम देने में उन्हें ज़्यादा मुश्किल भी नहीं हुई। मैंने कम्पनी वालों को सबक सिखाने की सोची। दादा की याद में मैंने न सिर्फ़ हवेली वापिस करवाई, बल्कि कम्पनी पर ताले भी लगवा दिए, और यह काम उसी स्टाइल में किया जिसमें आज का•का•का करता। पर मैंने का•का•का का नाम नहीं यूज़ किया, और न ही मेरी ऐसे और काम करने की इच्छा थी।

"कुछ समय बीता, मैं दादा की मौत से डिप्रेशन में चला गया था। फिर भारत में गोपुरा काण्ड हुआ और उसके बाद गुजरात में दंगे। प्रेगनेन्ट औरतों, बच्चों, बूढ़ों तक को

ज़िन्दा जला दिया गया था। मैं गुजरात गया और वहाँ के हालात देख कर मेरे मन में बहुत अशान्ति पैदा हुई। बहुत सोच-विचार कर मैं इस नतीजे पर पहुँचा कि मैं दादा की याद ज़िन्दा रखूँगा, वही करूँगा जो वे चाहते थे। मैं दादा की बात से भी सहमत हो चुका था कि जिसने संसार को बदलने के लिए कुछ नहीं किया उसकी ज़िन्दगी सही मायने में ज़िन्दगी नहीं है। हवेली वापिस लेने में और कंस्ट्रक्शन कम्पनी को तबाह करने में जो रोमांच मुझे हुआ था उसे भी मेरा डिप्रेस्ड मन दोबारा पाना चाहता था। का•का•का का जन्म हुआ। अब तक मैंने काफ़ी काण्ड किए हैं, और करता भी रहूँगा, अब यही मेरी ज़िन्दगी है। कुछ समय से मैं चुप हूँ, तुम्हें और राज को ओब्ज़र्व करता रहा हूँ और आगे की योजना बना रहा हूँ। अब कुछ गंभीर करना पड़ेगा, और लाइक-माइण्डिड लोगों की भी ज़रूरत होगी। मेरे बहुत से कारनामे सुराजपुरा से सिर्फ़ इसलिए जुड़े हैं क्योंकि वहाँ मेरा सेट-अप अच्छा हो गया है। मुझे समय के साथ-साथ और लोग भी मिलते गये हैं जिन्होंने मेरा साथ दिया है, जैसे अक़बर का एन०जी०ओ०, सुनयना या इनडायरेक्टली इंकलाब और उसकी फ़ैमिली, पर किसी को मेरे बारे में पूरा नहीं पता। सिवाय तुम्हारे, अब तक।"

मित्रों, स्वाति ने बिना पलक झपकाए का•का•का की पूरी कहानी सुनी। उसके हाथ अंजाने में ही का•का•का के हाथों को थामे बैठे थे। उन्होंने अपना खाना ख़त्म किया और का•का•का स्वाति का हाथ थामे उसे बोसफ़ोरस नदी के किनारे पर ले गया। काफ़ी देर तक वे बाँहों में बाँहें डाले

चलते रहने के बाद दोनों नदी किनारे एक शान्त जगह पर बैठे और स्वाति का चेहरा का•का•का की छाती पर टिक गया। का•का•का की बाँह स्वाति के कंधे को सहारा दे रही थी। बहुत दूर, क्षितिज पर, लाल सूरज बोसफ़ोरस नदी में ढल रहा था।

'आइये हाथ उठाएँ हम भी...'

फ़ैज़ अहमद फ़ैज़